विदेह प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक

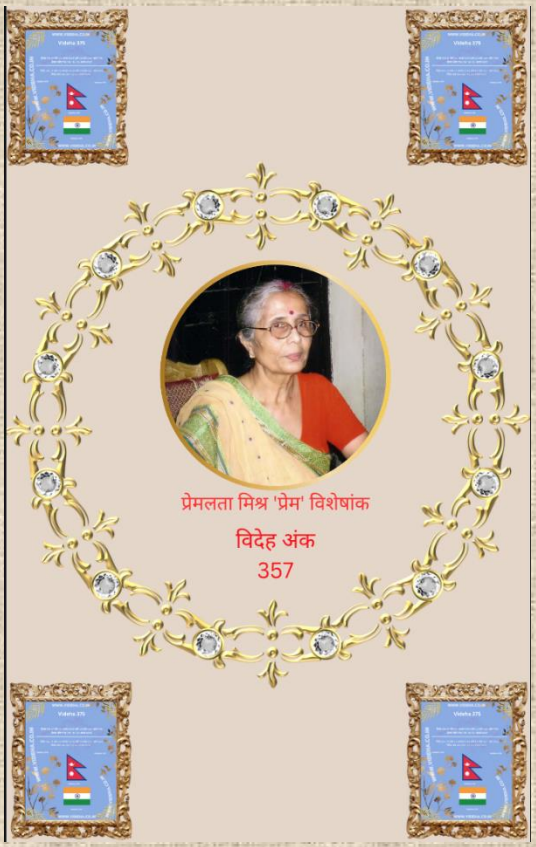

ISBN: 978-93-340-2694-8

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादन अथवा संचारन-प्रसारण नै कएल जा सकैत अछि।

(c) २०००- २०२३. सर्वाधिकार सुरक्षित। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।*

ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

(c)२०००- २०२३. विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com कें मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकरो वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

© Preeti Thakur (sales.videha@gmail.com)

VIDEHA PREMLATA MISHRA 'PREM' SPECIAL ISSUE: Editor Gajendra Thakur

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (विद्यापतिक चित्र: विदेह चित्रकला सम्मानसँ पुरस्कृत पनकलाल मण्डल द्वारा)। कवीश्वर ज्योतिरीश्वर(लगभग १२७५-१३५०)सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरःसँ भिन्न। सम्भवतः बिस्फी गामक बार्बर कास्टक श्री महेश ठाकुरक पुत्र। समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि।ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति:- कश्मीरक अभिनव गुप्त (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ)- ग्रन्थ "ईश्वर प्रत्याभिज्ञा-विभर्षिणी" मे विद्यापतिक उल्लेख करै छथि। श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत, (रचना ११ फरबरी १२०६, मध्यकालीन मिथिला, वि.कु. ठाकुर)- श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत केने छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषा छी। "जाव न मालतो कर परगास/ तावे न ताहि मधुकर विलास।" आ "मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द।" ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) षष्ठः कल्लोल- ॥अथ विद्यावन्त वर्णना॥ अष्टमः कल्लोलः- ॥अथ राज्य वर्णना॥ मे उल्लेख।

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअन खेत्तहि काजि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मज्झो बन्धि न देइ॥ ***(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*** माने आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओइपर **(*गद्य-पद्य रूपी*)** मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकें ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकें, क्षत्रियकें, शूद्रकें आ आर्यकें; अपन लोककें आ अपरिचितकें सेहो (माने सभकें)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकें समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकें प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तें तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.
-Robert Louis Stevenson

Videha: Maithili Literature Movement

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः

ঔঁ দ্যৌঃ শান্তিৰন্তৰিক্ষ W শান্তিঃ

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्ति र्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

𑓆 𑒠𑓂𑒨𑒾: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭 Ẇ 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑓁 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒰𑒣: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒼𑒭𑒡𑒨: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱 𑒫𑒢𑒮𑓂𑒣𑒞𑒨: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑓂𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒹 𑒠𑒹𑒫𑒰: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑓂𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:-जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓂𑒟𑒢𑒰 𑒖𑒹 𑒠𑓂𑒨𑒳𑒪𑒼𑒏𑒧𑒹, 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭𑒧𑒹, 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲𑒣𑒩, 𑒖𑒪𑒧𑒹, 𑒎𑒭𑒡𑒧𑒹, 𑒫𑒢𑒮𑓂𑒣𑒞𑒱𑒧𑒹, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒧𑒹, 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰𑒑𑒝𑒧𑒹 𑒂 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒧𑒹 𑒬𑒰𑓀𑒞𑒱 𑒯𑒳𑒁𑒨।

𑓆-𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝, 𑒠𑓂𑒨𑒾-𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨-𑒞𑒩𑒹𑒑𑒝, 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭- 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒂 𑒠𑓂𑒨𑒴𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒥𑒲𑒔, 𑒂𑒣:-𑒖𑒪, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒹𑒠𑒹𑒫𑒰- 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰, 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧- 𑒮𑒩𑓂𑒖𑒏।

ß

ॐ, स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात्।

𑓇, 𑒮↓𑒯𑒮𑓂𑒩↑𑒬𑒲𑒩𑓂𑒭𑒰↓ 𑒣𑒳𑒩𑒳↑𑒭𑓁। 𑒮↓𑒯↓𑒮𑓂𑒩𑒰↓𑒏𑓂𑒭𑓁 𑒮↓𑒯𑒮𑓂𑒩↑𑒣𑒰𑒞𑓂।

स भूमिं ग्वंग वि॒श्वतों वृ॒त्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

𑒮 𑒦𑒴𑒧𑒱𑓀↑ Ẇ 𑒫𑒱↓𑒬𑓂𑒫𑒞𑒼↑ 𑒫𑒵↓𑒞𑓂𑒫𑒰। 𑒁𑒞𑓂𑒨𑒰↑𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒠𑓂 𑒠𑒬𑒰𑒓𑓂𑒑𑒳↓𑒪𑒧𑓂॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

ॐ स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः सहस्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात् ॥ सभूमिं स॒र्व्वतस्पृ॒त्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

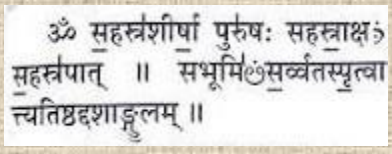

प॒द्भ्याग्ँ शू॒द्रो अंजायत॥

𑒣↓𑒠𑓂𑒦𑓂𑒨𑒰𑒑𑓂𑒿↑ 𑒬𑒴↓𑒠𑓂𑒩𑒼 𑒁↑𑒖𑒰𑒨𑒞॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिशः॒ श्रोत्राँत्।

𑒣↓𑒠𑓂𑒦𑓂𑒨𑒰𑓀 𑒦𑒴𑒧𑒱↓𑒩𑓂𑒠𑒱𑒬𑓁↓ 𑒬𑓂𑒩𑒼𑒞𑓂𑒩𑒰↑↑𑒞𑓂।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

ꣻ

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

卐(Swastik)

ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

৶ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम 𑖭𑖰𑖟𑖿𑖠𑖰𑖨𑖭𑖿𑖝𑖲, 𑖭𑖰𑖟𑖿𑖠𑖽 Devanagari Anji)

৭ (Bengali Anji, Siddham)

ꣻ (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

सोशल मीडिया, अन्तर्जाल आ दूरदर्शनक कार्यक्रम सभमे वेदमे ई लिखल अछि, ई वर्णित अछि, शूद्रक प्रति, स्त्रीक प्रति, शूद्रक स्त्रीक प्रति अपमान जनक गप लिखल अछि; ई सभ सूनि कऽ कियो विकीपीडिया आ आन आन ठाम अन्तर्जालपर लेख सभमे परिवर्तन कऽ देने रहथि। एक गोटे अंग्रेजीमे लिखलनि- “अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकय, बला वक्तव्य अछि।” हम कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, खण्ड-८; प्रबन्ध निबन्ध समालोचना भाग-२, २०१४ मे अपन आलेख “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निवारण” मे लिखने रही- “.. ई ओहिना भेल जेना अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकए बला वक्तव्य।”

मुदा अथर्ववेद बा कोनो वेदमे ओइ तरहक वक्तव्य कत्तौ नै आयल अछि। तकर विपरीत शुक्ल यजुर्वेद ई कहैत अछि:-

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकें ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकें, क्षत्रियकें, शूद्रकें आ आर्यकें; अपन लोककें आ अपरिचितकें सेहो (माने सभकें)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकें समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकें प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तें तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

वेद मे उपलब्ध शूद्र शब्दक उल्लेखित अंशक संग्रह नीचाँ देल जा रहल अछि। शूद्रक अपमानजनक उल्लेख तँ नहिये अछि, वरन् पएरसँ पवित्र पृथ्वीक जन्मक उल्लेख अछि आ तही उत्पत्तिक सादृश्यताक कारणसँ मानव समुदायक पालक शूद्र कहल गेल छथि।

पद्भ्याग्ँ शूद्रो अंजायत॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्राँत्।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

REFERENCE OF SHUDRAS IN VEDAS [Dr Tulsi Ram, 2013, Atharveda: Samaveda: Yajurveda: Rigveda; English Translations]

ATHARVA VEDA (3 references)

KANDA-14

(MARRIAGE AND FAMILY) Kanda 14/Sukta 1 (Surya's Wedding)

Devata: Dampati; Rshi: Surya Savitri

60. *Bhagastataksha caturah padanbhagastataksha catvaryuspalani. Tvasta pipesa madhyatonu vardhrantsa no astu sumangali.*

Bhaga, lord sustainer and ordainer of life, has framed the value orders of life: Dharma, Artha, Kama and Moksha; four social orders: Brahmana, Kshatriya, Vaishya and **Shudra**; four stages of personal life: Brahmacharya, Grhastha, Vanaprastha and Sanyasa. Tvashta, lord maker and organiser of life, has placed the woman as partner of man in matrimony in this order and organisation. May the bride be good and auspicious for us.

भाग- पालनकर्ता आ जीवनक अधिष्ठाता- जीवनक मूल्य क्रम तैयार केने छथिः धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष; चारि सामाजिक क्रम- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र; व्यक्तिगत जीवनक चारि चरण- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ आ सन्यास।त्वष्टा- स्वामी निर्माता आ जीवनक आयोजक- एहि क्रममे आ सङ्गठनमे स्त्रीकेँ विवाहमे पुरुषक साथीक रूपमे रखने छथि। से वधू हमर सभक लेल नीक आ शुभ होथि।

Kanda 19/Sukta 6 (Purusha, the Cosmic Seed)

Purusha Devata, Narayana Rshi

6. *Brahmano sya mukhamasid bahu rajanyo bhavat. Madhyam tadasya yadvaishyah padbhyam sudro ajayata.*

Brahmana, (man of knowledge, divine vision and the Vedic Word in the human community) is the mouth of the Samrat Purusha. Kshatriya, man of justice and polity, is the arms of defence and organisation. The middle part is the Vaishya who produces and provides food and energy. And the ancillary services that provide sustenance and support with auxiliary labour are the feet, the **Shudra** that bears the burden of society.

ब्राह्मण (ज्ञानी, दिव्य दृष्टि आ मानव समुदाय लेल वैदिक शब्द) सम्राट पुरुषक मुख अछि। क्षत्रिय -न्याय आ राजनीतिक लोक- रक्षा आ सङ्गठनक हाथ छथि। मध्य भाग वैश्य छथि जे भोजन आ ऊर्जाक उत्पादन आ आपूर्ति करैत छथि। आ सहायक सेवा जे सहायक श्रमक सङ्ग निर्वाह आ सहायता प्रदान करैत अछि, ओ अछि पैर, शूद्र जे समाजक भार वहन करैत छथि।

Kanda 19/Sukta 32 (Darbha)

Darbha Devata, Bhrgu Ayushkama Rshi

8. *Priyam ma darbha krunu brahmarajanyabhyam sudraya charyaya cha. Yasmai ca kamayamahe sarvasmai cha vipasyate.*

O Darbha, destroyer and preserver, eternal sanative, render me dear and loving to and loved by all Brahmanas, Kshatriyas, Vaishyas, **Shudra**s, whoever we love and desire, and all those who have the eye to see (and discriminate right and wrong).

हे दर्भा, विनाशक आ संरक्षक, शाश्वत विवेकशील; हमरा सभकेँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, सभक प्रिय आ प्रेमी बना दिअ। संगे ओ सभ हमरा सभसँ प्रेम् करथि जिनका सँ हम प्रेम करी बा जिनकर कामना करी; आ ओ सभ जिनका लग देखबाक दृष्टि अछि (आ सही आ गलतमे भेद बुझैत छथि)।

SAMAVEDA (o reference)

YAJURVEDA (7 references)

CHAPTER- VIII

30. (Dampati Devata, Atri Rshi)

Purudasmo visuruupa indurantarmahimanamanaja dhirah. Ekapadim dvipadim tripadim chatupadimastapadim bhuvananu prathantam svaha.

The man of mighty deeds, who eliminates suffering and creates joy, of versatile attainments, bright and honourable, constant and resolute, should wait for the great new arrival. Men of the household, cultivate the vaidic culture of one, two, three, four and eight steps of attainment: one: Aum; two: worldly fulfilment and the freedom of moksha; three: the joy of the truth of word and the health of body and mind; four: the attainment of Dharma, wealth, fulfilment of desire, and moksha; eight: the joy of all the four classes and all the four stages of life (Brahmana, Kshatriya, Vaishya and **Shudra**, Brahmacharya, Grihastha, Vanaprastha and Sanyasa). Build homes for the people and advance in life.

शक्तिशाली कर्मक पुरुष, जे दुःखकेँ समाप्त करैत अछि आ आनन्द उत्पन्न करैत अछि, बहुमुखी उपलब्धिक, उज्ज्वल आ सम्मानजनक, स्थिर आ दृढ़ संकल्पित, ओकरा महान नव आगमनक प्रतीक्षा करबाक चाही। घरक लोक, उपलब्धिक एक, दू, तीन, चारि आ आठ चरणक वैदिक संस्कृति विकसित करैत छथिः एकः ओम; दुइः सांसारिक पूर्ति आ मोक्ष रूपी स्वतन्त्रता; तीनः वचनक सत्यक आनन्द आ शरीर आ मस्तिष्कक स्वास्थ्य; चारिः धर्मक प्राप्ति, धन, इच्छाक पूर्ति, आ मोक्ष; आठः जीवनक चारि वर्ग आ चारि चरणक आनन्द (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वनप्रस्थ आ सन्यास)। लोकक लेल घर बनाउ आ जीवन मे प्रगति करू।

CHAPTER- XVIII

48. (Brihaspati Devata, Shunah-shepa Rshi)

Rucham no dhehi brahmanesu rucham rajasu naskrudhi. Rucha vishyesu shudreshu mayi dhehi rucha rucham.

Brihaspati, lord of the universe, eminent teacher and master of vast knowledge, inspire our Brahma section of the community—scholars, scientists, teachers and researchers with brilliance and love. Infuse brilliance, love and justice into our Kshatrias, defence, administration and justice section of the community. Bless with light, love and generosity our Vaishyas, producers and distributors among the community. And bless our **Shudra**s, the ancillary services, with light, love and loyalty. Bless me with light and love toward us all.

बृहस्पति- ब्रह्माण्डक स्वामी, प्रख्यात शिक्षक आ विशाल ज्ञानक स्वामी- समुदायक ब्रह्म वर्ग- विद्वान, वैज्ञानिक, शिक्षक आ शोधकर्ता- कैं प्रतिभा आ प्रेम सँ प्रेरित करू। हमर क्षत्रिय-रक्षा, प्रशासन आ न्याय- समुदायक वर्गमे प्रतिभा, प्रेम आ न्यायक संचार करू। हमर वैश्य-समुदायक निर्माता आ वितरक- सभकैं प्रकाश, प्रेम आ उदारतासँ आशीर्वाद दियौ। आ हमर सभक शूद्र -समुदायक सहायक सेवी- कैं प्रकाश, प्रेम आ निष्ठा सँ आशीर्वाद दियौ। हमरा सभ कैं प्रकाश आ प्रेम सँ आशीर्वाद दियौ।

CHAPTER- XXV

23. (Dyau etc. Devata, Prajapati Rshi)

Aditirdyauraditirantarikshamaditirmata sa pita sa putrah. Vishve deva aditih pancha jana aditirjatamaditirjanitvam.

In the essence: Light is indestructible; sky is indestructible; mother Prakriti (matter-energy-thought) is indestructible; Father, the Cosmic Spirit is indestructible; Son, the soul (jiva), is indestructible; all the divinities of nature and humanity are indestructible; five people, Brahmana, Kshatriya, Vaishya, **Shudra**, others, are indestructible; whatever is born is indestructible; whatever will be born is indestructible. (All that was, is and shall be is indestructible in the essence.)

सारमे: प्रकाश अविनाशी अछि; आकाश अविनाशी अछि; माता प्रकृति (पदार्थ-ऊर्जा-विचार) अविनाशी अछि; पिता, ब्रह्मांडीय आत्मा अविनाशी अछि; पुत्र, आत्मा (जीव) अविनाशी अछि; प्रकृति आ मानवताक सभ देवत्व अविनाशी अछि; पाँच व्यक्ति, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आ आन अविनाशी अछि; जे किछु जन्मल अछि से अविनाशी अछि; जे किछु जन्मत से अविनाशी अछि। (जे किछु छल, अछि बा रहत/ आओत से सार मे अविनाशी अछि।)

CHAPTER- XXVI

2. (Ishvara Devata, Laugakshi Rshi)

Yathemam vacham kalyanimavadani janebhyah. Brahmarajanyabhyam Shudraya charyaya cha svaya charayaya cha. Priyo devanam dakshinayai daturiha bhuyasamayam me kamah samrudhyatamupa mado namatu.

Just as this blessed Word of the Veda I speak for the people, all without exception, Brahmana, Kshatriya, **Shudra**, Vaishya, master and servant, one's own and others, so do you too. May I be dear and favourite with the noble divinities and the generous people for the gift of the sacred speech. May this noble aim of mine be fulfilled here in this life. May the others too follow and come my way beyond this life.

जेना वेदक ई धन्य वचन हम बिना कोनो अपवादक, ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य, स्वामी आ सेवक, अपन आ अन्य लोकक लेल कहैत छी, तहिना अहाँ सेहो करैत छी। पवित्र भाषणक ऐ उपहारक लेल हम महान देवत्व आ उदार लोक सभक प्रिय आ मनभावन रही। हमर ई महान उद्देश्य ऐ जीवन मे पूर हुअय। आन सभ सेहो हमर मार्गक अनुसरण करैत बढ़ैत जाय आ से ऐ जीवनसँ आगाँ धरि बढ़य।

CHAPTER- XXX

5. (Parameshvara Devata, Narayana Rshi)

Brahmane brahmanam kshatraya rajanyam marudbhyo vaishyam tapase Shudram tamase taskaram narakaya virahanam papmane klibamakrayayaayogum kamaya punshchalumatikrustaya magadham.

Give us, we pray, the Brahmanas for education and research, culture and human values; the Kshatriyas for governance, defence and administration; the Vaishyas for economic development, and the **Shudra**s for assistance and labour in the ancillary services. Remove, we pray, the thief roaming in the dark, the murderer bent on lawlessness, the coward disposed to sin, the armed terrorist bent on destruction, the harlot out for pleasure of flesh, and the bastard fond of scandal.

Note: In mantras 5-22 in which various aspects of organised life are listed, there is repetition of 'asuva' and 'parasuva' from mantra 3, which means: 'Give us, we pray, what is good', and, 'Remove, we pray, what is evil'. This is the prayer. Also, there are echoes of 'havamahe' from mantra 4, which means: 'We invoke and develop', and, 'we challenge and fight out'. This is the call for action under the divine eye.

शिक्षा आ शोध, संस्कृति आ मानवीय मूल्यक लेल ब्राह्मण; शासन, रक्षा आ प्रशासनक लेल क्षत्रिय; आर्थिक विकासक लेल वैश्य; आ सहायक सेवामे सहायता आ श्रम लेल शूद्र हमरा दिअ से हम प्रार्थना करैत छी। हम प्रार्थना करैत छी जे अन्हारमे घुमैत चोर, अराजकता पर बिर्त खूनी, पाप पर बिर्त कायर, विनाश पर बिर्त सशस्त्र आतंकवादी, दैहिक सुख लेल बाहर गेल वेश्या, आ कलंकक शौकीन नाजायजकेँ हटा दियौ।

नोटः मंत्र 5-22 मे, जइमे संगठित जीवनक विभिन्न पक्ष सूचीबद्ध अछि, मंत्र 3 सँ 'आशुवा' आ 'परशुवा' क पुनरावृत्ति होइत अछि, जकर अर्थः 'हमरा सभ कैं दिअ, हम प्रार्थना करैत छी, जे नीक अछि', आ, 'हटाउ, हम प्रार्थना करैत छी, जे अधलाह अछि'। ई प्रार्थना अछि। सङ्गहि, मंत्र 4 सँ 'हवामाहे' क प्रतिध्वनि अछि, जकर अर्थः 'हम आह्वान करैत छी आ आगू बढ़बै छी', आ, 'हम माँटि दइ छी आ लड़ै छी'। ई दिव्य दृष्टिक अन्तर्गत काज करबाक आह्वान अछि।

CHAPTER- XXX

22. (Rajeshvarau Devate, Narayana Rshi)

Athaitanastauau virupanalabhateitidirgham chatihrasvam chatisthulam chatikrusham chatishuklam chatikrushnam chatikulvam chatilomasham cha. Ashudra abrahmanaste prajapatyah. Magadhah punshchali kitavah kliboshudra abrahmanaste prajapatyah.

The good human being accepts and works with these eight classes of people of different forms and colours: too tall, too short, too fat, too thin, too white, too dark, too hairless, too hairy. Also they are neither Brahmanas nor **Shudra**s (nor the others). They too, all of them, are children of God, Prajapati. Even the bastard and the 'despicable', the wanton, the gambler, and the coward and the eunuch, neither **Shudra**s nor Brahmanas (nor the others), they too are children of God, Prajapati, father of all.

नीक लोक विभिन्न रूप आ रङ्गक ऐ आठ वर्गक लोकक संग स्वीकार करैत अछि आ काज करैत अछिः खूब लम्बा, बड्ड छोट, बड्ड मोट, खूब पातर, बड्ड गोर, बड्ड कारी, बहुत कम केशबला, खूब केशबला। ओ सभ ने ब्राह्मण छथि, नहिये शूद्र (आ नहिये आन कियो)। ओ सभ सेहो भगवान प्रजापतिक सन्तान छथि। एतऽ धरि जे नाजायज बा 'घृणित', ऊधमी, जुआरी, आ कायर आ नपुंसक, ने शूद्र, नहिये ब्राह्मण (नहिये आन कियो), ओ सभ सेहो भगवान प्रजापतिक सन्तान छथि, प्रजापति- सभक पिता।

CHAPTER- XXXI

11. (Purusha Devata, Narayana Rshi)

Brahmanosya mukhamashid bahu rajanyah krutah. Uru tadasya yadvaishyah padbhyam Shuudro ajayata.

The Brahmana, man of divine vision and Vedic Word, is the mouth of the Samrat Purusha, the human community. The Kshatriya, man of justice and polity, is created as the arms of defence. The Vaishya, who produces food and wealth for the society, is the thighs. And the man of sustenance and support with labour is the **Shudra** who bears the burden of the human family.

दिव्य दृष्टि आ वैदिक वचनक लोक ब्राह्मण, सम्राट पुरुष-मानव समुदाय-क मुख छथि। न्याय आ शिष्टताक लोक क्षत्रियकैं रक्षाक हथियारक रूपमे बनाओल गेल अछि। वैश्य, जे समाजक लेल भोजन आ धन उत्पन्न करैत छथि,

जांघ छथि। आ श्रमक सङ्ग निर्वाह आ सहारा देबऽबला व्यक्ति शूद्र छथि जे मानव परिवार सभकक भार वहन करैत छथि।

RIG VEDA (2 references)
Mandala 10/Sukta 90
Purusha Devata, Narayana Rshi
12. Brahmano sya mukhamasidbahu rajanyah kritah. Uru tadasya yadvaisyah padbhyam sudro ajayata.
The Brahmana, man of divine vision and the Vedic Word, is the mouth of the Samrat Purusha, the human community. Kshatriya, man of justice and polity, is created as the arms of defence. The Vaishya, who produces food and wealth for the society, is the thighs. And the man of sustenance and ancillary support with labour is the **Shudra** who bears the burden of the human family as the legs bear the burden of the body.
दिव्य दृष्टि आ वैदिक वचन बला ब्राह्मण, सम्राट पुरुष-मानव समुदाय- क मुख छथि। क्षत्रिय- न्याय आ राजनीतिक लोक- कैं रक्षाक हथियारक रूपमे बनाओल गेल अछि। वैश्य, जे समाजक लेल भोजन आ धन उत्पन्न करैत छथि, जांघ छथि। आ जीविकोपार्जन आ श्रमक सङ्ग सहायक व्यक्ति शूद्र छथि जे मानव परिवारक भार वहन करैत छथि जेना पैर शरीरक भार वहन करैत अछि।

Mandala 10/Sukta 124
Devata: Agni (1); Rshi: Agni, Varuna, Soma
1. *Imam no agna upa yajnamehi panchayamam trivritam saptatantum. Aso havyavaluta nah puroga jyogeva dirgham tama ashayishthah.*
Agni, yajnic light of life, come to this life yajna of ours: which has five divisions, i.e., Brahma-yajna, Deva-yajna, Pitr-yajna, Atithi-yajna, and Balivaishvadeva-yajna; conducted by five people, i.e, four socioeconomic classes of Brahmans, Kshatriyas, Vaishyas and **Shudra**s and others like chance visitors from other groups there might be; which is threefold, i.e., paka yajna, haviryajna and somayajna; and which has seven extensions, i.e., Agnishtoma, Atyagnishtoma, Ukthya, Shodashi,Vajapeya, Atiratra and Aptoyami. You are our leader and pioneer, Agni, and you are the carrier of our yajna to the divinities as well as harbinger of the fruits of yajna to us. Pray come and be our all-time dispeller of the cavern of deep darkness from life. (Yajna is a creative process of development in life from the individual to the social, national, global and environmental level of life. The explanation above is related to the social level. Swami Brahmamuni explains the yajna at the individual level, and that is also suggested in Rgveda 10, 7,

6: ‘Svayam yajasva’, and yajurveda 4, 13: “Iyam te yajniya tanu”, which means: Develop yourself by yajna according to the seasons of your growth, and remember your life in body, mind and soul is worthy of yajnic service for your personal development, your body being the first instrument of your wider yajna of life. This personal yajna is fivefold, for the elemental balance of earth, water, heat, air and ether; threefold for the balance of vata, pitta and kaf, and also for balanced growth of body, mind and soul; sevenfold for the growth of rasa, rakta, mansa, meda, asthi, majja and virya. Thus yajna is the process of growth beginning with the individual, accomplished at the cosmic level.)

अग्नि -जीवनक यज्ञक प्रकाश- हमर सभक ऐ जीवन-यज्ञमे आउ, जइमे पाँच विभाग छै, अर्थात, ब्रह्म-यज्ञ, देव-यज्ञ, पितृ-यज्ञ, अतिथि-यज्ञ, आ बलिवैश्वदेव-यज्ञ; पाँच लोक द्वारा संचालित, अर्थात, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र क चारि सामाजिक-आर्थिक वर्ग आ पाँचम आन समूह कखनो काल आयल आगंतुक। आ से तीनटा छै- अर्थात, पाक यज्ञ, हविर्यज्ञ आ सोमयज्ञ; आ जकर सात विस्तार छै, अर्थात, अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्त्या, षोडषी, वाजपेय, अतिरात्र आ अप्तोयमी। अग्नि, अहाँ हमरा सभक नेता आ अग्रगामी छी, आ अहाँ देवत्व लेल हमर यज्ञक वाहक छी आ सङ्गहि हमरा सभक लेल यज्ञक फलक अग्रदूत छी। प्रार्थना अछि जे आउ आ हमरा सभक जीवन तरहरि सन अन्हार सदाक लेल दूर करैबला बनू। (यज्ञ व्यक्तिगतसँ जीवनक सामाजिक, राष्ट्रीय, वैश्विक आ पर्यावरणीय स्तर धरि जीवनक विकासक एकटा रचनात्मक प्रक्रिया अछि। उपरोक्त व्याख्या सामाजिक स्तरसँ सम्बन्धित अछि। स्वामी ब्रह्ममुनी व्यक्तिगत स्तर पर यज्ञक व्याख्या करैत छथि, आ ई ऋग्वेद 10,7,6 मे सेहो सुझाओल गेल अछिः 'स्वयं यज्ञ'; आ यजुर्वेद 4,13: 'इयम ते यज्ञीय तनू', जकर अर्थ अछि- अपन विकासक ऋतुक अनुसार यज्ञ द्वारा अपना कैं विकसित करू, आ मोन राखू जे शरीर, मन आ आत्मा युक्त अहाँक जीवन यज्ञक सेवाक लेल अछि, आ तइसँ अहाँक व्यक्तिगत विकास हएत; अहाँक शरीर अहाँक जीवनक व्यापक यज्ञक पहिल साधन अछि। ई व्यक्तिगत यज्ञ पाँच प्रकारक अछि, पृथ्वी, जल, ऊष्मा, वायु आ आकाशक मौलिक संतुलनक लेल; तीन प्रकारक- वात, पित्त आ कफक संतुलनक लेल; आ शरीर, मन आ आत्माक संतुलित विकासक लेल सेहो; सात प्रकारक माने रस, रक्त, मानस, मेधा, अस्थि, मज्जा आ विर्यक विकासक लेल। ऐ तरहेँ यज्ञ व्यक्तिसँ शुरू होइत विकासक प्रक्रिया अछि, जे ब्रह्मांडीय स्तर पर सम्पन्न होइत अछि।)

आब आउ यूरोपक विद्वान लोकनि द्वारा वेदक गलत अनुवादक किछु उदाहरण देखू:-

EXAMPLES OF SOME MISTRANSLATIONS OF VEDAS BY WESTERN SCHOLARS

I

W.D. Whitney’s translation of the Atharvaveda (7, 107, 1) edited and revised by K.L. Joshi, published by Parimal Publications, Delhi, 2004:

Namaskrutya dyavapruthivibhyamantarikshaya mrutyave.

Mekshamyurdhvastisthaan ma ma hinsishurishvarah.

“Having paid homage to heaven and earth, to the atmosphere, to Death, I will urinate standing erect; let not the Lords (Ishvara) harm me.” I give below an English rendering of the same mantra translated by Pundit Satavalekara in Hindi:

“Having done homage to heaven and earth and to the middle regions and Death (Yama), I stand high and watch (the world of life). Let not my masters hurt me.”

An English rendering of the same mantra translated by Pundit Jai Dev Sharma in Hindi is the following:

“Having done homage to heaven and earth (i.e. father and mother) and to the immanent God and Yama (all Dissolver), standing high and alert, I move forward in life. These masters of mine, pray, may not hurt me.”

I would like to quote my own translation of the mantra now under print:

“Having done homage to heaven and earth, and to the middle regions, and having acknowledged the fact of death as inevitable counterpart of life under God’s dispensation, now standing high, I watch the world and go forward with showers of the cloud. Let no powers of earthly nature hurt and violate me.”

‘Showers of the cloud’ is a metaphor, as in Shelley’s poem ‘the Cloud’: “I bring fresh showers for the thirsting flowers”, which suggests a lovely rendering.

The problem here arises from the verb ‘mekshami’ from the root ‘mih’ which means ‘to shower’ (sechane). It depends on the translator’s sense and attitude to sacred writing how the message is received and communicated in an interfaith context with no strings attached (or unattached).

[Dr Tulsi Ram, 2013, Atharveda: English Translation; Page xxvi]

II

The idea that there was slavery in the Vedic Society originated with the Western Indologists with their intentional or careless translation of a Sanskrit word into "slave". For example, in the Taittiriya Samhita (Krishna Yajurveda), [7.5.10] [kanda 7,prapathaka 5, verse 10], a part of translation by Keith reads "slave girls dance around the fire". But in a footnote in the same page [pg., 628, Vol. 2] the author Keith says that the verse describes the dance of maidens. Suddenly the maidens have become "slave girls". Both Paranjape and Avinash Bose point to the mistranslation of the word 'yosha' as courtesan by the indologist Pischel [Bose, Hymns from the Veda, p. 36].

[Veda Books,SRI AUROBINDO KAPALI SHASTRY INSTITUTE OF VEDIC CULTURE, page 240]

III

In 1795, H.T. Colebrooke, then a young scholar, wrote his maiden paper, "On the Duties of a Faithful Hindu Widow," for the Asiatic Society (Asiatic Researches IV 1795: 205-15). He cited the hymn from the Rig Veda as sanctioning widow burning, which William Jones immediately contested (Canon 1993 I:lxx). Colebrooke translated the end of the hymn as "let them pass into fire, whose original element is water." A quarter of a century later, the Orientalist, H.H. Wilson pointed out that the hymn had been distorted (Wilson 1854: 201-14; Cassels 2010: 89). Wilson translated the verse as per the reading corroborated by Sayana, the authoritative medieval commentator on the Vedas, and demonstrated that it did not refer to widow burning (Rocher and Rocher 2012: 24-25).

[Meenakshi Jain,2016; Sati: Evangelicals, Baptist Missionaries; and the Changing Colonial Discourse, Page 5)

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

----

Videha: Maithili Literature Movement

विदेह ३५७ म अंक ०१ नवम्बर २०२२ (वर्ष १५ मास १७९ अंक ३५७)

(**विदेह** www.videha.co.in)

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक

अनुक्रम

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक

१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय **(पृ.२-२)**

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे **(पृ.३-७)**

२.२.डा.(श्रीमती) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क परिचय - (प्रस्तुति श्री जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल') **(पृ. ८-१५)**

२.३.कुणाल- प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' **(पृ. १६-२०)**

२.४.कनुप्रिया- हमर बच्ची मौसी **(पृ. २१-२२)**

२.५.मुन्नी कामत- मैथिलीक सशक्त रंगकर्मी प्रेमलता मिश्र प्रेम **(पृ. २३-२६)**

२.६.जया झा- हमरा लेल प्रेमलता दी **(पृ. २७-२८)**

२.७.उषाकिरण खान- हमर बच्ची (प्रेमलता) **(पृ. २९-३२)**

२.८.हितनाथ झा- ओ दिन ओ पल : प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' **(पृ. ३३-३७)**

२.९.शुभनारायण झा- मैथिली रंग मंच के पितामही प्रेम लता मिश्र 'प्रेम' **(पृ. ३८-४१)**

२.१०.विभा रानी- 'रंगमंच मे राजा किओ नहिं होइत छै' **(पृ. ४२-४९)**

२.११.डॉ शिव कुमार मिश्र- मिथिलाक विदुषी परम्पराक अनुपम-स्तम्भ श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' **(प. ५०-५४)**

२.१२.आशीष अनचिन्हार- कला लेल वरिष्ठता नै दक्षता मापदंड छै **(पृ. ५५-५७)**

२.१३.आभा झा- रंगकर्मी प्रेमलता मिश्रक साहित्यिक छवि- ओ दिन ओ पल **(पृ. ५८-६६)**

२.१४.मनोज झा- नारी सशक्तिकरण के अग्रदूत, मैथिली नाट्य मंचक पहिल सशक्त महिला रंगकर्मी आओर मैथिली फ़िल्म मे ममता के साक्षात प्रतिमूर्ति डॉ प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' **(पृ. ६५-७१)**

२.१५.प्रेम कान्त चौधरी- डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' : मिथिलाक विलक्षण विदूषी आ प्रेरणात्मक व्यक्तित्व- जेना जनलियैन्ह **(पृ. ७२-७७)**

२.१६.कमलेंद्र झा 'कमल'- मिथिलापुत्री **(पृ. ७८-७९)**

२.१७.लक्ष्मण झा सागर- प्रेमलता बहिन **(प. ८०-८५)**

२.१८.गजेन्द्र ठाकुर- प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क बहन्ने **(पृ. ८६-१०१)**

२.१९.अजित कुमार झा- मैथिली रंगमंचक प्रेरणास्रोत: श्रीमती प्रेमलता मिश्र प्रेम **(पृ. १०२-१०७)**

२.२०.प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'सँ साक्षात्कार जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' द्वारा **(पृ. १०८-११२)**

२.२१.उदय चन्द्र झा 'विनोद'- प्रेमलता प्रसंग **(पृ. ११३-११७)**

२.२२.प्रदीप पुष्प- मैथिल नारीक सांस्कृतिक- साहित्यिक स्वर - प्रेमलता मिश्र प्रेम **(पृ. ११८-१२०)**

३.विदेह ३५८ म अंक १५ नवम्बर २०२२- अंक ३५७ पर टिप्पणी (पृ. १२१-१२१)

गजेन्द्र ठाकुर विदेह ई पत्रिका **http://www.videha.co.in/**
ISSN 2229-547X क सम्पादक छथि आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि।

१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

ई अंक प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' पर विशेषांक अछि। ऐ विषयपर सम्पादकीय कने नम्हर भऽ गेलै तेँ अलगसँ ओकरा देल जा रहल अछि। साहित्य अकादेमी, ललित कला अकादेमी आ संगीत नाटक-अकादेमीक सम्मान/ पुरस्कारसँ बेशी महत्वपूर्ण विदेहक विशेषांक भऽ गेल अछि से उद्गार पाठक लोकनि सोशल मीडियापर व्यक्त केलन्हि अछि। सभ सहयोगी आ पाठकगणकेँ धन्यवाद।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे

प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे

विदेह द्वारा 'जीबैत मुदा उपेक्षित' शृखंला केर अंतर्गत अगस्त 2022 कैं विदेह प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' आ शरदिन्दु चौधरी विशेषांक प्रकाशित करबाक सार्वजनिक घोषणा केलक आ प्रस्तुत अछि ई विशेषांक जे कि केंद्रित अछि प्रेमलता मिश्रजीपर। एहि सूचनाकैं एहि लिंकपर देखि सकैत छी-घोषणा।

एहि विशेषांकसँ पहिने विदेह 6 टा विशेषांक प्रकाशित कऽ चुकल अछि आ एहिठाम आब हम कहि सकैत छी जे ई एकटा चुनौतीपूर्ण काज छै। अनेक संकट केर सामना करए पड़ैत अछि हमरा लेख एकट्ठा करएमे। मुदा संगहि ईहो हम कहब जे संकटसँ बेसी हमरा लग समर्थन अछि। हँ ई मानएमे हमरा कोनो दिक्कत नहि जे जतेक लेख केर उम्मेद केने रहैत छी हम ततेक नै आबैए, जतेक लोक लिखबाक लेल गछैत छथि से सभ अंत-अत धरि आबि चुप्प भऽ जाइत छथि। आ एकर कारणो छै, किनको ई लागै छनि जे आनपर लिखब से हम अपने रचना किए ने लीखि लेब, किनको लग पोथिए नै रहै छनि, कियो विदेहक समावेशी रूपसँ दुखी छथि, तँ किनको मित्रकैं विदेहसँ दिक्कत छनि तँइ ओ नहि देता। एकरो हम संकटे बुझै छियै जे सभ फेसबुकपर लंबा-लंबा लेख वा कमेंट टाइप कऽ लै छथि सेहो सभ विदेह लेल हाथसँ लिखल पठाबैत छथि। जे सभ कहियो फेसबुकपर टाइप कऽ लीखै छथि तिनकर आलेख हम सभ टाइप करिते छी। खएर पहिने कहलहुँ जे संकटसँ बेसी समर्थन अछि तँइ आइ पहिलसँ लऽ कऽ सातम विशेषांक धरि पहुँचलहुँ हम। 2015 सँ लऽ कऽ 2022 धरि सात टा विशेषांक प्रकाशित भेल मने बर्खमे एकटा। निश्चिते समर्थन बेसी भेटल हमरा। जखन कि विदेहक ई सातो विशेषांक केर अलावे आनो विषयपर विशेषांक प्रकाशित भेल अछि। एकर

अतिरिक्त ईहो बात संतोषदायक अछि जे विदेहक हरेक विशेषांक अभिनंदनग्रंथ हेबासँ बाँचि गेल अछि। मुख्यधारा जकाँ विदेहकेँ अभिनंदनग्रंथ नहि चाही। अभिनंदनग्रंथ अहू दुआरे नै चाही जे ओहिसँ लेखक वा जिनकापर निकालल गेल छनि तिनकामे सुधारक गुंजाइश खत्म भऽ जाइत छै। तँइ विदेहक विशेषांकमे आलोचना-प्रसंशा सभ भेटत।

विदेहक ई विशेषांक महिलाक उपर अछि। एहि विशेषांककेँ हम पहिल महिला विशेषांक कहब मुदा जँ हमर सभहक प्रयास सफल भेल रहैत तँ ई दोसर विशेषांक रहैत। विदेह 2016 मे परमेश्वर कापड़ि, कमला चौधरी आ वीरेन्द्र मल्लिक जीक उपर विशेषांक निकालबाक घोषणा केने रहए जे पूरा नै भऽ सकल आ किएक ने भऽ सकल से कहबासँ बेसी नीक जे हम अपनेकेँ दोषी मानी। एहि प्रयासकेँ एहि लिंकपर देखि सकैत छी आ एकर फोटो निच्चा सेहो देल गेल अछि****।

लेखक केर मूल्यांकन बहुत असान छै मुदा कारण ओकर रचनाकेँ मुद्रित हेबाक साधन बहुत छलै मुदा अभिनय केर मूल्यांकन कठिन रहै कारण रिकार्डिंग केर सुविधा बहुत बादमे एलै। अभिनय केर त्वरित मूल्यांकन संभव छलै। से चाहे रंगकर्मी पुरुष होथि वा कि महिला। मैथिलीमे ओनाहुतो महिला रंगकर्मीक आधुनिक इतिहास कम्मे दिन अछि (प्राचीन कालमे महिला रंगकर्मी छलथि वा कि नै से हमरा ज्ञात नै)। प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' रंगकर्मी छथि तँइ हम ई मानि कऽ चलि रहल छी जे हिनक 90% मूल्यांकन वर्तमानमे संभव नहि। तखन बाँकी दस प्रतिशत मूल्यांकन ओहन लोक सभ द्वारा कएल जा सकैए जे कि प्रेमलताजीक अभिनय पहिने वा कि एखन देखने छथि। हुनक अभियन केर किछु रिकार्डिंग सेहो छै जाहिसँ नव लोक सेहो मूल्यांकन कऽ सकै छथि। एकर अतिरिक्त प्रेमलताजी रचनाकर्मी सेहो छथि जाहिसँ लेखक वर्ग हुनक मूल्याकंन सेहो कऽ सकै छथि।

एहन नै छै जे प्रेमलताजीपर लिखल नै गेलै मुदा ओ सभ एकट्ठा नै भऽ सकल छै तँइ ओकर प्रभाव हेड़ा गेल छै। एहि संदर्भमे हम कहि सकै छी जे विदेहक ई प्रस्तुत विशेषांक एहन पहिल प्रयास अछि जाहिमे ई बुझबाक प्रयास कएल अछि जे प्रेमलताजीक अभिनय वा रचना केहन छनि। ई अलग बात जे हम सभ कतेक सफल वा असफल भेलहुँ से पाठक कहता। एहि विशेषांक केर शुरूआत विदेहक आने विशेषांक जकाँ अछि। संगे-संग ई क्रम ने तँ उम्रक वरिष्ठता केर पालन करैए आ ने रचनाक गुणवत्ताक। हँ, एतेक धेआन जरूर राखल गेल छै जे पाठकक रसभंग नहि होइन आ से विश्वास अछि जे रसभंग नै हेतनि।

पाठक जखन एहि विशेषांककेँ पढ़ताह तँ हुनका वर्तनी ओ मानकताक अभाव लगतनि। वर्तनीक गलती जे थिक से सोझे-सोझ हमर सभहक गलती थिक जे हम सभ संशोधन नै कऽ सकलहुँ मुदा ई धेआन रखबाक बात जे विदेह शुरुएसँ हरेक वर्तनी बला लेखककेँ स्वीकार करैत एलैए। तँइ मानकता अभाव स्वाभाविक। एकर बादो बहुत वर्तनीक गलती रहल गेल अछि जे कि हमरे सभहक गलती अछि। मैथिलीमे किछुए एहन पत्रिका अछि जकर वर्तनी एकरंगक रहैत अछि आ ई हुनक खूबी छनि मुदा जखन ओहो सभ कोनो विशेषांक निकालै छथि तखन वर्तनी तँ ठीक रहैत छनि मुदा सामग्री अधिकांशतः बसिये रहैत छनि। ऐतिहासिकताक दृष्टिसँ कोनो पुरान सामग्रीक उपयोग वर्जित नै छै मुदा सोचियौ जे 72-80 पन्नाक कोनो प्रिंट पत्रिका होइत छै ताहिमे लगभग आधा सामग्री साभार रहैत छनि, तेसर भागमे लेखक केर किछु रचना रहैत छनि आ चारिम भागमे किछु नव सामग्री रहैत छनि। मुदा हमरा लोकनि नव सामग्रीपर बेसी जोर दैत छियै। एकर मतलब ई नहि जे वर्तनीमे गलती होइत रहै। हमर कहबाक मतलब ई जे संपादक-संयोजककेँ कोनो ने कोनो स्तरपर समझौता करहे पड़ैत छै से चाहे वर्तनीक हो कि, मुद्राक

हो कि विचारधारक हो कि सामग्रीक हो। हमरा लोकनि वर्तनीक स्तरपर समझौता कऽ रहल छी मुदा कारण सहित। प्रिंट पत्रिका एक बेर प्रकाशित भऽ गेलाक बाद दोबारा नै भऽ सकैए (भऽ तँ सकैए मुदा फेर पाइ लागि जेतै) तँइ ओकर वर्तनी यथाशक्ति सही रहैत छै। इंटरनेटपर सुविधा छै जे बीचमे (इंटरनेटसँ प्रिंट हेबाक अवधि) ओकरा सही कऽ सकैत छी मुदा समाग्रिए बसिया रहत तँ सही वर्तनी रहितो नव अध्याय नै खुजि सकत तँइ हमरा लोकनि वर्तनी बला मुद्दापर समझौता केलहुँ। हमरा लोकनि कएलनि, कयलनि ओ केलनि तीनू शुद्ध मानैत छी, एतेक शुद्ध मानैत छी एकै रचनामे तीनू रूप भेटि जाएत। आन शब्दक लेल एहने बूझू।

उम्मेद अछि जे पाठक विदेहक आने विशेषांक जकाँ एकरा पढ़ताह आ पढ़ि एकर नीक-बेजाएपर अपन सुझाव देताह। विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक केर पोथी रूप "स्वतंत्रचेता" केर नामसँ प्रकाशित भेल उम्मेद जे भविष्यमे प्रेमलताजीपर केंद्रित एहि विशेषांक केर पोथी रूप सेहो आएत।

विदेह द्वारा 'जीबैत मुदा उपेक्षित' शृखंलामे प्रकाशित भेल आन विशेषांक सभहक लिस्ट एना अछि)एहिठाम जे अंकक लिस्ट देल गेल अछि ताहि अंकपर क्लिक करबै तँ ओ अंक खुजि जाएत-(

1) अरविन्द ठाकुर विशेषांक 189 म अंक 1 नवम्बर 2015 (ई विशेषांक 2020 मे पोथी रूपमे सेहो आएल अछि(
2) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक 191 म अंक 1 दिसम्बर 2015
3) रामलोचन ठाकुर विशेषांक 319म अंक
4) राजनन्दन लाल दास विशेषांक 333म अंक
5) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक 15 जून 2022

6) केदारनाथ चौधरी विशेषांक 15 जून 2022 अंक 352

****

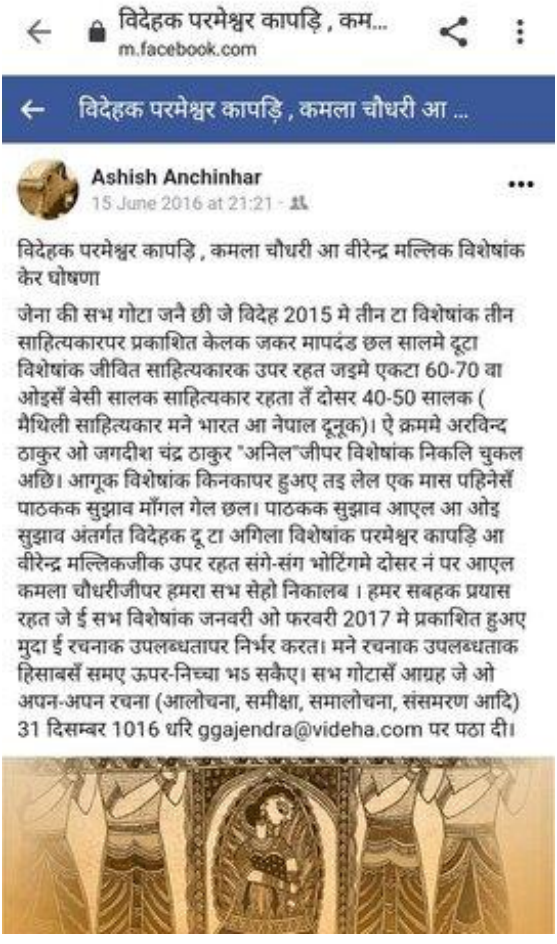

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२.डा.(श्रीमती) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क परिचय - (प्रस्तुति श्री जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल')

डा.(श्रीमती) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क परिचय - (प्रस्तुति श्री जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल')

नाम : प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

माता : स्व. वृन्दा देवी

पिता : पं. दीनानाथ झा (वैद्यजी)

जन्म : 29.09.1948 स्थान : नैहर - रहिका (मधुबनी)

सासुर : सिरसी (सीतामढ़ी)

पति : स्व. महेश्वर मिश्र

अन्य पारिवारिक सदस्य :

पुत्र : प्रथम : मनमोहन मिश्र (मुन्ना), द्वितीय : रवि रंजन मिश्र (मन्टू). तृतीय : सत्यजीत मिश्र (नन्हा)

पुत्री : अनुपमा (अन्नू)

पुत्रवधू : प्रभा मिश्र, नीलिमा मिश्र आ नूतन मिश्र

पौत्र : मानवेन्द्र, मानस आ मुकुन्द

पौत्री : मेघना आ पीयूषी

शिक्षा : मैथिलीमे स्नातकोत्तर, बी.एड., पी.एच.डी.

सेवा : व्याख्याता, बाँकीपुर राजकीय बालिका द्वादशीय विद्यालय, गोलघर, पटना

(सितम्बर 2008 मे अवकाश प्राप्त)

<u>साहित्य सृजन :</u>

प्रकाशित पोथी :

एगो छलीह सिनेह (कथा संग्रह / 2005)

ओ दिन ओ पल (संस्मरण संग्रह / 2005)

शेखर प्रसंग (शोध प्रबंध)

अनेक पत्रिका / स्मारिका आदिमे कथा आ लेख प्रकाशित

<u>सम्पादन :</u>

'सांध्य गोष्ठी' (अनियतकालीन पत्रिका)

भंगिमा (नाट्य विषयक अनियतकालीन पत्रिका)

जानकी (मैथिली महिला संघक स्मारिका)

<u>सामाजिक \ सांस्कृतिक संस्था सभसँ सम्बद्धता :</u>

चेतना समिति, पटना

भंगिमा, पटना

अरिपन,पटना

मैथिली महिला संघ, पटना

वंदना रानी केन्द्र आदि संस्था सभमे अध्यक्ष \ उपाध्यक्ष \ सचिव \ कोषाध्यक्ष आदिक रूपमे समय-समयपर कार्यरत

बिहार संगीत नाटक अकादमी,पटनाक कार्यकारिणी सदस्यक रूपमे कार्य सम्पादन

मैथिली अकादमी,पटनाक सांस्कृतिक एवं लोकमंच समितिक सदस्याक रूपमे कार्य सम्पादन

<u>प्रसारण :</u>

आकाशवाणी एवं दूरदर्शनसँ अनेक कथा, वार्ता, परिचर्चा आदिक प्रसारण

रंगकर्मक क्षेत्रमे योगदान :

200 सँ अधिक नाटकमे अभिनय

संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत अछि :

रेडियो नाटक : पं. सुधांशु शेखर चौधरी लिखित नाटक :

'आँखिक परदा', 'जय सोमनाथ', 'चाकरी', 'बहतर', 'परिवार', 'स'ख-सिहन्ता', 'कहाँ जाइछी डगरे- डगरे', 'सोनाक टुकड़ी', 'पड़ल काज', आ बीस सूत्री कार्यक्रमपर नाटक 'उडन-खटोला', 'उफाँटि', 'नव आँखि' आदि

गौरी कान्त चौधरी 'कान्त' लिखित नाटक 'महर्षि विश्वामित्र'

भाग्य नारायण झा लिखित नाटक 'सोनक ममता', 'पहिली तारीख' आदि

रेडियो धारावाहिक : 'सिंहासन बत्तीसी' (लेखक - रवीन्द्र नाथ ठाकुर)

रंगमंचीय नाटक :

सुधांशु शेखर चौधरी द्वारा लिखित नाटक-'लगक दूरी', 'पहिल साँझ', 'भफाइत चाहक जिनगी', 'लेटाइत आँचर' आदि

प्रो. हरिमोहन झा लिखित नाटक 'ग्रैजुएट पुतोहु', 'विकट पाहुन' आदि

प.गोविन्द झा लिखित 'लोढ़ानाथ', 'अंतिम प्रणाम','पातक मनुक्ख'(डा. अरविन्द अक्कू द्वारा कथासँ नाट्य रूपांतरण) 'रुक्मिणी-हरण' (एहि नाटकक 17 बेर मंचन भ' चुकल अछि)आदि

राजकमल लिखित 'ललका पाग'

दिगम्बर झाक लिखल नाटक 'टुटैत लोकं'

महेन्द्र मलंगिया लिखित नाटक 'एक कमल नोरमे', 'काठक लोक' आदि

छत्रानंद सिंह झा (बटुक भाइ) लिखित नाटक 'प्रायश्चित' (परिवर्तित नाम 'सुनू जानकी')

उषा किरण खान लिखित नाटक 'फागुन', 'चानो दाइ' आदि

डा. अरविन्द अक्कू लिखित नाटक 'अन्हार जंगल', 'आगि धधकि रहल अछि' आदि

स्व.ज्योत्स्ना चन्द्रम लिखित नाटक एसगर-एसगर

विभूति आनन्द आ कुमार शैलेन्द्र लिखित नाटकक सेहो मंचन भेल अछि

रेडियो सीरियल :

मैथिली --सिंहासन बत्तीसी (लेखक- रवीन्द्र नाथ ठाकुर)

दूरदर्शन,बिहार पर प्रसारित धारावाहिक : (हिन्दी) -पर्व भरा मिथिला, वीर कुंवर सिंह, विद्रोह, एक कहानी आदि

<u>मैथिली फिल्म :</u>

'ममता गाबय गीत', 'सस्ता जिनगी महग सिनूर', 'ललका पाग', 'मिथिला मखान', 'बबीतिया' आदि

<u>हिन्दी फिल्म :</u>

प्रकाश झा द्वारा निर्मित फिल्म 'दामुल' आ टेली फिल्म 'कथा माधोपुर की' (पंचायत राजपर), अन्य टेली फिल्म -'मर्यादा', 'जहाँ चाह वहाँ राह', 'देहाती दुनिया', 'रागिनी' आदि

भोजपुरी फीचर फिल्म : 'दूल्हा गंगा पार के', 'बबुआ हमार'

भोजपुरी सीरियल : 'साँची पिरीतिया'

<u>सम्मान :</u>

साहित्य,कला,संस्कृति,अभिनय आदि क्षेत्रमे उल्लेखनीय योगदान हेतु निम्नलिखित संस्था सभ द्वारा अभिनंदित आ सम्मानित :

1985 मे मैथिली रंगमंचमे विशेष योगदान हेतु चेतना समिति, पटना द्वारा सम्मानित

1987 मे मैथिली रंगमंचमे विशेष योगदान हेतु मिथिला विकास परिषद्, कोलकाता द्वारा

1988 मे चेतना समिति, पटना द्वारा 'शैलवाला पुरस्कार'

1988 मे अखिल भारतीय मिथिला संघ,दिल्ली एवं अरिपन, पटना द्वारा संयुक्त रूपसँ सम्मानित

1992 मे बिहार आर्ट थिएटर, पटना द्वारा प्रख्यात रंगकर्मी 'अनिल कुमार मुखर्जी प्रथम शिखर सम्मान'

1992 मे बिहार प्रदेश भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन, पटना द्वारा 'कलाश्री'क उपाधिसँ सम्मानित

1992 मे भानु कला केन्द्र, विराटनगर (नेपाल) एवं अरिपन, पटनाक संयुक्त तत्वावधानमे आयोजित सप्तम नाट्य प्रतियोगितामे सर्वोत्तम चरित्र अभिनेत्रीक पुरस्कारसँ सम्मानित

1996 मे हिन्दी रंगमंच 'प्रांगण', पटना द्वारा आयोजित द्वादश पाटलिपुत्र महोत्सवक अवसरपर विशिष्ट रंगमंचीय योगदान हेतु 'पाटलिपुत्र एवार्ड'सँ सम्मानित

2000 मे विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा 'मिथिला विभूति सम्मान'

2000 मे 'प्रयाग सांस्कृतिक संगम, इलाहाबाद' द्वारा 'मिथिला विभूति सम्मान'

2004 मे 'रोटरी पटना मिडटाउन', पटना द्वारा रंगमंचक माध्यमसँ समाज सेवा हेतु सम्मान

2007 मे अंतर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, दिल्ली द्वारा सम्मानित

2007 मे कला कक्ष, पटना द्वारा 'कलाकक्ष सम्मान'सँ सम्मानित

2009 मे हिन्दी नाट्य मंच 'प्रयास' द्वारा 'नूर फातिमा एवार्ड'सँ सम्मानित

2011 मे दिल्लीक नाट्य संस्था 'मैलोरंग' द्वारा प्रथम 'ज्योतिरीश्वर रंगशीर्ष सम्मान'

2011 मे अष्टम अंतर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन एवं मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गोवाहाटी द्वारा सम्मानित

2012 मे मैथिल समाज, रहिका द्वारा 'महेन्द्र झा सम्मान'

2012 मे अखिल भारतीय मिथिला संघ,दिल्ली द्वारा 'मिथिला विभूति सम्मान'

2016 मे बिहार राज्य फिल्म फिल्म विकास एवं वित्त निगम, पटना द्वारा - फिल्म विकासक क्षेत्रमे उत्कृष्ट योगदान हेतु सम्मान

2021 मे शिवम् प्रोडक्शन प्रा. लि. द्वारा 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड'

2013 मे 'भिखारी ठाकुर (रंगमंच) वरिष्ठ पुरस्कार'

2018 मे सांस्कृतिक समिति, अन्धराठाढ़ी द्वारा 'भामती स्त्री सम्मान'

2022 मे 'नटराज सम्मान'

2022 मे मैथिली साहित्य कला, रंगमंच महोत्सवमे उत्कृष्ट सहभागिता हेतु सम्मान

आवास : एल. 2/33 , पी. आई. टी. कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना – 800020,

मो. नं. – 09931024819,

ई. मेल. - premlatamishraprem@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.३.कुणाल- प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

कुणाल

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' ई नाम हम कलकत्ते (सन् १९७५) सऽ सुनने छी। पटनामे भेल नाटक आ केनिहार लोकनिक ओत्तऽ चर्चा होइ। खास कऽ विद्यापति पर्व देखि कऽ गेलाक बाद। से पटना आबऽ सऽ पहिने बूझल छल जे औझुका नाटक-कर्मी सब के छइथ आ केहन नाटक करै छइथ। 'विद्यापति पर्व समारोह' चेतना-समिति, पटनाक सिग्नेचर-प्रोग्राम छल आ चेतना समिति दऽ हम मास्स्सैब (जीवकान्त) सऽ सुनने छी। ओ भरल क्लासमे बाजल छलथि जे ई संस्था 'ऑफिसर्स क्लब' छी। एतऽ ओ सब मैथिलीकेँ यूज आ एनज्वाइ करऽ जाइ छइथ!.. अक्षरशः सत्य वचन छलइन मस्सैबक। अस्तु, २०२२ तक अबैत-अबैत ई संस्था 'ऑफिसर्स क्लब' सऽ आगू विकास कऽ कऽ पूर्णकालिक-अल्पकालिक राजनीतिकर्मी लोकनिक 'मैथिली-डिस्को-रैप..' भऽ गेल-ए। विडम्बना ई जे एकरा साहित्यिक-संस्कृतिक संस्था कहइ जाइ छइथ। माने 'मन किछु आन, वचन किछु आने, करनी पुनि किछु आन... प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' एहि संस्थाक अपरिहार्य अंग छइथ। किछु सत्र सऽ एकर उपाध्यक्ष पदकेँ सुशोभित कऽ रहल छइथ!

हम अप्रैल १९८४ मे पटना एलौं आ तहिए सऽ संग छी। 'भंगिमा' सांस्कृतिक चेतनाक संवाहक नामे रङ-दल बनल जे पूर्णतः कलाकारक संस्था छल। संस्थाक पंजीकरण भेलै आ कार्यालय पता भेलै एल २/३३, पी.आइ.टी. कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना-२०। ई प्रेमलता जी क आवास छी। आइयो इएह पता छइ! अर्थात् ३८ बर्ख पुरान एहि संस्थाकेँ अप्पन कहाए बला किराया पर्यन्तक स्थल नइ छइ। रिहर्सल-मीटिंग करक लेल 'विद्यापति भवन'क बलधिंगरो व्यवस्थापर आश्रित अइ। नाटकक प्रॉप्स आ कस्ट्यूम, पत्रिका, फोटो (जे लगभग एक ट्रककेँ भरबाक परिमाणमे छल) पहिने (पटना-जलमग्न भेलापर) हिनके डेरापर गेंटल रहइ छल। बादमे गगनक डेरा (सरकारी आवास) पर राखल गेल। आ आब तऽ जखन गगन स्वयं नइ रहला तऽ ओ सामान सब जतऽ ततऽ हैत! जहिना हो, जेहन हो ... संतोष करऽ पड़ै छइ...

कभी किसी को मुकम्मल जहाँ नहीं मिलता

कहीं ज़मीन कहीं आसमाँ नहीं मिलता

(निदा फ़ाज़ली)

भंगिमा अनवरत अइ। बहुत रास नव लोकक प्रवेश भेलइए- नवताक नइ। अनेक आरम्भे सऽ जुड़ल लोक आब नइ रहला.. कुमार शैलेन्द्र, केशव-नन्दन, लक्ष्मी रमण मिश्र 'राजन', कुमार गगन, बटुक भाइ.. सौभाग्येक बात ई जे 'भंगिमा'केँ प्रेमलता जी क अभिभावकत्व अद्यावधि प्राप्त छइ! मुदा ओ एत्तहि तक सीमित (चेनना-समिति, महिला समिति, भंगिमा...) नइ छइथ। एहि सब संस्था सऽ आगू, समस्त मैथिली रङ परिवारक आब ओ 'माँ' भऽ गेल छइथ। बटुक भाइ, 'प्रेमलता' कहइ छलथिन। हम दीदी कहइ छियइन।

ओ, सब राखी-भरदुतिया दिन फोन कऽ कऽ मोन पाड़िते टा छइथ। हिनके संग भेला पर हमरा भेटलाह 'महेश्वर मिश्र'। विशुद्ध श्रोता, दर्शक आ पाठक। बड़ जिद केला पर अपन बेबाक अभिमत राखऽ बला। हम 'मिसर जी' कहइ छलियइन। ओ सरेआम हमरा 'नटराज' कहइ छला.. से 'मिसर जी' सेहो नइ रहला..

ओहो.. हम तऽ 'डाउन द मेमोरी लाइन' पर चलल जा रहल छी। मुदा सम्पादक कैँ तऽ संस्मरण नइ चाही.. परन्तु..

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' मे सऽ मिश्र आ प्रेम ऑफिसियल टा छइ। आब ओ माँ, दीदी, काकी, दादी, नानी आ प्रेमलता जी सऽ सम्बोधित होइ छइथ। हिनका लग आइब कऽ परिवारक अर्थ आ सीमा दुनू टूटइ छइ। प्रायः प्रत्येक मैथिल घरक ई परिचित व्यक्तित्व छइथ। जे मिसियो भइर मैथिली-कला-संस्कृति सऽ छुइत रखइए से हिनका सऽ संपृक्त अइ। बिलकुल पारिवारिक-अनौपचारिक व्यवहारक संग। बड़ पैघ परिवार छइन हिनकर... एहि अद्भुत लोकप्रियता सऽ आनन्द आ इरखा (ईर्ष्या) दुनू संगहि होइए... एहि अर्थमे ई हरिमोहन झा आ रवीन्द्र-महेन्द्रक समकक्ष छइथ... हम, शारदा सिन्हाक (कोनो भाषामे) गायनक ध्वनि 'मैथिली-ध्वनि' मानइ छी। तहिना, कामकाजी संस्कृति कर्मीक मैथिल-प्रतिमान छइथ दीदी प्रेमलता जी!

प्रथमतः दीदी, अभिनय-शिल्पी छइथ। रेडियो आ रंगमंच सऽ आरम्भ कऽ कऽ टेलीविजन आ सिनेमा तक विस्तारित। हमरा तऽ लगइए जे एखन बनऽ बला पाँचमे सऽ तीन मैथिली सिनेमामे हिनकर रिजर्व-रोल होइ छइन। ... एहन व्याप्तिकैँ सम्हारब कने कठिन होइ छइ। बेसी काल ई माथ चढ़ि बैसइ छइ। मुदा दीदी बेस सहजता सऽ तकरा सम्हारने छइथ। आर एकर एकटा खास कारण छइ। ... मैथिलक 'कला-संस्कृति', 'मात्सर्य' 'पैसिव आ नॉन-मानिटरी' होइए। लोक टिकट लऽ कऽ नाटक-सिनेमा-कन्सर्टमे नइ

जाइए, पुस्तक-पत्रिका नइ कीनत। अपवाद छइ, तैं इएह नियम छी। एहिठाम, कला-संस्कृति-कर्मीक लेल कोनो सम्यक सम्मान नइ छइ। जे सब छइ से नितान्त बचकानी छी।

दीदीक दोसर रूप अइ संगठनकर्ता के। अभिनयमे तऽ दोसर नाटककारक लीखल आ तेसर (निर्देशक- पमरियाक तेसर) क अनुसार कहइ-करइ छइथ। से किछु एना भेलइए जे ओ 'रूढ़-टाइप्ड' भऽ गेलीहए। हिनक अभिनयमे अहाकेँ विविधता आ प्रयोगधर्मिता नइ भेटत। असलमे एहन कोनो अपेक्षा मैथिली रङ-जगतमे छइहो नइ। प्रकारान्तर सऽ एहन कोनो अपेक्षा मैथिलीमे वा मैथिलीक नामपर होइत जाबंतो आयोजनमे सन्निहित नइ छइ। इएह नियम छियइ।

बहुत पहिने बाते-बातमे अनिल अंशुमन (जसम) कहलक जे ई तऽ पूर्णतः एक्टिविस्ट छइथ। सत्य वचन। दीदी मैथिल एक्टिविस्ट छइथ। पटनामे महिला सबकेँ मंच तक आनऽ बाली मे सऽ प्रमुख छइथ। चेतना समितिक उपाध्यक्ष छथिहे । भंगिमाक अभिभावक छइथ। अन्य रङदलक अप्पन लोक छइथ। सन् २००० सऽ अपन डेरेपर एकटा पाक्षिक आयोजन करइ छथि- सांध्य गोष्ठी नाम सऽ। एहिमे मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दी, मगही, भोजपुरीक रचनाकार लोकइन सहभागिता करइ छइथ। 'सांध्य-गोष्ठी' नाम सऽ पत्रिका सेहो बहार करइ छइथ। किछु पुस्तक सेहो प्रकाशित छइन। अहाँकेँ इच्छा हो तऽ पुस्तक-पत्रिकाक बिक्रीक मादे पुछबइन। ओ बेस सहजता सऽ कहती जे 'पेंशन'क पाइ भूट करइ छी। सैह कऽ रहल छइथ- छुटती नहीं है मुँह से ये काफ़र लगी हुई (शेख़ इब्राहीम ज़ौक़)।

आब, वयस, परिस्थिति आ कालक माइर हिनकर गतिशीलताकेँ कम कऽ देलकइनए। मुदा सांध्य-गोष्ठी अनवरत छइन। मिसर जी, एहि गोष्ठीक

अभिभावक-स्वागताध्यक्ष आ श्रोता होइ छलाह। हिनका गेलाक बाद हम कोनो सांध्य-गोष्ठीमे भाग नइ लऽ सकल छी। मुदा दीदी सूचना देनाइ नइ बिसरइ छइथ..

शर्त छइ जे संस्मरण नइ हो। परन्तु रंगमंच तऽ छीहे श्रुति-स्मृतिक विधा। संगठनक बारेमे सेहो इएह परिघटना लागइ छइ। की आरो कोनो उपाय विकसित केने छी हमरा लोकइन जाहि सऽ अभिनय-शिल्पी, कला-कर्मी, संगठन-कर्ता-एक्टिविस्ट सबहक कृतिकेँ आगूक पीढ़ीक परिचितिक लेल संरक्षित कएल जाए?

- कुणाल- संपर्क-पटना

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.४.कनुप्रिया- हमर बच्ची मौसी

कनुप्रिया

हमर बच्ची मौसी

हमरा लेल थियेटर बालपनसँ शुरू भऽ गेल। माँ-बाबूजी कुमुद शर्माक बाल रंगमंचमे हमरा ६ बरखक आयुमे पहिल बेर पठेलखिन। पटनाक कॉन्वेंट स्कूलमे पढ़य वाली हम तीनू बहिन कखनो एक मुखी नय रहलहुँ। हाँ, शिक्षा अंग्रेज़ी माध्यमसँ अवश्य भेल मुदा नृत्य,संगीत,साहित्यिक गोष्ठी,नागा बाबा ठाकुरबाड़ीक प्रवचन,दुर्गा पूजाक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम ,मैथिल महिला संघ केर आनंद मेला और विशेष रूपसँ मैथिली नाट्य संगठन 'भंगिमा' हमर सभक व्यक्तित्व के गढ़यमे विशेष भूमिका निभेलक।

अहिमे प्रमुख भूमिका रहलनि बच्ची मौसी केर। आन लोक लेल 'प्रेमलता मिश्र प्रेम'

हमर सभक 'बच्ची मौसी' वास्तवमे माँ (उषा किरण खान)केर छोट बहिन छथिन। साँझमे अपन स्कूलसँ साइडमे पर्स टाँगने मौसीक आकृति, माँ के 'बच्ची आउ आउ' कहनाइ आ फेर अँगनामे चाय आ भुज्जाक नाश्ता, अंतहीन विषयपर गप हमर मानसपर आइयो अंकित अछि! हमरा सभकेँ मैथिली मंचपर राति ९-९ बजे तक निश्चिंत भ' क' छोड़य के एक

महत्वपूर्ण कारण बच्ची मौसी छलखिन। बच्ची मौसी माँ,पत्नी,पेशा स' टीचर परंतु मंच केर एक टा अत्यंत अनुभवी और प्रतिबद्ध अभिनेत्रीक रूपमे मिथिला समाजमे प्रसिद्ध छथिन।

हमरा नै मोन अछि कि कखनो मौसीक मूँहपर क्रोध या एतेक स्वावलंबी हेबाक बावजूद कनिको दंभ देखने हएब। सदिखन दोसराकेँ आगू बढ़ाबएमे संलग्न हमर सभक बच्ची मौसी स्त्रीत्व केर एकटा अनुपम उदाहरण छथिन। आइ हम गर्वसँ कहि सकै छी कि पटना के हमर कला यात्राक शुरुआत हमर बाबूजी, माँ आ बच्ची मौसीक कारणे भेल और आइ हम मात्र कलासँ अपन जीवन यापन कऽ रहल छी और करैत रहब एहन आशा अछि।

प्रेमलता मिश्र प्रेम उर्फ़ बच्ची मौसीकेँ स्वस्थ क्रियाशील जीवन लेल अशेष शुभकामना।

- कनुप्रिया- संपर्क-पटना

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.५.मुन्नी कामत- मैथिलीक सशक्त रंगकर्मी प्रेमलता मिश्र प्रेम

मुन्नी कामत

मैथिलीक सशक्त रंगकर्मी प्रेमलता मिश्र प्रेम

मैथिलीक अहि धरा पर कतेको विदुषी जन्म लेलैथ। जे अपन कर्म आऽ सामर्थ्य, सँ समाज कऽ नव बाट देखौलैथ। ठूंठ बांस आकाश तखने छुबि पबैत अछि जखन ओऽ आकाश दिस मात्र निहारि शान्त होयक बदलामें ओकरा लपैक कऽ छुबैयक अथक प्रयास मऽ दिन - राति लैग जैत अछि। 40-50 कऽ दशक मऽ बाल विवाह सँ ग्रसित अहि समाज में स्त्री भेनाय पाप छल। ओहि समयमे स्त्री के रंगकर्मी होनाए असंभव छल। मुदा जखन मन सूर्य छुबैए लेल आतुर होय तँ आगि सँ दहकैत दिनकर अपन तेज कम कऽ लैत अछि।अहिना भेल प्रेमलता मिश्र प्रेम संगे जे अपन प्रारम्भिक शिक्षा समाज सँ नुका-चोड़ा कऽ ओहि समाजक बिच केलैथ। सब कलुषित देबाल कऽ ढ़ाहैत उच्च शिक्षा हासिल कैर अनेक अनपढ़क जीवन में ज्ञानक दीया जरौलैथ। माय - बाबू के एकमात्र सन्तान जे अपन बाबूअक सपना संगे उठैय छल आऽ कर्मपथ पर चलैथ छल। ओऽ अपन बाबूअक कंधा तखन बनलैथ जखन सरकारी शिक्षिका बैन राजधानी पटना मऽ बारवीं कक्षा तक के बच्चाके पढ़ौनी करौलैथ।

लोग कि कहत ओहि बात करें पाछां छोड़ैत अपन रूचि संगे धरती नापैं लागल।बाल्यकाल सँ विद्यालयक प्रोग्राम मऽ नाट्य प्रस्तुत करे लागल। अहि सँ पहिने महिला पात्र कऽ अभिनय पुरूषे करैत छलैथ पर आब प्रेमलता मिश्र प्रेम अहि सोच मऽ बदलाव अपन अभिनय सँ अनलैथ।

29 सितम्बर 1948ई ग्राम रहिका मऽ जन्म लेनिहार *प्रेमलता मिश्र प्रेम* वास्तव मऽ प्रेमक सागर छथि। हुनकर वाणी कऽ मधुरता सहजता पूर्वक केकरो अपना बना लैत अछि। सफल अभिनय मऽ सिद्धहस्त अहि प्रतिष्ठित रंगकर्मी कऽ विवाह 12 सालक अवस्था मऽ सौराठ सभा सँ स्वर्गीय महेश्वर मिश्र जे 2018 मऽ दीदी कऽ असगर छोड़ि परलोक वासी भेलखिन हुनका संगे भेल छल। सुख -सम्मपन्न हुनकर दाम्यपत्य जीवन बहुत खुशहाल छल। संयुक्त परिवार मऽ ब्याहल दीदी चारि संतानक मातृसुख प्राप्त केलैथ। नैहर सँ सासुर तक अपन मृदुल स्वभाव कारण सबहक दिल मऽ राज केलैत। वर्तमानमे सेहो दीदीक परिवार रिस्ता आऽ जैतक देबाल ढ़ाहैत बहुत पैघ भऽ गेल अछि। जतय दीदी कऽ सबकोय दीदी माँ कैह संबंधित करैत अछि। अहि सँ पैघ सम्मान और कि भऽ सकैत अछि। हिनकर अभिनय में ओऽ शक्ति अछि जे श्रोता हिनकर अभिनय संगे ठाढ भऽ जैत अछि।एगो कलाकारक ई बहुत पैघ उपलब्धि अछि।

दीदी माँ शिक्षिका छेली हुनका लग समयक अभाव छल। मुदा नाटक प्रति अपार प्रेम।हुनकर नस - नस मऽ अभिनय विद्यमान छल। स्कूलक समयक बाद ओऽ कोनो नाटकक रिहर्सल कैर रहैत छेली वा कोनो नाटकक मंचन। नाटक प्रति हिनकर झुकाव आऽ बेसी - सँ - बेसी महिला कऽ मंचन लेल प्रोत्साहित केनाइ मैथिली नाट्य साहित्य लेल हुनका द्वारा कैल अनुपम योगदान अछि। हिनका सँ प्रोत्साहित भऽ माता -पिता अपन बेटी कऽ सब क्षेत्र संगे नाटक क्षेत्र मऽ सेहो आगा बढ़बैं लागल। नैं तँ अखन धैर हमल

समाज नाटक कऽ महिला पात्र मऽ पुरखे कऽ देखैत रहिता। प्रेमलता मिश्र प्रेम शायद समाजक सोंच बदलैय लेल अहि धरा पर अवतरित भेलि। जतय ओऽ ठार भेली सब हुनकर थोपरी बजा समर्थन केलैथ।आब समाजक रूप रेखा बदैल रहल अछि।नोनियैल देबाल ढ़ैह रहल अछि।

दीदी सबसँ पहिने आकाशवाणी रेडियो सँ प्रसारित नाटक द्वारा अपन कैरियरक शुरुआत केलैथ। हिनकर सफलताक मूल आधार आकाशवाणी रेडियो छल।अतैय सँ हुनका अनेको मंच पर मंचनक अवसर प्राप्त भेल। दीदी अनेको नाटकक मंचन केलैथ जहि मऽ रुक्मिणी नाटक जे पंडित गोविन्द झा द्वारा रचित अछि दीदी अहि नाटकक 17 शो केलैथ । हिनका द्वारा अभिनित प्रसिद्ध नाटक कऽ नाम तँ बहुत अछि पर ओहि मऽ सँ जे अखनो सभहक सोझाँ ठार भऽ जैत अछि ओऽ नाटक अछि- सुनू जानकी, भफाइत चाहक जिनगी,पहिल सांझ,पाचक,मनुक्ख, अंतिम प्रणाम आदि। बाल्य कलाकारक माध्यम सँ बाल्य नाटक मऽ हिनकर योगदान सेहो अतुल्य अछि। राष्ट्रिय पुरस्कार सँ सम्मानित मैथिली सिनेमा *मिथिला मखान* मऽ माँ के पात्र मऽ हिनकर अभिनय पाठकक मनक अतल गहराई में अनंत काल तक घुसल रहल। तहिना भोजपुरी सिनेमा *दुल्हा गंगा पार* में सेहो हिनकर अभिनय सराहनिय अछि। * सांचि पिरितिया* धारावाहिक में हिनकर अभिनय के बिसैर सकैत अछि। मैथिली, भोजपुरी सँ लऽ हिन्दी सिनेमा * दामुल* संगे अनेको सिनेमा मऽ सेहो अपन अभिनय सँ श्रोताक प्रिय कलाकारक सुचि मऽ अपन नाम स्थापित कैली।

हिनकर तीन टा पोथी सेहो प्रकाशित अछि।जहि मऽ

१. शेखर प्रसंग (शोध पत्र)

२. ओऽ दिन ओऽ पर(संस्मरण)

३. एकटा छलि सिनेह (कथा संग्रह)

वर्तमानमे *सांध्य गोष्ठी* 2008 में शुरु भेल ई पत्रिका जे अन्यतकालिन अछि ओकर संपादक छैथ। भंगिमा पत्रिका कऽ किछ दिन सेहो संपादन केने छैथ आऽ चेतना समिति पटना सँ जुड़ल अछि। अखनों मिथिला मैथिली कऽ सेवा मऽ समर्पित छैथ।नव पीढ़ी लेल हिनकर संघर्ष आ अपन कर्मक प्रति निष्ठा बाट देखा रहल अछि।

-मुन्नी कामत- संपर्क-दिल्ली

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.६.जया झा- हमरा लेल प्रेमलता दी

जया झा

हमरा लेल प्रेमलता दी

प्रेमलता मिश्र हमरा लेल एक अनजान शख्स छलीह।

हम विद्यापति भवन विद्यापति प्रोग्राममे गेल रही। हम हॉलमे पहुँचलहुँ तँ अपन संगी-साथी सबकेँ ताकए लगलहुँ, ओ (प्रेमलताजी) हमर बगलमे बैसल छलीह ,ओहि समय खाना केर बेर भऽ गेल छल। तँभ प्रेमलता दीदी बड़ प्रेमसँ कहै छथि, पहिले खा लिय, संगी-साथी भेटि जेतीह। हमहूँ खाना लऽ कऽ एलहुँ, आ हुनके बगलमे खाए लगलहुँ। फेर हमरासँ हमर नाम, हमर बाबूजीक नाम, गाम-घर सब पुछलथि। ओकर बाद हम हुनका लगसँ विदा भऽ कऽ प्रोग्राम देखऽ लगलहुँ। हम घर आबैत काल एकटा पत्रिका किनलहुँ "मैथिली अकादमी पत्रिका"। घर आबि कऽ जखन पढ़ै छी, तँ हुनको बारेमे लिखल छल, तखन बुझलहुँ जे हमरा कतेक नमहर शख्स आ कतेक स्नेहिल व्यवहार केर लोक भेटल रहथि। ई 2020 केर बात अछि। फेर आब तँ जखन भेंट होइत छी, हुनकर आशीर्वाद जरूर लै छी।

संयोगसँ ओ कंकड़बागमे रहै छथि, आ हम राजेन्द्र नगरमे जे हमर घरक नजदीक अछि। हिनक प्रारम्भिक रंगमंचीय जिनगीमे "टुटैत लोक", "लेटाइत आँचर" आदिमे हिनक अभिनय बड़ प्रशंसा भेटलनि। 1981 मे मैथिलीक पहिल फिल्म "ममता गाबय गीत" मे विधवा भाउज केर भूमिका केलथि। फेर "सस्ता जिनगी महग सेनूर" केलथि। डी डी पटना के लेल प्रमोद चौधरी द्वारा निर्मित धारावाहिक "पर्व भरा मिथिला", शिव पूजन सहाय केर देहाती दुनिया मे काज केलथि। मैथिली फिल्म ललका पाग लेल पहिल बेर कांट्रेक्ट साइन केने छलथि। राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारसँ सम्मानित मैथिली फिल्म "मिथिला मख़ान" मे हीरो केर माय बनल छलथि। अभिनयक संग प्रेमलता मिश्र दी सुपरिचित साहित्यकार सेहो छथि। हिनक रचना बहुत रास पत्रिका सबमे प्रकाशित भेल छनि। महिला रंगकर्मीक रूपमे प्रेमलता दी बहुत रास संस्था सबसँ जुड़ल छथि जेना कि भंगिमा,अरिपन, चेतना समिति, मैथिली महिला संघ आदि।

- जया झा- संपर्क-पटना

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.७.उषाकिरण खान- हमर बच्ची (प्रेमलता)

उषाकिरण खान

हमर बच्ची (प्रेमलता)

"एम.ए" मे रही आ रही जी.डी.एस होस्टल माने गणेशदत्त सिंह महिला छात्रावास जे पटना विश्वविद्यालयकेँ सब कॉलेज के वास्ते छात्रावासमे यात्री कका हमर लोकल गार्जियन रहथि। तखन ककाक डेरा रानी घाटमे रहनि। काकी रहै छलखिन तँ हमर ड्यूटी रवि दिन डेरापर आएब रहैक। एम.ए के छात्रापर पुछापूछीक संकट नै रहै। रात्रि विश्राम जँ बाहर करी तँ सूचना देबाक रहै। ओइ दिन जे गेलहुँ रानी घाट तँ काकी मेंही-मेंही सजमनि कटै छलीह आ लकड़ी बला चूल्हिपर लोहियामे जे लड़की दूध औंटै छलै से दूधे सन उज्जर छलै। हम काकी के गोर लागि ओहि ठाम धएल मचियापर बैसि गेलहुँ। ओ जारनि चूल्हिसँ बहार कऽ आँच कम केली आ आबि हमरा गोर लगली।

"मिनी यै, ई बच्ची छथिन, हिनकर भतीजी" काकी कहए लगलीह जे कोन आँगनक किनकर बच्ची सोझे-सोझ ममियौत रहथिन कि पिसियौत। तरौनी के प्रत्येक आँगनक चर्च काकी तेना करथिन हमरा लग जेना बुझाइ जे हमरो जन्म ओही ठाम भेल हो। ई गप्प जरूर छै जे जावत हमर अपन ममियौत हुनकर जेठ जमाए भेलनि आ सद्यः जाउत ननदोसि तावत हम सौंसे बड़की टोलक संबंधी के, के कहए, पोखरि-झाँखरि, बाड़ी-झाड़ी, गाछ-बिरिछ आ डिहबार धरिकेँ चीन्हि गेल रहियनि। कका-काकीकेँ नहि रहलापर जे गेलहुँ तँ

निपट सून तरौनीक उजड़ल-उपटल आँगन सभ कल्पनामे जीवंत भऽ गेल छल। "आ ई बच्ची छथि.." काकी हमर परिचय देती ताहिसँ पहिने बच्ची बाजि उठली "हम चीन्हि गेलियनि, ई मिन्नी बहीनि छथिन। अहाँ काल्हिसँ कतेक बेर कहलियै काकी जे रवि दिन मिनी औतीह।" बच्चीक चंचल स्वर हुनक उमेरि लायक छलनि। ओ पंद्रह-सोलह वर्षक रहथि आ हम बीस-एकैस के। बच्ची अपना पुत्रकेँ माए लग छोड़ि पटना पढ़ए आ जीवन आँगा बढ़बै के उद्येश्यसँ आएल छलीह। हमर बेटी सेहो हमरा माए लग छल, हम एम.ए करैत होस्टलमे रही। बच्ची हमरे जकाँ पितृहीन रहथि। हमर लोकल आ बच्चीक टोटल गार्जियन यात्री कका रहथिन। शोभाकांत, सुकांत, श्रीकामत, श्यामाकांत हमरा सभहक अनुज आ उर्मिल मंजुल बहिन। से सदा निमहल अछि। बच्ची मैट्रिक पास रहथि, मिसरजी बी.ए पास रहथिन। सुदर्शन, गंभीर युवक। किछु दिनुका बाद ओ एकटा पैघ किताबक दोकानमे काज केलनि। बच्ची कोनो स्कूलमे पढ़ेबा संगे इंटर, बी.ए, एम.ए आ पी.एच.डी धरि कऽ लेलनि। मिसरजी सेहो ट्रांसपोर्ट कॉर्पोरेशन केर स्थायी काजमे लागि गेलाह। बच्ची के दू टा आर पुत्र आ एकटा पुत्री अनुपमा भेलखिन। बच्ची एकटा घर पटनाक कंकड़बागमे अरजलनि। प्राथमिक, माध्यमिकसँ होइत इंटर स्कूलक शिक्षिका भऽ रिटायर केलीह। बच्चा सभ उच्च पदस्थ अधिकारी भेलनि। एतेक तँ प्राय: अध्यवसायी मैथिल कन्या कइए गुजरत। तखन एतेक टा विरुदावलीक की अर्थ? आ कका यात्रीजी, काकी अपराजिता देवीक आशीष कोना फलित होइत? बच्चीक माँ जे छलखिन से कहियो-कहियो रहिकासँ अबथिन। हम आइ धरि ओहि काकीसँ सुन्नरि-सलज्ज स्त्री नहि देखलहुँ। ओइ निराभरण स्त्री के मुखमंडल तेजोमय बुझाइ छलै। हमर स्वयं मात्रिक आ सासुर सभक लड़की-स्त्री, वृद्धा अपरूप रहथि मुदा काकी सन नै। काकी के जीवन छोट रहनि। बहुत जल्दी चल गेलीह।

हम आकाशवाणीमे कविता पाठ करए सन् १९६० सँ जाए लागल रही। बच्ची १९६५ मे कका केर कहलासँ आकाशवाणीमे मैथिली नाटकमे भाग लेबए लगली। से ततेक नीक जकाँ मनोयोगसँ करए लगलीह कि कइएक बेर एंकरिंग आ प्रसारण सेहो करथि। आस्ते-आस्ते जखन मैथिली नाटक पटानमे मंचपर आबए लागल, तखन बच्ची मंचपर उतरि गेलीह। मंचपर सभसँ पहिने आदरणीय सुभद्रा झा (हरिमोहन झाजीक धर्मपत्नी आ राजमोहन झाक माँ) उतरल रहथि स्वल्प का लेल रेकार्ड मुदा भेलनि आ ओ प्रेरणा से भेलखिन। समय आगाँ बढ़लै, मुदा नुक्ताचीनी, मीन-मेख तँ निकालले जाइत छै। तइसँ की मिसरजीक उदार मोन आ यात्री ककाक -काकीक संग सब बाधा खारिज केलकै। हमरा सन लोक समर्थनमे रहबे करी। हम स्वयं मंचपर कका संगे कविता पढ़ए बिहारक अनेक नगरमे संग जाइ।

बच्चीमे अभियनक गजब के प्रतिभा रहनि। बच्चीक दुआरे लोक अपन बेटीकेँ नाटक करए देथिन। मैथिलीमे महिला कलाकार आगाँ जे एलीह तकर सोझे श्रेय हिनकहि देल जेतनि। हमर बेटी सभक आदिगुरू मंचपर बच्ची मौसी रहथिन। मैथिली मंचक सतत सतत अभिनेत्री बच्ची कुशल संगठनकर्ता सेहो रहलीह। अरिपन नामक नाट्य संस्थाक संग छलीह। भंगिमा नामक नाट्य संस्था प्रारंभ केलनि, परवान चढ़ौलनि। मैथिली-भोजपुरी सिनेमा सभमे बच्ची एक टा विशिष्ट अंश छथि। "ममता गाबय गीत" सँ लऽ कऽ मिथिला मखान धरि।

बच्ची यानी प्रेमलता मिश्रा कुशल समाजिक कार्यकर्ता रहलीह। चेतना समीतिमे शुरुएसँ सक्रिय रहलीह एवं आइ उपाध्यक्ष छथि। चेतना समीतिक महिला शाखा के रूपमे कतेक दिन काज केलीह। फेर मैथिली महिला संघक फांउडर मेंबर सेक्रेटरी रहल छथि। आइ धरि सक्रिय छथि।

बच्ची साहित्य केर अनन्य प्रेमी केएक ने रहतीह, यात्री ककाक किछु तँ प्रभाव रहतै। कतेक पोथी बहराएल छनि। सांध्य गोष्ठी नामक अनियतकालीन पत्रिका प्रकाशित करैत छथि, सहजहिं गोष्ठी होइत छनि। कतेक बालक-बालिकाकेँ रस्ता देखेलनि बच्ची बिनु कोनो श्रेय लेने। समाजचेता, संस्कृतिचेता,साहित्यानुरागी बच्ची सन निरंहकारी, निर्लोभी स्त्रीक बलपर आधुनिक मिथिला चलै छै। एहने लोकक तँ काज छै। हमर सभक ई जोर नहि चलि रहल अछि हिनका भारत सरकारक संगीत नाटक अकादेमीक पुरस्कार देबा लेल अथवा एकर प्रतिनिधि चुनबा लेल। जँ ओ चुपचाप अपना कर्तव्यपथपर चलैत जा रहल छथि तँ दायित्व छै मैथिलजनक कि हिनका लेल अवाज उठाबथि।

एहन अपना छोट बहिन बच्ची के कोटिशः आशीर्वाद।

- उषाकिरण खान- संपर्क-पटना

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.८.हितनाथ झा- ओ दिन ओ पल : प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

हितनाथ झा

ओ दिन ओ पल : प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

बात कोनो बहुत पुरान नहिं ,इएह 1961क , मात्र उनसठि वर्ष पूर्वक। एक गामक स्कूल छात्राक माँ-पिताक अनुमति भेटलाक बादो ,शिक्षकक प्रोत्साहन आ मार्गदर्शनक अछैतो , ओहि छात्राक पिताक मना कयलोपर ,गामक लोकक एक बिचार होयब आ शिक्षक लोकनिकेँ मारि-पीट करबाक हेतु एक जुट भय जमा होयबाक बात जखन कानोकान स्कूल तक आयल तँ ओहि अबोध किन्तु नाट्यमंचन हेतु तैयार बालिकाकेँ बिना नाटक खेलबेनहिं , विद्यालयक पछुआर बाटें गामपर पहुँचा देल जयबाक घटना ,ओहि बालिकाक मन मस्तिष्कपर कतेक प्रभाव पड़ल हेतैक ,से स्वतः अनुमान लगा सकैत छी। बात ई भेल रहैक ,जे पहिने नाटकमे महिलाक पात्रक मंचन पुरुष कलाकार द्वारा कराओल जाइत छल ,किन्तु ओहि बेर ओहि बालिकाक प्रतिभा आ कलाक प्रति समर्पणकेँ देखैत ,प्रधान शिक्षक चन्द्रिका प्रसाद ई निर्णय लेलनि जे एहि बेर महिलाक पात्र महिलेसँ मंचित कराओल जायत।

ओ बालिका कियो आन नहिं ,मैथिलीक चिर-परिचित रंगकर्मी ,सैकड़ो नाटक तथा अनेक मैथिली ,हिन्दी, भोजपुरी, फीचर फिल्म ,टेलीफिल्म आ धारावाहिकमे अभिनय कयनिहारि ,रेडियो नाटकमे सहभागी ,अनेको महिला कलाकारकेँ प्रोत्साहित कय मंचपर अननिहारि ,स्वभावसँ सरल,सहज ,कतिपय साहित्यिक ,सांस्कृतिक ,नात्यसंस्थाक निवर्तमान आ वर्तमान पदाधिकारी डॉ0 प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'।

पटनाक एक दिनक प्रवासक क्रममे आइ अपन मित्रक ओहिठाम एक किताबपर ध्यान गेल ,एकहि बैसकमे पढ़ि लेलहुँ ,से स्मरणक छल ,नाम *ओ दिन ओ पल *,लेखिका प्रेमलता मिश्र प्रेम। 2005क प्रकाशन। 15 वर्ष पुरान किताब रहितो हमरा एक कलाकारक संघर्षक कथाक स्मरण एतेक ने आकर्षित कयलक ,संगहि शीर्षस्थ कलाकारक ई स्वीकारब जे बिना रिहर्सलक नव कलाकारक संग नाट्यमंचन उपयुक्त नहिं ,से भारी मनसँ अस्वीकार कयलनि ,मैथिल समाज रहिकाक प्रस्ताव। लेकिन ओ पल हुनकर जीवनक कतेक महत्वपूर्ण छल रहल होइतनि ,जतय अपनहिं नैहरमे , अपन स्कूलसँ पाछूक दरवाजा होइत पठा देल गेल छलनि ,ओतहि विशाल मंचपर उद्घाटन करबाक अनुरोधकेँ स्वीकारैत दौड़ल-दौड़ल दुसाधटोली होइत मंचपर अयलीह आ उद्घाटन भाषण देलनि।

हिनक अभिनय कतेको बेर देखने छलियनि ,पहिल बेर ओकर आँगनक बारहमासासँ लय जे 1973मे चेतना समिति पटना द्वारा मंचित भेल छल आ पहिल महिला कलाकार रूपमे अभिनय कयने छलीह।

स्वाभाविक अछि ,नाटकसँ जुड़ल रहबाक कारणसँ अधिकांश संस्मरण एही विभागक लोकसँ हेतनि ,किन्तु से नहिं ,ई नीक कथाकारो छथि,संपादको छथि ,संगठनकर्मी सेहो छथि ,वृत्तिएँ शिक्षिका सेहोआ सर्वोपरि समर्पित

गृहिणी। एक संग एतेक कार्यक सफल संपादन कोना कय लैत छथि ,से किछु झलक तँ एहि पुस्तकमे भेटिये जैत।

खण्ड-खण्डमे अपन रंगकर्मीक रूपमे यात्राक वर्णन,संगहिं नव महिला/पुरुष कलाकारकेँ एहि दिस आकर्षित करब आ मातृवत ओकर भविष्यक विषयमे सोचब ,तकरहि प्रतिफल अछि पटना आ आनो शहरक एहि रूपमे अनेको नाट्य संस्था आ अनेको प्रतिष्ठित कलाकार।

श्री विभूति आनन्दक बेर-बेर आग्रह आ पीठियाठोक तगादा पर ई संस्मरण लिखलनि अछि ,से बेर-बेर स्मरण करबैत छथि आ नाटकक बहन्ने अपन संघर्षक कथा तँ छनिहें ,उपकारक आभार प्रदर्शन सेहो अछि ,ओना ई इहो कहैत छथि ,उपकारक कृतज्ञता तँ मोनक वस्तु छैक ,प्रकटक नहिं।

यात्रीजी हिनकर कक्का। कक्काक हिनका प्रति स्नेह,1964मे ई पटना अयलीह। यात्रीजीक आशीर्वाद हिनका सदत भेटैत रहलनि ,हिनक प्रतिभाकेँ ओ चीन्हि ,हिनका बहुत प्रोत्साहित केलखिन ,अपना संग कतेको ठाम लय गेलखिन ,से श्रीमती प्रमिलाजी बहुत छोट संस्मरणमे बहुत नव बात कहलनि अछि।वीकर सेक्शन के दुर्बल झा पाँजि कहि हास्यक पुट सेहो कतौ -कतौ अछि।

हरिमोहन बाबूक संग हिनक सान्निध्य सेहो रहल ,ओहो पारिवारिक। सुख-दुःख सभमे। हरिमोहन बाबू जीवन आ साहित्यमे बहुत भावुक छलाह। जे हुनका संग रहल अछि ,हुनका संग गप्प कयने अछि ,हुनकर विषयमे कनेको जनैत अछि ,सभक मानस पटल पर ई अंकित हेबे करत।कोनो छोटो बातपर हुनका आँखिसँ नोर खसय लगैत छलनि। मुदा जखन महिलाक

सशक्तिकरणक बात साकार होइत देखैत छथि ,तँ नोर खसब कोनो अप्रत्याशित नहिं ,से सभ भेटत एहि संस्मरणमे ,जीवन पक्षक बेसी।

कोनो नाटककार ,यदि ओ नव नाटकक सृजनमे ओकर ध्यान कोनो नायक/नायिकपर केंद्रित भय कय लिखबाक हेतु प्रेरणा होइत हो ,तँ ओहि नायक/नायिकाक कलाक प्रति समर्पण बुझि सकैत छियैक ,आ से बुझबैक सुधांशु शेखर चौधरीक विषयमे हिनक संस्मरण देखि। जहिना कोनो नाटकक मंचनमे शीत-ताप सभ अबैत छैक ,तहिना हिनकर संस्मरणमे कला पक्ष आ जीवन पक्ष सभ समेटल भेटि जायत ,जीवनक सभ गति-नियति देखि सकब।

देखि सकब इहो, पंडित जयनाथ मिश्र व्यक्ति नहिं,एक संस्था छलाह ,हिनको विषयमे पढ़ि ,एक झलक तँ लागिये सकत।

नाटक आ पंडित गोविन्द झा ,हिनका लेल सभ दिन मोन रहतनि। जाहि नाटक मंचनसँ हिनका रोकि देल गेल रहनि रहिकामे , ओकर लेखक छलाह पं.गोविन्द झा आ नाटक छल "बसात"। ओ बसात तँ ओहि ठाम कनेक काल लेल रोकि देल गेल छल ,मुदा सिहकैत बसातकेँ के रोकि सकैछ ! से बसात तेना ने सुगंधित रूपमे बहैत पसरल, से सम्पूर्ण मिथिलामे मीलक पाथर गाड़ि देल। नाटकक चर्चा ,विकासक इतिहास ,महिला कलाकारक बढ़ैत डेग ,सभमे एक टा मजबूत खम्भा ,जकरहि इर्द-गिर्द आ ओकरहि संबल आ आदर्श मानि चलैत अछि ओ नाम थिक प्रेमलता मिश्र प्रेम। पं. गोविन्द बाबूक आशीर्वाद हिनका जे भेटलनि आ एखनो भेटैत छनि ,सभ भेटि जायत एतय।

पं. त्रिलोचन झा ,श्री कान्त मण्डल ,रंगकर्मी प्रमिलाक आ प्रेमलताक बढ़ैत नाटकक रुचिमे कोन रूपेँ ई लोकनि मनमे रचल-बसल छथिन ,कोना सहायक भेल छथि ,नीक -बेजाय सभ भेटत हिनकालोकनिक अनुभवक प्रसंग।

ई पुस्तक 15 वर्षक पहिलुक थिक ,एकर बाद हिनकर संस्मरण अयलनि अछि कि नहिं ,हमरा नहिं पता ,जँ अयलनि अछि तँ हमरा पढ़बाक लेल रुचि जागृति करैत अछि आ यदि नहिं तँ एहि निवेदनक संग जे एक पाठकक बिनती मानि अपन पैघ अन्तरालक विषद संस्मरण लिखथि ,जाहिसँ आगूक पीढी हिनक सहृदय व्यक्तित्व ,कठोर अनुशासन ,नाटकक तँ सहजहिं ,मिथिला-मैथिलीक लेल समर्पण ,अनेको अक्षर-पुरुषक अशीर्वादक सौभाग्य प्राप्त श्रीमती प्रेमलता मिश्रजीकेँ जखन-जखन लोक पढ़त ,तँ ओकरोमे उत्साह बढत ,जीवनक लेल ,संघर्षसँ लड़बाक लेल आ समाजकेँ एक नव दिशा देबाक लेल।

अनेको सम्मानसँ सम्मानित छथि ,मुदा सभ सम्मानसँ भारी एखन इएह पड़ैत छथि। हिनका जहिया 26 जनवरीकेँ सम्मान घोषित हेतनि ,तहिये मिथिलाक अभिनय सम्मानित हैत ,ओही विश्वासक संग सुदीर्घ जीवन सक्रियताक सहित माँ जानकीसँ प्रार्थना।

--हितनाथ झा-संपर्क-09430743070

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.९.शुभनारायण झा- मैथिली रंग मंच के पितामही प्रेम लता मिश्र 'प्रेम'

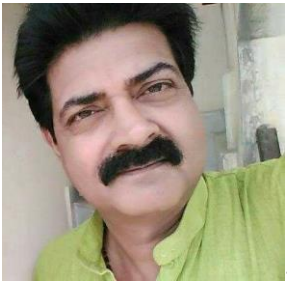**शुभनारायण झा**

मैथिली रंग मंच के पितामही प्रेम लता मिश्र "प्रेम"

मिथिला क्षेत्रक प्रत्येक नर नारी प्राकृतिक रूपसँ कला केर कोनो ने कोनो प्रारूपमे जन्मजात कलाकार होइते अछि जाहिमे चित्र कला, संगीत कला, शिल्प कला, नाट्य कला इत्यादि प्रमुख अछि। ओना तँ मिथिलाक कोनो एहन गाम ने भेटत जाहि ठाम रंगकर्मसँ जुड़ल गतिविधि नै हो। नाच, नाटक गाम गाममे आयोजित होइते अछि। संवाद प्रधान, किर्तनिया शैली आ नाच शैली के विभिन्न प्रारूप जेना अल्हा रुदल, सल्हेश, शीत बसन्त, लोरिक इत्यादि। किंतु दुर्भाग्य ई छल जे रंगमंचपर नारीक भागेदारी नै जकाँ रहल। किछु आर्केस्ट्रा सबमे गीत नृत्यमे नारी कलाकार सब उपस्थिति होइतो छल तँ सामाजिक प्रतिष्ठा के क्षेत्रमे उचित स्थान नै देल जाइत छल। आ तें पुरुष कलाकार नारी चरित्र निमाहैपर मजबूर होइथ। ओना तँ कलाकार होमक नाते नारी चरित्र निमाहैमे अनुचित त नै छल किंतु राष्ट्रीय आ अंतरारष्ट्रीय रंगमंच के समक्ष मैथिली रंगमंचक ई मजबूरी पिछड़ल स्तर के द्योतक छल। ताहि समय मैथिली रंगमंचपर 8 सालक उम्रमे रहिका मंचपर उदित भेल छली अभिनेत्री प्रेमलता मिश्र प्रेम।जे बादमे पटनाक मंचसँ लगातार अभिनय करैत रहलथि।

सज्जन सुशील मृदुभाषी आ सुंदर रूप के अभिनेत्री प्रेमलता जी लग मुख्य रूपसँ शिक्षिकाक रोजगार रहलनि आ अभिनय कला के प्रति अतीव समर्पण। पतिक भरपूर समर्थन आ सहयोगसँ हुनक हिम्मत मिथिलाक आन नारीमे जबरदस्त प्रेरणा के संचार केलक। परिणामतः बहुत रास मैथिल महिला आ धीया सब ऐ क्षेत्रमे आगू एली जकर परिणाम ऐ जे वर्तमानमे मैथिली रंगमंचपर शहरी क्षेत्रमे महिला कलाकार केर कमी नै अछि। हँ गमैया मंच एखनहु अभावमे अछिए।

एहन बात नै छै जे ओ धप दऽ एली आ किछु तपस्या नै केली! मैथिली रंगमंच के सक्रिय रखबाक लेल जाड़मे,बर्षामे कि प्रचंड गर्मीमे पएरे चलि कऽ घरे-घर चंदा लेनायसँ लऽ दर्शक के अरियाइत कऽ हॉल तक लाबएमे ओ सतत लागल रहथि। मृदुल स्वभावक प्रेमलता जी ओना तँ भंगिमा रंगमंचसँ जुड़ल रहथि मुदा मैथिली नाटक हेतु पटनाक निर्देशकक पसंद के कलाकार छथि। ओ बात अलग जे पटनामे शिक्षिकाक नौकरी चलते देश के अन्य मंचपर सक्रिय नै देखल जाइ छथि।

मैथिली नाटक हुनक जीविका नै रहनि अपितु ओ एकरा एक आंदोलन के रूपमे सदैव मैथिली रंगमंच के अंतराष्ट्रीय पहचान हेतु क्रियाशील रहली। एखन धरि कतेक मंचन कऽ लेली तकर गणना हुनकोसँ संभव नै छनि। मैथिली फिल्म "बबितिया' संग कार्य करबाक अवसर भेटल। फुर्सतमे पुछलियनि दीदी कतेक मंचन कऽ लेने हेबै? त कहली ' यौ शुभनारायण जी! जे कऽ लियै ओ पाछू भऽ जाय आ हम पिछला बिसरि कऽ आगू के काजपर लागि जाय तँ यादो रहत तहन ने किछु कहब? " तहिना नाट्य प्रेमी दर्शक के सेहो हृदयमे बास करै छथि ओ। समस्त नवतुरिया के 'माँ ' आ परिपक्व के द्वारा आदरसँ 'दीदी' के संबोधनसँ सतत संबोधित प्रेमलता जी के अतिथ्य

प्रेम विलक्षण। 1985 के पटना प्रवास के समय 'अरिपन' नाट्य संस्था द्वारा आयोजित अंतराष्ट्रीय मैथिली नाट्य महोत्सवमे भंगिमा के प्रस्तुति "असगर असगर "मे जखन युवावस्थामे ७० बरखक वृद्ध महिला के अभिनय देखने छी जे ओहिना एखनहु जीवंत नजरिक सोझा अछि। नाटकमे अभिनय के संग हुनक पहिला सुपरहिट मैथिली सिनेमा "सस्ता जिनगी महग सिंदूर"मे माता के भूमिका के खूब पसंद कैल गेल। किछु वर्ष पूर्व मैथिलीक पहिल राष्ट्रीय पुरष्कृत फिल्म 'मिथिला मखान'मे हिनक भूमिका प्रसंसनीय छल आ हालाहिमे प्रदर्शित महिला सशक्तिकरण आधारित मैथिली सिनेमा 'बबितिया' के काफी प्रसंसा कयल जा रहल अछि जाहिमे ओ केंद्रीय भूमिका दादी केर निमाहि चर्चामे छथि।

ओना तँ ओ विभिन्न मैथिलीक सामाजिक संगठन केर जिम्मेवार पदसँ कियाशील छथि आ साहित्यमे सेहो बहुत रास काज करैत त्रैमासिक मैथिली पत्रिका तक संपादित करैत छथि। घर के बाल बच्चा के जिम्मेवारी निमाहैत आब पोता पोती तक हिनके संग सटल रहैत छनि। एक मैथिल महिला द्वारा अपन भाषा के प्रति एतवा अनुराग देखवामे नहि आवैत अछि। खाँटी मैथिल संस्कृतिमे जीवन जीवैत तीन पीढ़ी के कलाकार संग काज करैत मैथिली रंग पटलपर हिनक सक्रियता के चालि एखनो झटकारल देखबामे आबि रहल अछि आ से देखि कखनो ई बुझबामे संदेह नै जे ओ चारिम पीढ़ी संग काज करैत नजर नै औती।

मैथिल संस्थामे संलगन एक्कहु टा मनुक्ख एहन नै भेटत जिनकासँ जुड़ल कोनो विवाद नै हो मुदा हमरा जनैत प्रेमलता जी ओहि अवधारणा के गलत सिद्ध करैत एहन महिला छथि जे आजीवन चेतना समिति, मैथिली महिला संघ, भंगिमा आदि संस्थासँ जुड़ल तँ रहली किंतु निर्विवाद रहली। सर्वप्रिए आ सर्वत्र आदर पाबैत रहली।

मैथिली नाटक, साहित्य आ मैथिली समाजिक आंदोलनमे बढ़ल-चढ़ल सेवा दै वाली एखनहु तक प्रयासरत महिला कलाकार के मैथिली रंग जगतक पितामही कोना ने कही?

- शुभनारायण झा- संपर्क-दिल्ली

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१०.विभा रानी- 'रंगमंच मे राजा किओ नहिं होइत छै'

विभा रानी

'रंगमंच मे राजा किओ नहिं होइत छै'

'के कहय कमजोर छें, अप्पन कन्हा मे जोर छौ, तरहत्थी मुंहजोर छौ.....'

राष्ट्रीय पुरस्कार स' सम्मानित फिल्म 'मैथिली मखान'क हमर लिखल एक टा गीत 'माटि कोड' रे बौआ....' स' लेल ई लाइन मैथिली रंगमंचक सशक्त हस्ताक्षर, मैथिली नाट्य विधाक धरोहरि डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' लेल बहुत समीचीन बैसै छै.

मैथिली रंगमंचक आन बान आ शान बनल मैथिली समकालीन रंगमंचक प्रारम्भिक काले स' स्त्री पात्रक रिक्ति कैँ अपन उपस्थिति स' भरयवाली मैथिली रंगलोकक वरिष्ठतम रंगकर्मी, लेखिका, सम्पदक, शिक्षक आ सिनेमाक स्क्रीन पर 'ममता गाबय गीत', 'दुल्हा गंगा पार के', 'पिंजरे वाली मुनियाँ', 'सस्ता जिनगी महग सेनूर', 'ललका पाग', 'मिथिला मखान', 'बबितिया' आदि सिनेमा मे अपन सहज, स्वाभाविक अभिनय स' आन लेल पर्याय बनल डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' मैथिलीक एकटा रंगकर्मी बनि मैथिली रंगमंच के बिकट परिस्थिति में सहेजि क' आगां बढैत गेलीह, अहि रंगयात्राक वर्णन कागज पर केनाइ असम्भव त' नहिं अछि. हं, जिनगी मे उतारल मुश्किल अवश्य छै.

जाहि समय मे महिला सभ के घर स' निकलब मुश्किल रहै, ताहि समय में डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' रंगमंच के अपन कला सहित अपन धर्म-कर्म मानि समाजक सामने एकटा बड़ पैघ उदाहरण प्रस्तुत केलन्हि. अहि हिसाबें मैथिली रंगमंच में हिनकर अद्भुत एवं अमिट योगदान छै.

मैथिली रंगमंच मे दिक्कति सदिखन स' चलैत आएल अछि. ओना रंगमंच अपने मे दिक्कतिक दोसर नाम छियै. मुदा, मैथिली मे एखनो धरि ई एक गोट बहुत पैघ दिक्कति छै- महिला कलाकारक उपस्थिति. एहेन भीषण दुष्कालक समय मे सम्भवत: वर्ष 1975- 76 मे एक युवा मैथिली रंगमंचक भूमि पर उतरैत छथि. नाटक करैत छथि. हुनका एला स' मैथिली रंगमंच जेना अपूर्व प्रकाश स' प्रकाशमान होब' लागै छै. हुनका एला स' आन- आन लोक सभ के भरोस भेंट' लागै छै जे हमरो बहिन- बेटी सभ मैथिली रंगमंच मे जा सकैत अछि, नाटक क' सकैत अछि.

प्रेमलता जी अपने कहै छथिन्ह जे 'नाटक करैवाला सभ के धिया- पुताक परिवार के आश्वस्त कर' पडतै जे रंगमंच आ ओकर कार्य-व्यापार एक पारिवारिक गतिविधि जकां छै. तखने ओ सभ अपन धिया- पुता, खास क' धिया के पठेतन्हि रंगमंच लेल.' उषाकिरण खान कहै छथिन्ह जे 'हुनके कारण हमर सभ टा बच्चा सभ मैथिली रंगमंच मे उतरल.'

डॉ. उषाकिरण खान कहै छथिन्ह जे 'हम हुनक सभ टा नाटक देखने छियै. ओ एक टा 'एपीटोम' छथि.' उषा जी हुनका हुनक घरक नाम 'बच्ची' कहि क' सम्बोधित करै छथिन्ह. ओ कहै छथिन्ह-'बच्ची मैथिली रंगमंच पर 1974-75 मे एलीह. ताहि स' पहिने ओ रेडियो नाटक मे काज करैत छलीह. यात्री काका ओहि ठां ओ अबैत छलीह. मैथिली रंगमंच मे बच्ची अतुलनीय छथि. नहिं अभिनय, नहिं समर्पण मे हुनक परतर किओ क' सकै

छै. ओ अतुलनीय छथि आ ई उपलब्धि ओ अपना दम- खम पर हासिल केलीह.'

प्रेमलता जी जहन मैथिली नाटक कर' के आरम्भ केलीह, त' लगभग सभ टा नाटक मे ओ भाग लेलीह. 'काठक लोक', गाछ', आदि सहित गोविंद झाक 'रुक्मिणी हरण' सहित बहुत रास नाटक ओ केलन्हि. उषाकिरण खान लिखित 'चानो दाई', 'फागुन', 'भुसकौल बाला' मे ओ काज केलखिन्ह.

हमर अपन दुर्भाग्य रहल जे हम हुनक एक्को टा नाटक नहि देखि सकलहुं. जहिया- जहिया पटना गेलहुं, ओहि समय मे हुनक कोनो नाटक नहिं भ' रहल छलै. पहिने त' अजुका समय सेहो नहिं छलै जे नाटकक रेकॉर्डिंग भ' सकितियै अथवा यूट्यूब पर अपलोड क' दितियैक. मुदा हुनक स्वाभाविक अभिनय हम सिनेमाक माध्यम से अवश्य देखल.

2021 के मार्च मे जहन हम किरण सम्मान लेब' रहिका पहुंचलहुं, त' देखल जे आयोजन स्थल पर प्रेमलता जी बैसल छथिन्ह. पहिल बेर बड्ड प्रेम स' भेंट-मुलाकात भेल. आयोजने स्थल स' ओ अपन घर देखबैत कहलखिन्ह जे 'अही ठां हमर घर अछि.' ओहि सांझ भरि पोख गप्प भेल हुनका स'. हुनक रंगयात्राक मादे हुनके स' जानकारी भेंटल.

प्रेमलता जीक बड्ड स्पष्ट मनतब छै- 'पहिने त' अहां के अपना के बूझ' पडत जे हम की चाहै छी? आजुक लोक सभ लेल समय आ धैर्यक कमी छै. हमरा सभक समयक गप्प कनेक दोसर छलै. चेतना समितिक नाटक करैत काले हमरा सभ के दर्शकक अभाव कहियो नहिं रहल. मुदा आब छै. आब लोक आओरक सोझा मे बहुत रास विकल्प छै. बहुत तरहक सोशल मीडिया छै. तैं

आब हमरा सभ के दर्शक के जोडि क' राखबाक प्रयास कर' पडतै. आ ई समस्त रंगकर्मी के एकजुट भ' क' कर' पडतै. ई मात्र नाट्य निर्देशकक काज नहिं छै. अहुनो रंगमंच मे राजा किओ नहिं होइत छै. सभ किओ कर्मी होइत छै. तैं सभ के मिलि- जुलि क' प्रयास कर' पडतै.'

हम पूछबो केने छलियै जे 'आजुक युवा लेल परिस्थिति पहिने स' बेसी विषम छै. रोजगार कतहु नहिं छै आ नाटक मे त' रोजगार लगभग शून्ये सन छै.' प्रेमलता जी कहलखिन्ह जे 'एकरा लेल नाट्य कर्मी संगे समाज, संस्था, शिक्षण संस्था आदि सभ कें आगां आब' पडतै. रोजगारपरक रंगमंच लेल हमरा सभ के सोच' पडतै.'

प्रेमलता जी प्रयोगधर्मी छथि. नाटक मे मात्र नाट्यालेखेक मंचन हुअए, ओ एकरा स' कनेक आगां बढत कहै छथिन्ह- 'ई आवश्यक नहिं जे नाटकेक मंचन हुअए. एतेक रास कथा सभ छै. तकर मंचन भेला स' लोक आओर के सेहो पता चलतै ई कथा सभक मादे, कियैक त' सभ के पढबाक अपन-अपन सीमा छै.' हिंदी मे कथा मंचन मे सभ स' अग्रणी नाम देवेंद्र राज अंकुर जीक छन्हि. प्रेमलता जी सेहो हरिमोहन झा जीक कथा 'मर्यादा हरण' पर नाटक केने छलीह. हमहूं संजीव जी, भीष्म साहनी, टैगोर, रमणिका गुप्ताक कथा सभक मंचन केने छी.

किरण सम्मान आयोजन स' पूर्व अहिने छिटपुट रूप मे हुनका स' भेंट होबैत रहल. मुदा प्रणाम- पाती धरि सीमित रहल. किरण सम्मान आयोजन स' पूर्व हिनका स' एक बेर आओर हमरा भेंट भेल छल पिण्डारुच मे, जत' प्रभास कुमार चौधरीक जन्मदिन आ पुस्तक विमोचन आदि पर एक बहुत नीक आ पैघ दू दिवसीय प्रोग्राम प्रभास जीक धिया- पुता सभ मिलि क' आयोजित केने छलन्हि. हमहूं बजाओल गेल रही. बहुत मेही- मेही बजै छथिन्ह. ओ हमरा

स' गप्प केलन्हि, अपन पत्रिकाक मादे कहलन्हि आ रचनाक मांग केलन्हि. तकरा बाद मुंबई घूरि क' हमहूं बिसरि गेलहुं, हुनकरो कोनो फोन अथवा रिमाइंडर नहि एलै. 'सांध्य दर्पण' हम खूब नीक जकां देखल, जहन ओ एकर एक अंक ओ अपन 'मिनी दीदी' अर्थात उषाकिरण खान पर निकालने छलखिन्ह. तहन पता चलल जे ओ एतेक नीक सम्पादक सेहो छथिन्ह. हम ओहि अंक पर लिखबो कएल. अहि साल लिली जीक निधनक बाद हमरा लग फोन आएल छल हुनका पर लिख' लेल. तकरो लेल हम रचना पठाओल.

व्यक्ति जहन अपन चहुंमुखी विकास लेल साकांक्ष होइत छै त' हुनक विविध रूप देख' मे अबै छै. प्रेमलता जी मात्र नाटके धरि नहिं रुकलीह. ओ समय अनुसारे अपन अध्ययन सेहो जारी रखैत एम ए, पी एच डी केलीह, नौकरी केलीह. रंगमंच आ सिनेमा सेहो संग- संग चलैत रहलै. घर- परिवारक जिम्मेदारी त' सभ स्त्रीक एक गोट अभिन्न अंग छैहे. ई सिद्ध करै छै जे यदि अहां अप्पन कोनो लीक के संधान' लेल कटिबद्ध छी त' ओ मुश्किल भने भ' जाओ, असम्भव नहिं छै. आ ईहो सत्य छै जे एतेक रास काज कोनो स्त्रिए स' सम्भव छै.

प्रेमलता जी रंगमंच पर गप्प करैत एकर सर्वांगीण विकास पर गप्प करैत छथिन्ह. हुनक अनुसारे, 'रंगमंच एक सामूहिक प्रक्रिया आ प्रयास छै.' आजुक रंगमंच पर गप्प करैत ओ कहै छथिन्ह 'जे युवा वर्ग जहन लक्ष्य बना क' चलताह जे हमरा रंगकर्म करबाके अछि, फिल्म अथवा सीरियल मे जेबाक हमर उद्देश्य नहिं अछि, तहन रंगमंचक विकास हेबे टा करतै.'

हुनक कहब छै, 'जे जहिया ओ रंगमंच शुरू केली, ओहि समय में स्त्रिक लेल रंगमंच आ सिनेमा में अभिनय केनाइ बड्ड दुर्लभ छल. मुदा अपन जिद आ परिवारक सहयोग स' ओ पढ़ाईक संग-संग रंगमंच केनाइ कहियो नै छोड़लीह।'

अहि स' एक चीज त' बड्ड स्पष्ट रूपें दृष्टिग्चर होई छै- 'परिवारक सहयोग.' आई प्रेमलता जीक प्रशंसा मे जतेक विरुदावली गाबि लेल जाय, प्रेमलता जी लेल ई सभ धूरि समान हेतै, ई हमरा सहज विश्वास अछि. हुनका लेल अपन हेबाक उपलब्धि इयाहि हेतै, जहन मैथिलीक धिया सभ के रंगमंच, सिनेमा, गायन, नृत्य अथवा एहेने कोनो रचनात्मक काज लेल 'परिवारक सहयोग' भेंटतै. तहने हुनक 1975 से मैथिली रंगमंच लेल जगाओल अलख सार्थक हेतै. लोक आओर कहै छथिन्ह जे 'ओ चंदा मांगि क', भूंजा फांकि क', टोल-परोसक टिबोरी सुनियो क' ओ रंगमंच पर नव रेखा खिचैत रहलीह.' हम मनतब अछि जे भाई लोक! काज तहने होइत छै आ जहन काजक प्रति निष्ठा, समर्पण आ ईमानदारी रहै छै, तहन व्यक्तिक नाम हेबे टा करै छै. जीवित किम्वदंती अहिना लोक बनै छै- प्रेमलता जीक जकां.

फिल्म 'मिथिला मखान' क निर्देशक नितिन नीरा चंद्रा मानै छथिन्ह जे प्रेमलता जी 'The most talented artist' छथिन्ह. ओ लिखै छथिन्ह- '(She) is a thorough professional and very hard working actor.'

युवा रंगकर्मी आ मैथिली महिला एकल नाटक के बढावा देब' वाली सोनी नीलू झा कहै छथि जे 'रंगजगत मे योगदान हेतु जखन कोनो स्त्रीक गप होएत त' निस्संदेह प्रेमलता मिश्र जीक नाम सभसँ उपर आओत. खाम्ह छथि ओ मैथिली रंगकमंचक। ई गप हमर सभक नव पीढ़ी वा हमरो बला पीढ़ी मे बुझबाक बेस बेगरता अछि.'

सितम्बर मास (जन्म 29 सितम्बर,1948) मे हिनक जन्मदिन मनाओल गेल. सभ किओ हिनक गुणगान कएल. रंगनायिका, मां, देवी आर समस्त

स्तुति पढल गेल. 'जीवेत शरदः शतं शतम् सुदिनं सुदिनं जन्मदिनम्। विजयी भव सर्वदा जन्मदिनस्य हार्दिक शुभेच्छाः।।' क पाठ भेल.

सही छै. हेबाको चाही. डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' अपन समस्त जीवन मैथिली रंगमंच के सम्वर्धन मे लागल रहलीह. सामान्यतया ई देखल जाइत छै जे हम स्त्री सभ तुरंते दीदी, मां, दादी आदि पद स' शोभायमान होब' लागैत छी. सम्भवत: हम स्त्रीगण सेहो एकरा किछु सौकर्यजनित मानि लैत छी- एक गोट सिक्यूरिटी- भाव! आब किओ किछु नहिं कहत. मुदा हमरा नहिं लगैत अछि जे प्रेमलता मिश्र लेल दीदी आ आब मांक सम्बोधन बहुत मायने राखैत हेतै. हमरा लगैत अछि जे हुनका प्रेमलता जी कहलो संते ओ ओतबे सहज भ' क' रहतीह आ अपन काज करैत चलतीह. अंतत: की हम सभ आन ककरो कक्का, चाचा, बाउजीक सम्बोधन हरसट्ठे देब' लागै छियै?

आई फेर- फेर वएह गोल चक्कर पर जा क' हम रुकि जाइत छी, जे प्रेमलता मिश्रक जेना अपन युवावस्था मे मैथिली नाटक मे महिला कलाकार भीषण कमीक पूर्ति लेल उठि क' एलीह, तहिना हुनका दीदी, मां, दादी, रंगनायिका, देवी आदि स' सुशोभित कर'वाला से हम एक्कहि टा अनुरोध करब जे प्रेमलता मिश्र आ हुनका लेल देल गेल ई अभूतपूर्व विशेषण सभ लेल अपनो तैयार होथु आ अपना घरक माय, बहीन, बेटी, पुतौहु सभ के रंगमंच पर जाए लेल सहमति दौथु. हुनका लेल माहौल बनाबथु, जेना महाराष्ट्र मे होइत छै. हमर मित्र छलाह- विवेक भगत. ओ कहै छलाह-'माय- बाप अपन धिया- पुता के आंगुर पकडने हमरा लग ल' अबैत छथि. कहै छथि- 'राखि एकरा. आब जेना देखबाक छौ, देख एकरा, जे बनेबाक छौ, बना एकरा. हुनक ई विश्वास हमरा अहि धिया- पुता सभ के गढ' में मदति करैत अछि.' विवेक भगतक कहबक यथार्थ हम देखैत छियै जे मराठीक बाल कलाकार सभ सेहो एतेक सिद्धहस्तता स' अपन

प्रस्तुति दैत छथि, जे हमर वयस्क कलाकार सभ सेहो नहिं द' पबै छथि अनेको ठाम. अही समय मे सार्थक होइत छथि डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' सनक व्यक्तित्व बननाई आ ओकर दोसर- तेसर, अनत- अनत खेपक तैयारी मे लगनाई.

- विभा रानी-संपर्क-मुंबई

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.११.डॉ शिव कुमार मिश्र- मिथिलाक विदुषी परम्पराक अनुपम-स्तम्भ श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

डॉ शिव कुमार मिश्र

मिथिलाक विदुषी परम्पराक अनुपम-स्तम्भ श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

मिथिलाक सांस्कृतिक परम्पराक संरक्षणक दृष्टिसँ पछिला छह दशकमे एकमात्र मैथिलानीक नाम लेल जाइत अछि, ओ नाम अछि प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'। जाहि मैथिल समाजकेँ रूढ़िवादिता ग्रसित कएने जा रहल अछि ताहि समाजसँ जऽ कोनो स्त्रीगण उच्च शिक्षा लऽ रोजगार पबैत छथि ओ एकटा बड़ पैघ घटना होइत छैक। ताहूसँ पैघ ई होइछ जखन कोनो ललना रंगमंचमे भाग लैत छथि। ओना मैथिल स्त्रीगणमे शिक्षाक अद्भुत विकास भेलैक अछि। पैघ-पैघ पद-प्रतिष्ठा सेहो भेटलैक अछि मुदा मैथिल रंगमंचक लेल मैथिल कन्याक संख्या नगण्य अछि। पटनाक रंगमंच तऽ आओर फिफिया रहल अछि। पछिला किछु सालसँ तऽ आओर स्थिति नीचाँ जा रहल अछि। एहन वातावरणमे एकटा उच्च शिक्षासँ युक्त विदुषी जऽ अपन परम्पराकेँ उघने छथि तऽ ओ मैथिल समाजक लेल सौभाग्यक बात अछि।

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' श्रद्धेय यात्रीजी, पद्मश्री उषाकिरण खान, छत्रानन्द सिंह झा 'बटुक भाई' प्रभृति मिथिलाक कतोक पुरोधा लोकनिक सम्पर्कमे रहि पछिला कतोक दशकसँ एकटा दक्ष शिक्षिकाक रूपमे नेना-भुटका ओ रंगकर्मी सभक लेल प्रस्तुत छथि। मिथिलाक कोनो साहित्यिक वा सांस्कृतिक आयोजनमे जऽ ओ उपस्थित होइत छथि तऽ ओ पवित्र भऽ जाइत अछि। साहित्यिक आयोजन 'सांध्य-गोष्ठी' अनवरत हुनक आवासपर मासक अन्तिम शनिक साँझमे आयोजित होइछ। एहि गोष्ठीमे प्रसिद्ध साहित्यकार लोकनिक संगहि नवोदित साहित्यकार सभ जुटैत छथि। साहित्यक रसपानक संगहि हुनका हाथक बनाओल पनपियाईक सेहो आनन्द लेल जाइत अछि। समय-समयपर 'सांध्य-गोष्ठी' पत्रिकाक प्रकाशन सेहो होइछ। किछु विशेषांक सेहो प्रकाशित भेल अछि जे कोनो विशिष्ट साहित्यकारक व्यक्तित्व ओ कृतित्वपर आधारित अछि। संस्थानक पंजीकरणक लेल हुनक अद्भुत प्रयास रहल अछि।

कतोक साहित्यिक ओ सांस्कृतिक संस्थासँ सम्बद्ध प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' सन् १९६४ सँ आकाशवाणी पटनाक सम्पर्कमे छथि। आकाशवाणीक साहित्यिक ओ सांस्कृतिक गतिविधिमे सतत संलग्न रहैत ओ रंगमंचक एकटा पैघ स्तम्भ बनलीह। मैथिली रंगमंचक दृष्टिसँ हुनका अलावे दोसर कोनो मैथिलानीपर दृष्टिपात नहि होइछ जे एतेक समर्पित भावसँ अपन जीवन एहि पाछू उत्सर्ग कऽ देने होथि।

आकाशवाणीक नाटक, वार्ता, कथा ओ कम्पीयरिंग प्रभृतिमे हुनक सहभागिता रहल तऽ १९७३ सऽ एखन धरि रंगमंचपर सैकड़ो मैथिली नाटकक विभिन्न भूमिका सभमे हुनक सक्रिय सहभागिता रहल। सन् १९८१ मे रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा निर्मित ओ निर्देशित पहिल मैथिली सिनेमा 'ममता

गाबय गीत', प्रकाश झा द्वारा निर्मित हिन्दी सिनेमा 'दामुल', हिन्दी टेलीफिल्म 'कथा माधोपुर की', दूरदर्शनक हिन्दी धारावाहिक 'चौपाल', प्रमोद कुमार चौधरी द्वारा निर्मित एवम् निर्देशित 'पर्व भरा मिथिला', हिन्दी टेलीफिल्म 'मर्यादा', 'जहाँ चाह वहाँ राह', 'बारह बीघा', 'देहाती दुनियाँ', मैथिली धारावाहिक 'नैन नै तिरपित भेल', राजेश कुमार द्वारा निर्मित भोजपुरी दूरदर्शन धारावाहिक 'साँची पिरितिया', लक्ष्मण शाहाबादी द्वारा निर्मित ओ राजकुमार शर्मा द्वारा निर्देशित भोजपुरी फिल्म 'दुल्हा गंगा पार के', प्रमोद शर्माक भोजपुरी फिल्म 'बबुआ हमार', अरबिन्द रंजन दास द्वारा निर्देशित ओ निर्मित 'पिंजड़े वाली मुनियाँ', मैथिली फिल्म 'सस्ता जिनगी महग सिनूर' ओ 'मिथिला मखान' प्रभृति कतोक फिल्म ओ धारावाहिकमे हुनक अभिनय भेल अछि।

मिथिला ओ मैथिलीसँ सम्बन्धित कतोक संस्थाक संस्थापक तऽ कतोक संस्थानक सक्रिय सदस्या छथि प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'। हिनक साहित्यिक ओ सांस्कृतिक सक्रियता हिनका एकटा संस्थानक रूपमे स्थापित कए देने अछि। चेतना समिति, भंगिमा, अरिपनक संगहि पटना ओ आन-आन स्थानक संस्थाक लेल हिनक सक्रिय सहभागिता रहल अछि तऽ मैथिली साहित्य संस्थानक कोनो विद्वत् संगोष्ठी प्रेमलताजीक सहभागिताक बिना अपूर्ण रहैछ। चेतना समितिक उपाध्यक्षक रूपमे हिनक जिम्मेदारी बेसी बढ़ि गेल छल, प्रत्येक कार्यकलापमे बढ़ि-चढ़ि कऽ सहयोग देबाक लेल सदिखन उपलब्ध रहैत छलीह।

वर्तमानमे सेहो कार्यकारिणी समिति ओ कतोक आन-आन समिति एवं निर्णायक मण्डलमे हिनक सहभागिता बनल रहैछ। 'मिथिला मखान' नामक सिनेमाकेँ राष्ट्रीय सम्मान भेटल छल ताहिमे प्रेमलता मिश्रजीक अभिनय सेहो भेल छल। मैथिली साहित्य संस्थान, पटना द्वारा एकटा विशेष कार्यक्रम

आयोजित कए ओहि सिनेमाक कलाकार श्रीमती 'प्रेम'केँ सम्मानित कएल गेल छल। एहि कार्यक्रममे प्रख्यात साहित्यकार पद्मश्री उषाकिरण खान द्वारा प्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रोफेसर हेतुकर झाक अध्यक्षतामे हिनका सम्मानित कएल गेल छल। २८ मई २०१६ कऽ बिहार रिसर्च सोसाइटीक सभागारमे ई कार्यक्रम आयोजित भेल छल जाहिमे ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक कुलपति प्रोफेसर साकेत कुशवाहाक अलावे प्रो. लेखनाथ मिश्र, पंचानन मिश्र, छत्रानन्द सिंह झा 'बटुक भाई' सहित राजधानीक शताधिक विद्वान जुटल रहथि।

उपरोक्त संस्थानक अलावा मैथिली महिला संघ, पटना; बिहार संगीत नाटक अकादमी, पटना; मैथिली अकादमी, पटना; लोकमंच प्रभृति कतोक संस्थाक संचालन ओ क्रियाकलापमे श्रीमती प्रेमक सहभागिता बनल रहल अछि।

उत्कृष्ट अभिनयक लेल श्रीमती प्रेमलताजीकेँ कतोक संस्थान द्वारा कतोक सम्मान ओ पुरस्कार प्रदान कएल गेल अछि जकर एकटा पैघ सूची अछि। मुदा एहन धरोहरि सेनानीकेँ सम्मानित कए कोनो संस्थान ओ संगठन अपना-आपेकेँ गौरवान्वित करैत अछि।

मिथिलाक विदुषी परम्परा देशमे अद्भुत् अछि। भारतीय स्त्री-शिक्षाक आधार मिथिलाक विदुषीगणक क्रियाकलापे थिक। गार्गी, मैत्रेयी, सुलभा, वेदवती, भारती, जयन्ती थेरी, वासेट्ठी थेरी, अम्बपाली, लखिमा देवी, विश्वास देवी, लखिमा ठकुराइन प्रभृति विदुषीक एकटा पैघ परम्परा मिथिलामे अछि, ताहि परम्पराक अनुपम स्तम्भ छथि- प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'। सन् १९४८मे हिनक प्रादुर्भाव भेल, सन् २००८मे पटनाक बाँकीपुर राजकीय बालिका विद्यालयक शिक्षिकाक पदसँ सेवानिवृत्त

भय साहित्य, संस्कृतिक संरक्षण लेल अपनाकेँ समर्पित कय देने छथि। एहन धरोहरि सेनानीक प्रति सादर नमन। ईश्वरसँ हिनका दीर्घायु करबाक कामना।

-डॉ शिव कुमार मिश्र, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना। मोबाइल- ९१२२६८६५८६

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१२.आशीष अनचिन्हार- कला लेल वरिष्ठता नै दक्षता मापदंड छै

आशीष अनचिन्हार

कला लेल वरिष्ठता नै दक्षता मापदंड छै

हम आन बात कहबासँ पहिने एकटा लिस्ट दऽ रहल छी। ई लिस्ट ओहन हिंदी फिल्म केर छै जकर निर्देशक पहिल छलाह। माने ओहि फिल्मसँ ओ लोकनि निर्देशन केर काज शुरू केलाह-

Sooraj R Barjatya (Maine Pyar Kiya) (1989) ...

Aditya Chopra (Dilwale Dulhania Le Jayenge) (1995) ...

Karan Johar (Kuch Kuch Hota hai) (1998) ...

Farhan Akhtar (Dil Chahta Hai) (2001) ...

Rajkumar Hirani (Munna Bhai MBBS) (2003) ...

Aamir Khan (Tare Zameen Par) (2007)

जखन अहाँ ई लिस्ट देखबै तँ पता चलत जे निर्देशक केर फिल्म पहिल छै

मुदा ओहि फिल्ममे अभिनय करए बला अभिनेता सभ नव-पुरान दुन्नू छै। ईहो पता चलत जे किछु अभिनेता निर्देशक रूपमे सेहो छथि आ ई गलत नै छै। ओ अभिनेता सभ अपन निर्देशकीय क्षमताक लोहा सेहो मनबेने छथि। सभकेँ अपन मनोनुकूल काज करबाक अधिकार छै। मुदा सोचियौ जँ राजकपूर जँ ई सोचने रहितथिन जे हम हिट हीरो छी, नीक अभिनेता छी तँइ हम हिट निर्देशक आ नीक निर्देशक सेहो छी तँ केहन लगितै। लागब तँ जे हो मुदा तखन निर्देशक रूपमे राजकपूर सफल हेबे नै करितथि आ ने शो मैन बनि पबितथि। अहाँ अही लिस्टमे देखू Munna Bhai MBBS मे जँ संजय दत्त ई कहने रहितथि जे हम पुरान हिट हीरो छी तँइ राजकुमार हीरानीक निर्देशनमे काज नै करब तँ केहन लगितै। मुदा विश्वास मानू बॉलीवुडमे एहन बात हेबे नै करतै कारण ओहिठाम सभ प्रोफेशनल छै आ सभकेँ बूझल छै जे फिल्म लाइन केर हरेक काज लेल अलग-अलग दक्षताक जरूरति छै। ई बात सभ हमरा एहि दुआरे लिखए पड़ल अछि जे "आखर" केर कार्यक्रमक एकटा समाद हमरा पढ़बाक लेल भेटल जाहिमे प्रेमलताजीक भावना रहनि जे ओ "मैथिली नाटक लेल अपन कम उम्र केर निर्देशक तनुजा शंकरक भीतर कार्य केलीह"। प्रेमलताजीक एहि कथनसँ दू टा बात स्थापित होइत अछि पहिल जे मैथिलीपर ओहो इमोशनल अत्याचार करबासँ पाछू नहि हटैत छथि ई कहि जे "मैथिली नाटक लेल.." आ दोसर जे ओ कलामे दक्षताक स्थानपर वरिष्ठताकेँ अनुमोदन करै छथि। हमरा लागल जे ई भावना तँ प्रोफेशनल काजक ठीक विपरीत छै। रंगमंच आ रंगकर्मी हमरा लेखक वर्गक तुलनामे बेसी नीक बुझाइत छल मुदा एहि तरहक भावनासँ हमरा लागल जे रंगमंचोमे मैथिली साहित्य बला बेमारी आबि गेलै। मूलतः ई मनोवृति सभसँ बेसी मैथिली लेखकमे भेटैए आ ओहीठामसँ ई बेमारी आनो क्षेत्रमे आबि गेलै। हम एहि समस्यासँ बेसी काल मुठभेड़ करैत रहैत छी। हम गजलमे छी तँ हमरा सामनेमे ईहो दिक्कत आएल। किछु लेखक कहलाह जे हम ४०-४५ बर्खसँ

मैथिली सेवामे लागल छथि तँइ हमर रचना गजल भेल। आब ई कहू जे गजल केर मापदंड अहाँ कतेक बर्खसँ लिखैत छी से कोना भऽ सकैए? एहन-एहन उदाहरण बहुत भेटत। मैथिलीमे सभसँ बड़का समस्या छै जे जँ कियो एक विशेष कलामे महारत हासिल केने छथि तँ ओ अपनाकेँ सर्वकला विशेषज्ञ मानि लै छथि।

प्रेमलताजीक प्रति समस्त आदर ओ सम्मान रखैत हम कहए चाहैत छी जे एहि तरहक भावना मैथिली रंगमंचकेँ नोकसान करतै। कते नोकसान भेल हेतै भूतकालमे तकर आकलन रंग आलोचक सभ करथि। मुदा एहि ठाम हम अपन हस्तक्षेप एहि कारणे केलहुँ जे एहि प्रवृतिसँ साहित्य तँ गर्तमे चलिए गेल छै कमसँ कम रंगमंच बाँचल रहए।

जाहि ठामसँ हमरा आखर संबंधी समाद भेटल तकर लिंक अछि- https://news4nation.com/news/aakhar-dr-premlata-mishra-840062

-आशीष अनचिन्हार-संपर्क-8876162759

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१३.आभा झा- रंगकर्मी प्रेमलता मिश्रक साहित्यिक छवि- ओ दिन ओ पल

आभा झा

रंगकर्मी प्रेमलता मिश्रक साहित्यिक छवि- ओ दिन ओ पल

जखन लेखक अपन जीवनक अनन्त स्मृतिक धरोहरमेसँ किछु रमणीय अनुभूतिकेॅॅं चित्रात्मकता ओ तटस्थताक संग कलात्मक शैलीमे लिखैत अछि त' ओ संस्मरण कहाइत अछि।मुदा संस्मरण तखनहिँ अपन प्रभाव पाठकक म'न-मस्तिष्क पर छोड़ि सकैछ जखन संस्मरण-लेखक आत्मीयतासँ कोनो स्मृतिकेॅॅं शब्दाकार परसैत अछि। संगहिं इहो आवश्यक जे लेखक कोनो पुरुष अथवा चरित्रक ओहि पक्षकेॅॅं मजगूतीसँ सोझां आनि सकय जे जेना ओ स्वयं ओहि क्षणविशेषकेॅॅं म'न पाड़बा लेल विवश भेल तहिना पाठककेर सेहो तादात्म्य स्थापित भए सकए।

संस्मरण शब्दक जँ व्युत्पत्ति पर गौर करी त' **सम्** उपसर्ग पूर्वक **स्मृ** धातु संग **ल्युट्** प्रत्यय लगलासँ संस्मरण शब्द बनैत अछि जकर अर्थ होइछ- संस्कार- जन्य -ज्ञान । अर्थात् ज्ञातवस्तुक अनुभवक अधीन संस्कारसँ उत्पन्न ज्ञान,चिन्तन अथवा स्मृति।

संस्मरणक एकटा महत्वपूर्ण विशेषता कृतज्ञता सेहो थिक। यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति अपन जीवनमे प्रकृति,माता-पिता, परिवार -जनक अतिरिक्त अनेक

अन्य लोकसँ उपकृत होइत अछि,मुदा सभ ओकरा म'न नहिँ राखैत अछि, किछु म'न रखितो ओकरा अभिव्यक्त नहिँ कए सकैत अछि आ किछु लोक एहन होइत छथि जे जरूरतिक समय किंवा कोनो सम-विषम परिस्थितिमे किनकहु द्वारा कएल गेल छोटसँ छोट सहायता वा सेवा लेल हृदयमे ओहि व्यक्तिक प्रति आदर- भाव रखैत छथि, कृतज्ञता अनुभव करैत छथि आ निर्द्वन्द्वभावेँ शाब्दिक आभार प्रकट करैत छथि। ओहने संवेदनशील कलाकार आ कलमकार छथि **श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'** जे स्वयंकेॅ मात्र सामान्य रंगकर्मी बुझैत छथि, साहित्यिक व्यक्ति नहिँ। तैं सम्भवतः अपन लेखनक क्रममे बेर बेर विभूति जीक नाम लैत कहैत छथि-ओ हमरासँ किछु तीत-मीठ अनुभव लिखबा लैत छथि, हमरा सँ खिस्सा पिहानी लिखवा लैत छथि,नहिँ त' हमरा त' मात्र भट्ठा धर' आयल अछि।

ई थिक विनम्रता,ई थिक माटिसँ जुड़ल रहबाक संस्कार आ इऐह थिक ओ मानवीय गुण जे मनुष्यकेॅ वस्तुतः मनुष्य बनबैत छैक।ई सत्य, जे प्रेमलता मिश्रक नाम लैत देरी मिथिलाक एकटा ओहेन महिलाक व्यक्तित्व आंखिक सोझां अबैत अछि,जे बीसम शताब्दीक उत्तरार्द्धक शुरूहेमे (१९६४-६५)रंगमंचसँ जुड़लीह, रंगमंचकेॅ जीवनक पर्याय बनौलनि आ तैंयों अपन पारिवारिक- सामाजिक जीवनमे तालमेल बनौने रहि सकलीह। निस्संदेह ताहि समयमे ई क्रान्तिकारी डेग छलै, जकर आलोचना -प्रत्यालोचना होइते रहलै, तथापि किछु शुभचिंतक आ पतिक सहयोगक बलें ओ ने मात्र स्वयं बढ़ैत रहलीह, अपितु भविष्यक बहुत रास स्त्री लेल प्रेरिका बनलीह।अपन सहज-सरल ममत्वपूर्ण स्वभावक कारणें ओ सभहक मातृतुल्या मानल जाइत छथि । आइ हुनक आभिनयिक नहिँ, अपितु सरल हृदयक सोझ-सरल भाषामे लिखल संस्मरणक मादें हुनक व्यक्तित्वक कृतज्ञताक संग हुनक जीवनमे आयल किछु श्रेष्ठ जनक व्यक्तित्वक ओहि वैशिष्ट्य सभहक

साक्षात्कार करबाक प्रयास करब,जे सामान्य बुझाइतो विशिष्ट अछि,नोटिस लेबा जोगर अछि आ आभार व्यक्त करबा जोगर अछि-

संस्मरणक पहिल अध्यायमे ओ म'न पाड़ैत छथि यात्रीजीकेॅॅं,हुनक सिद्धान्तकेॅॅं,हुनक पितृवत्सलताकेॅॅं,हुनक अकारण वात्सल्य आ निश्छलताकेॅॅं!

"जाबत धरि हम व्यवस्थित जिनगीमे नहि आबि गेलहुॅॅं,ताबत धरि हुनक बासा हमर शरणस्थली रहल... "

"ओ हमर पिता छलाह, मित्र आकि मार्गदर्शक-हम निर्णय नहि ल' सकैत छी।"

आकाशवाणीमे अपन प्रवेश लेल, भंगिमा, चेतना समिति आदिमे सक्रियता लेल,स्त्रीक म'नमे अधिकारक जागरूकता लेल प्रेमलताजी हुनका प्रति अपन कृतज्ञता बिसरैत नहिँ छथि आ **लोकेकेॅॅं ल' जाइत छथिन यात्री जीक साहित्यिक गुरुताक भूमिसँ एकटा सहृदय- निश्छल- पितृतुल्य उदार भूमिमे,हुनक सैद्धांतिक कट्टरता आ यायावरी प्रवृत्तिसँ फराक सिनेहसँ सानल वात्सल्यक अकृत्रिम माटिमे !**

संस्मरणक दोसर फूल समर्पित छनि श्री हरिमोहन झाकेॅॅं,जनिकासँ पटना में अपन भेंट आ तदनन्तर विकसित पितृव्य-भतीजी-संबधक स्नेहपूर्ण विवरण आ प्राप्त उचित मार्गदर्शनक उल्लेख करैत हुनकर प्रति अपन स्मरणाञ्जलि अर्पित कएने छथि।हुनक भावप्रवण सिनेहक छिटकासँ अभिसिंचित,हुनक पत्नीक(प्रेमलताजीक काकीक) घ'रक बाहर बढ़ल डेगसँ प्रेरित मानैत बहुत श्रद्धा संग हुनका स्मरण करैत छथि। हरिमोहन झाक स्त्री-समानताक स्वप्नकेॅॅं हुनकहि मुंहसँ ओ सुनने छलीह -" आइ हमर सपना साकार

भेल। एहि दिनक कल्पना हम कयने रही। मैथिल ललना लोकनि आब जागि गेलीह... एहिसँ बढ़िक' खुशीक बात भइये की सकैत अछि!"

सुधांशु शेखर चौधरी जीक प्रति अपन तेसर स्मृति- पुष्प अर्पित करैत ओ कहैत छथि-"कोनो नाटककारक निधन एकटा कलाकारक हेतु माय- बापक मृत्युसँ कम नहि होइत छैक।"

शेखरजीक वर्णन करैत ओ पुनः कहैत छथि-"एकटा नाटककार सेहो अपन नाटक लिखबाक समय ओकर प्रत्येक पात्रक भूमिकाक संबंधमे सोचैत अछि, ओकरा हेतु ओहि मात्र दू घंटाक वा किछु समयक नाटकमे किछु तेहने परिवेशक संरचना करैछ जाहिसँ ओकर प्रत्येक पात्र दर्शकक हृदयमे दीर्घजीवी भ' सकत।तकर निर्वाह शेखर जी अपन नाटकमे पूर्णरूपेण करैत छलाह, खाहे ओ 15-20 मिनटक रेडियो नाटक हो अथवा दू घंटाक रंगमंचीय नाटक।"

प्रेमलता जी प्रायः सुधांशु शेखर चौधरी जीक सभ नाटकमे अभिनय कएलनि आ हुनका मुंहें अपन पात्रताक स्वीकारोक्ति हुनका अत्यंत मुदित कएने छलनि-

" जखन हम नाटक लिखब आरंभ करैत छी,अहाॅं हमरा सोझां आबि जाइत छी आ ओ संवाद हम प्रेमलताक हेतु लिखैत छी।"

हुनक साहित्य पर शोध करबाक प्रेमलता जीक स्वप्न छलनि आ ओ पूरा नहिं भेलनि। तैं ओ स्वयंकेॅं कटघरामे ठाढ़ बुझैत छथि।(एहि पोथीक अनुसार)

पं जयनाथ मिश्रकेॅं स्मृति- तर्पण दैत ओ कहैत छथि-

"पं जयनाथ मिश्र एक व्यक्ति नहि अपितु संस्थाक नाम अछि।"

पुनः हुनक तुलना विशाल वटवृक्षसँ करैत ओ कहैत छथि- "गाछ कोनो वर्ग-भेद, जाति-भेद ,धर्म -भेद नहि बुझैत अछि।ओहन व्यक्तिक हेतु कियो खास नहि होइत छैक, मुदा ओहि व्यक्तित्वक ई विशेषता होइत छैक जे लोक हुनका अपन खास हयबाक दाबी करए लगैत अछि।ओ अपन भाषा संस्कृतिक संगहिं संग मानवताक पुजारी छलाह।"

तदुपरान्त ओ नारी-जागरणक अग्रदूत रूपमे पं गोविन्द झाकेॅं देखैत हुनका प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करैत छथि-

"पं झाक नाटकक माध्यमें हमरा अपन अभिनय- कलामे विविधताक अवसर भेटल। बेसी नाटकमे एक रंगक भूमिकासँ उपजल अकुलाहटिकेॅं दूर कए हमरामे स्फूर्ति आनि देलक।"

"पंडित झाक नाटकक पात्र सभ तत्कालमे जे सामाजिक धारा चलि रहल अछि,ओकर धाराक विपरीत परिवर्तन चाहैत अछि।आइसँ 40 वर्ष पूर्व जे नाटक लिखल गेल,ओहूमे ई भाव छल आ जे नवीनतम कृति (रुक्मणी हरण) छनि ओहूमे अछि।एहि नाटकक जन- बोनिहार यद्यपि अशिक्षित अछि,परंच लिलहा कोठीवलाक अत्याचारसँ त्राण पएबाक हेतु एक संग भए संघर्ष करैत अछि। ओकरा

लोकनिक एकतासँ समाजमे परिवर्तन अबैत अछि।"

"पंडित गोविंद झा ओहन सांस्कृतिक पुरुष छथि जनिक जीवनक समस्त स्नेह- बाती अनुज साहित्यकार- कलाकार लेल छनि।जतेक हिनकासँ रंग-कर्मीकेॅं भेटलैक अथवा भेटि रहल छैक ओतेक आन-कोनो व्यक्तिसँ नहिं।"

गुरुजी रूपमे पं. त्रिलोचन झाक स्मरण करैत प्रेमलता जी कहैत छथि- "सन 1984 -85 मे गुरुजी कोलकाता महानगरी केॅ त्यागि पटनाकेॅ अपन वास- स्थान बनौलनि। हमरा लोकनिक समक्ष एक निर्देशकक रूपमे अयलाह 'चेतना समिति' द्वारा मंचित नाटकक माध्यमे। हुनक कार्यशैलीसँ सभ कलाकार प्रभावित छल आ संगहि हुनक शिष्यत्व ग्रहण करबाक हेतु उताहुल सेहो।"

मैथिली रंगमंचमे नवीन तकनीकक समावेश आ अभिनव प्रस्तुति द्वारा स्तरोन्नयनक संग रंगमंचकेॅ रोजगारक साधन बनयबा लेल आ पछाति पटनामे चेतना समितिक माध्यमसँ रंगकर्मी लोकनिक मार्गदर्शन लेल प्रेमलता जी पं त्रिलोचन झाकेॅ श्रद्धाक संग म'न पाड़ैत छथि।

रंगकर्मी श्रीकांत मंडलकेॅ ओ रंगमंचक सिपाही, अग्रदूत, नेता, अभिनेता, निर्देशक, चिंतक आदि विशेषणक संग म'न पाड़ैत छथि।हुनक असमय देहावसान मैथिली रंगमंचक दुनियांक सभ कलाकारक लेल व्यक्तिगत क्षति छल ई कहैत ओ उमेद रखैत छथि जे हुनक अपूर्ण काज पूरा करबा लेल निस्संदेह कोनो कलाचिन्तककेॅ श्रीकांत जी पठौताह।

बालभंगिमाक निर्देशिका प्रमिला जी यद्यपि कहियो अभिनय लेल प्रत्यक्षतः मंच पर नहिँ अयलीह, मुदा निर्देशन, अनुवाद,रूपसज्जा एवं प्रस्तुतिक लेल सभ टा दायित्व स्वेच्छासँ वहन करैत ओ एवं अभिनय लेल सभ तरहक सहायता देनिहार हुनक पति श्री नारायण झाक प्रति अपन स्नेह आ कृतज्ञता प्रेमलता सन स्नेहिल व्यक्ति कोना बिसरितथि!खासकए अमैथिलीभाषी बच्चा सभसँ मैथिली नाटक करयबामे प्रमिलाजीक परिश्रम,लगन आ सतत

प्रयास स्मरण योग्य बुझैत छथि आ भंगिमा परिवारकेॅं प्रमिलाजीक ऋणी बुझैत छथि।

एकर अतिरिक्त बटुक भाइ,हुनका संग व्यक्तिगत संबंध आ एहने अनेक व्यक्तिक प्रति ओ अपन कृतज्ञता ज्ञापित कएने छथि,जनिकासँ हुनका कनियों स्नेह, सम्मान,अवसर वा उपकार भेटलनि।

अवश्य अल्पायुमे मातृ-पितृ-विहीन एकटा कन्या पटना सन शहरमे अपनाकेॅं स्थापित कए सकलीह,रंगकर्मकेॅं अपन जीवनक लक्ष्य बना सम्मान पाबि सकलीह,त' बहुत लोकक सहयोग भेटले हेतनि, किन्तु एहि सभ संघर्ष-यात्रामे हुनक आत्मबल, कठिन परिश्रम,अवसरक लाभ उठयबाक शैक्षणिक ओ अभिनयक जन्मजात क्षमताकेॅं नकारल नहिँ जा सकैछ। हँ,'**ओ दिन ओ पल'** लिखि कए ओ अपन व्यक्तित्वक सकारात्मकताक सबल परिचय देने छथि,समाजक प्रतिकूल धारणाक बादो ओहि क्षेत्रमे मजगूतीक संग ठाढ़ हयबाक प्रेरणा सेहो दैत छथि आ अपन जीवनमे सहायक रहल सभ श्रेष्ठ जनक प्रति कृतज्ञतापूर्ण स्वीकारोक्तिसँ एकटा आदर्श सोझां रखने छथि।

एहि संस्मरणकेॅं साहित्यक कसौटी पर कसलासँ भ' सकैछ किछु जर्किंग अनुभव हो, मुदा हृदयक सहज-सरल भावुक उद्गार रूपमे 'ओ दिन ओ पल' अपन एकटा मानवीय पक्षक संग सबल परिचिति आ सशक्त उपस्थिति देखबैत अछि।एखन एतबहि।

आभा झा

२५.१०.२०२२

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१४.मनोज झा- नारी सशक्तिकरण के अग्रदूत, मैथिली नाट्य मंचक पहिल सशक्त महिला रंगकर्मी आओर मैथिली फ़िल्म मे ममता के साक्षात प्रतिमूर्ति डॉ प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

मनोज झा

नारी सशक्तिकरण के अग्रदूत, मैथिली नाट्य मंचक पहिल सशक्त महिला रंगकर्मी आओर मैथिली फ़िल्म मे ममता के साक्षात प्रतिमूर्ति डॉ प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

मैथिली नाट्य मंचक पहिल सशक्त महिला रंगकर्मी आ मैथिली, भोजपुरी व हिन्दी फिल्म मे अभिनय केनिहारि प्रेमलता मिश्रक प्रारंभिक जीवन संघर्षपूर्ण

रहल अछि। बाल कालहि सऽ हिनक अभिरुचि नाट्य मंच स प्रेरित रहल। हिनक जन्म 29 सितंबर 1948 ई. मे मधुबनी जिला मे प्रखंड मुख्यालय रहिका गामक दछिनवारि टोल मे भेल अछि। हिनक पिताक नाम पंडित दीनानाथ झा आ माता बिन्दा देवी छलीह। हिनक पिता अपना इलाका के विख्यात वैद्य छलाह। हिनका लग दूर दूर स लोक उपचार लेल अबैत छल आ स्वस्थ होइत छल। प्रेमलता अपन माता पिताक असगरे संतान छथि। रहिका गाम तत्समय आ हाल धरि नाटकक मंचन लेल विख्यात रहल अछि। एकरा जन्मभूमिक माटि के गुण कही अथवा विधना द्वारा मैथिली रंगमंचक लेल रचल गेल महिला कलाकारक साक्षात प्रतिमूर्ति। हिनक रंगमंचीय जुड़ाव लगातार बढ़िते गेल। जखन कि हिनका अपन गामहि के स्कूल मे मंच पर उतरबाक विरोध मुखर होइत रहल अछि। विरोधी स्वरक मुखरता के कारणें एक-दू बेर त नाटक के मंचन तक नहि भ सकल।

खैर, पहिलुक स्थापित परंपरा अनुसार बाल कालहि मे 12म बयसि मे हिनक विवाह सीतामढी जिलाक सिरसी गाम मे भेल। हिनक पढाई लिखाई गाम के स्कूल मे भेल। जतय पढ़ि ई मैट्रिक मे फर्स्ट डिवीजन स पास भेलीह। हिनक पतिदेव रहिका के स्कूल मे शिक्षक छलैथ। हिनका परिवार मे तीन टा पुत्र एकटा पुत्री छथिन्ह। हिनक ज्येष्ठ बालक मनमोहन मिश्रा इंटेलिजेंस ब्यूरो मे कार्यरत छथिन्ह। दोसर बालक रवि रंजन मिश्रा आईएलएफएस नामक प्रतिष्ठित फाइनेंस कंपनी मे वाइस प्रेसिडेंट, तेसर बेटी अनुपमा सेहो म्यूजिक मे एमए आ गायन विधा स जुड़ल छथि। एहन बुझना जाइत अछि जे प्रेमलताक जन्म मैथिलीक लेल भेल अछि। रंगमंच स हिनकर जुड़ाव बढिते रहल। विदित हो जे तत्समय मे रंगमंचीय विधा मे अभिनय लेल स्त्री पात्रक घोर अभाव छल। पुरुष सब नारीक भेष मे अभिनय करैत छलाह। एहि खगता आ बेगरता के भरबा लेल प्रेमलता आगां अयलीह।

अपना गाम रहिका मे 'बच्ची दीदी' के नाम स विख्यात प्रेमलता मिश्र अपन अध्यापन कालहि सँ स्वतंत्र विचारक भावना स ओत प्रोत रहलीह। नारी सशक्तिकरण के दिशा मे हिनक अविस्मरणीय योगदान के कखनो नकारल नहि जा सकैत अछि। जाहि समय मे रंगमंच पर लड़की के चढ़नाइ वर्जित छल आ एकरा गलत नजरि स देखल जाइत छल। ओहि समय गाम मे कइएक बेर हिनका विरोधाभास के सामना करय पड़ैत रहलैन। मुदा ई अपन संकल्प पर अडिग रहि अपना अभियान के बल दैत रहलीह। अपन गाम रहिका स्थित यूएनवीन उच्च विद्यालय मे प्रारंभिक शिक्षा के दौरान ई रंगमंच पर स्त्री पात्र के रुप मे पुरुष वर्ग के अभिनय करैत देखि विचलित होइत छली। हिनका मोन मे एकटा टीस उठैत छलैन जे मंच पर स्त्री पात्रक रुप मे कोनो लड़की किएक नहि अबैत अछि। बताबैत चली जे तत्समय रहिका उच्च विद्यालय नाट्य विधाक केन्द्र बिन्दु के रुप मे जानल जाइत छल आ सगरों चर्चित छल। जतय मधुबनी निवासी सर चन्द्रिका प्रसाद सन नाट्य प्रेमी डाइरेक्टर स्कूल के हेड मास्टर के रुप मे मौजूद छलथि। चन्द्रिका बाबू के नाट्य निर्देशक के रुप मे पाबि रहिका गामक संग आसपास इलाका मे सेहो नाट्य विधा के खूब पसार भेल। हिनका एहि विधा मे पारंगत करबा व रंगमंचक प्रेरणा मे चन्द्रिका बाबूक अतुलनीय योगदान रहल अछि।

जीवनक क्रम मे हिनका गॉडफादर के रुप मे मिथिला मैथिलीक अमूल्य धरोहर यात्री नागार्जुन कें सानिध्य भेटल आ हुनके कहला पर 'प्रेम' अपन पति के संग पटना शिफ्ट कयलथि। यात्री जी के छत्रछाया मे हिनकर प्रतिभा मे निखार आबय लागल। जतय किछु दिनक बाद हिनका पति के नौकरी प्रकाशन कार्य मे लागि गेल आ प्रेमलता सेहो पटना के एकटा स्कूल मे शिक्षिका के रुप मे काज करय लगलीह। मुदा हिनक पढ़ाई सेहो अनवरत

चलैत रहल। आ ई पीएचडी धरि के डिग्री हासिल कऽ डाक्टर के उपाधि ग्रहण कयलीह। पटना के बांकीपुर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मे मैथिलीक व्याख्याता के रुप मे काज करबाक मौका सेहो हिनका भेटल। जतय स ई अवकाश ग्रहण कयलीह।

कवि नागार्जुन 'यात्री' जी चुंकि हिनक पिताक पिसियौत छलखिन्ह त सहजें प्रेमलता हिनका कक्का जी कहि संबोधित करैत छलीह आ यात्रीजी सेहो हिनकर प्रतिभा स प्रभावित, एकटा बेटीक मुख्य मार्गदर्शक जकां सतत प्रयत्नशील रहैत छलाह। आ एक दिन हिनका बांहि पकड़ने आकाशवाणी लऽ गेलाह आ कहलनि जे आहां एहि ठाम आकाशवाणी मे होबय वला विभिन्न कथा-गोष्ठी, संगोष्ठी, वार्ता, परिचर्चा आदि मे अपन सहभागिता प्रारंभ करु। आ ओतहि स प्रारंभ भेल प्रेमलताक नव जीवन। प्रेमलता आकाशवाणीक कार्यक्रम सभ मे अपन सहभागिता देबय लगलीह। दिनानुदिन हिनक प्रतिभा निखरैत गेल। आकाशवाणी सऽ हिनक जुड़ाव हिनका लेल संजीवनी के काज कयलक आ ओहि ठाम हिनका विभिन्न प्रसारण के संगहि रेडियो मे होबय वला नाटक सभ मे सेहो भाग लेबाक मौका हाथ आबय लागल। तत्समय त आकाशवाणी विभिन्न तरहक कार्यक्रम प्रसारण आदिक केन्द्र बिन्दु मानल जाइत छल, जतय मैथिली रंगमंचीय बड़का नामी गिरामी कलाकार लोकनिक आबा जाही होइत रहैत छल। जतय शनैः शनैः हिनक परिचय आ सम्पर्क बढैत गेल। हुनका सबके सम्पर्क हिनक चेतना समिति स जुड़ाव के मार्ग प्रशस्त कयलक। तदुपरांत हिनका नाट्यमंच आ रंगकर्म सऽ जुड़बाक मौका भेटल। रंगकर्मी लोकनिक सम्पर्क स प्रेमलता अनेरो बहुत रास नाट्य संस्था आदि स जुड़ि गेलीह। तकरा बाद हिनक रंगयात्रा अनवरत चलायमान रहल आ ई अपन किर्ति के पसार करैत अभिनय के छाप छोड़ैत गेलीह। पटना मे मैथिलीक सुदृढ़ चेतना समितिक मंच पर कइएक टा नाटक मे स्त्री पात्रक सजीव मंचन

कय खुब प्रशंसा बटोड़लैन। महिला रंगकर्मीक रुप मे ई बहुत रास संस्था सब सं जुड़लथि आ एखनो कोनो ने कोनो रुप मे एहि संस्था सं जुड़ल छथि। वर्तमान मे ई चेतना समिति पटना के उपाध्यक्ष पद पर सेहो निर्वाचित भेल छथि।

रंगमंचक यात्रा के क्रम मे हिनक रविन्द्रनाथ ठाकुर सं भेंट मुलाकात हिनका मुंबई ल गेल। जतय हिनका मैथिली फ़िल्म इतिहासक सफलतम फिल्म 'ममता गाबय गीत' मे अभिनय करबाक मौका हाथ लागल आ हिनका अभिनयक बले फिल्म सफलता प्राप्त कयलक। तकर बाद हिनक फिल्मी अभिनय यात्रा जोर पकड़लक आ ई लगातार हिन्दी आ भोजपुरी फिल्म आदि मे अभिनय करय लगलीह। जाहि मे हिन्दी फिल्मक सफलतम नाम प्रकाश झा के फ़िल्म दामूल, कन्यादान, भोजपुरी फ़िल्म 'दूल्हा गंगा पार के' , माटी, 'बबुआ हमार' आ पिंजरे वाली मुनिया आदि फिल्म मे अभिनय केलीह। तकर बहुत दिन बाद बालकृष्णक मैथिली फिल्म 'सस्ता जिनगी महग सेनूर' आ 'ललका पाग' मे सेहो अपन अभिनय के छाप छोड़बा मे सफल भेलीह। एतबे धरि नञि डॉ प्रेमलता डीडी पटनाक प्रसारण धारावाहिक 'पर्व भरा मिथिला' आ 'देहाती दुनिया' मे सेहो अभिनय कऽ प्रशंसित भेल छथि। हालहि मे वर्ल्डवाइड प्रदर्शित राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त एतिहासिक मैथिली फ़िल्म "मिथिला मखान" हिनक जीवनक उत्कृष्ट फिल्म के रुप मे याद कएल जाइत रहत।

रंगमंच आ अभिनय के संग-संग प्रेमलताक नाम मैथिलीक एकटा सुपरिचित साहित्यकारक रुप मे सेहो जानल जाइत अछि। हिनका हाथे मैथिलीक विभिन्न पत्र पत्रिका के सम्पादन सेहो भेल अछि आ एखनो लेखन शील छथि। हिनक रचना विभिन्न पत्र पत्रिका सभ मे प्रकाशित भेल अछि। हिनक

प्रकाशित कथा संग्रह 'एगो छली सिनेह' आ 'शेखर प्रसंग' प्रमुख अछि। (शेखर प्रसंग) जे हिनक पीएचडी के विषय सेहो छल। रंगमंच, साहित्य, कला, संस्कृति आ अभिनय लेल बहुत रास सम्मान स सम्मानित डॉ प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' मिथिला मैथिलीक अमूल्य धरोहर के रुप मे एखनो अपन क्रियाशीलताक संग हमरा लोकनिक बीच विद्यमान छथि। नव पीढ़ीक लेल आदर्श प्रेमलता मिश्र कें चेतना समिति पटना, मिथिला सांस्कृतिक परिषद कलकत्ता, अखिल मिथिला संघ दिल्ली, विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगा, मैथिल समाज रहिका आदि संस्था द्वारा 'मिथिला विभूति' सम्मान देल गेल अछि। एहिके अलावे हिनका 'पाटलिपुत्र सम्मान', 'नूरफातिमा सम्मान' समेत हिन्दी भाषाक कइएक टा प्रतिष्ठित सम्मान स नवाजल जा चुकल अछि। दिल्लीक नाट्य संस्था मैलोरंग द्वारा 'ज्योतिरीश्वर' सम्मान स हिनका सम्मानित कयल गेल अछि। वर्ष 2018 मे मधुबनी के ठाढ़ी गाम मे आयोजित मैथिली लिटरेचर फेस्टिवल मे तत्कालीन डीएम शीर्षत कपिल अशोक द्वारा हिनका 'भामती स्त्री सम्मान' प्रदान कयल गेल। एतबे नञि डॉ प्रेमलता कें बिहार सरकार द्वारा भिखारी ठाकुर 'राज्यकला सम्मान, मैथिली लोक संस्कृति मंच लहेरियासराय द्वारा मिथिला सेवा 'ताम्र पत्र सम्मान', हिनक 5 दशकऽक नाट्य यात्रा लेल हिनका वर्ष 2019 मे थियेटर वाला नाट्योत्सव द्वारा प्रतिष्ठित नाट्य सम्मान 'अजीत कुमार गांगुली एवार्ड' स सम्मानित कएल गेल।

एकटा 'प्रेम' मे एतेक रास विधाक वास विधनाक अनमोल कृत्य अछि। तत्समय के पुरुष प्रधान समाज मे नारी सशक्तिकरण लेल कएल हिनक त्याग आ योगदान युग युगांतर धरि गुंजैत रहत। निःसंदेह डॉ प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' मिथिला मैथिलीक अमूल्य धरोहर छथि। जनिका सहेज क रखबाक अहम जिम्मेदारी हम सब मिथिलावासी के दायित्व अछि।

-मनोज झा, राष्ट्रीय अध्यक्ष, मिथिला लोकतांत्रिक मोर्चा, सम्पर्क - 7701948646

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१५.प्रेम कान्त चौधरी- डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' : मिथिलाक विलक्षण विदूषी आ प्रेरणात्मक व्यक्तित्व- जेना जनलियैन्ह

प्रेम कान्त चौधरी

डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम': मिथिलाक विलक्षण विदूषी आ प्रेरणात्मक व्यक्तित्व- जेना जनलियैन्ह

चलनिहार संयोगवश पथ पर पिछड़ि खरैछ।
सुजन सम्हारथि हाथ धय, दुर्जन देखि हँसैछ॥

उपरका दुनू पाँति डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क 'शेखर-प्रसंग' नामक लिखल किताबक लेखकीय उद्गार मे व्यक्त कयल गेल अछि। अन्तिम दू पाँति मे जीवनक रहस्य छिपल अछि। आइ हऽम जाहि व्यक्तित्वक सन्दर्भ मे किछु कहबाक लेल कलम उठौलहुँ अछि ताहि लेल हम अज्ञानी व्यक्ति छी। मुदा साहस करब आ जोखिम मोल लेनाय हमर काजक क्षेत्र रहल अछि। ताहि सँ नञ हऽम हुनक महान व्यक्तित्व मे समायल शिक्षाक विश्लेषण करब आ नञ हुनक कलाकारक विधा के। आ नञ हुनक विभिन्न संस्था समितिक संगठनात्मक क्षमता कैं। आ नञ हुनक साहित्यिक जीवन यात्राक। आ नञ हुनक पारिवारिक गाछ के विशाल परिवेश के। हम तँ हुनका मे समायल उपर्युक्त सभ तथ्यक आलोक मे हुनक स्नेहिल-आत्मीय संवेदनशील

अतुलनीय प्रतिभाक जे प्रेरणात्मक अछि। ताहि पर अपन संस्मरण लिखऽ चाहब। कहऽ चाहब जे डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' केर जन्म 29 सितम्बर, 1948 ई. मे रहिका, जिला मधुबनी, मिथिला, बिहार मे पिता पं. दीनानाथ झा आ माता पूजनीया वृन्दा देवीक सुपुत्रीक रूप मे भेलैन्हि। आरम्भिक शिक्षा गाम मे भेलैन्ह। तत्पश्चात् विवाहोपरान्त सोलह बरख मे पति श्रीमान महेश्वर मिश्र जीक संग पटना आबि गेलीह। ओ जखन विद्यालय मे पढ़ैत छलीह तखने सँ गायन आ अभिनय सँ लोक-समाज परिचित भेल। 1964 ई मे जखन पुरस्कार सँ सम्मानित सँ भेलीह तऽ विद्वत समाज मे अपन भिन्न पहचान बनौलकीह। धीरे-धीरे अपन शिक्षा पूर्ण करबाक क्रम में मैथिली सँ एम.ए. आ एम.एड सेहो कयलीह। राजकीय बालिका विद्यालय, बाकीपुर, पटना सँ व्याख्याता के पद पर सँ अवकाश प्राप्त कयलीह। एम्हर हुनक अभिनय मे अभिरुचि कैँ कारण कलाकारक यात्रा से हो चलि रहल छल। लगभग दूइ सय सँ बेसी नाटक, बहुत रास मैथिली, भोजपुरी आ हिन्दी फीचर फिल्म टेलिफिल्म आ धारावाहिक सभ मे सफल अभिनय करैत रहली। आकाशवाणी पटना सँ कथा-वार्ताक वाचनक संगहि रेडियो नाटक मे सेहो हुनक सहभागिता रहलनि। कम्पीयरिंग नैमित्तिक उद्घोषणाक कार्य सेहो करैत रहलीह। हालाँकि प्रेमलता जी कैँ यात्री जी (जे हुनक कक्का छलथिन) बड्ड मानैत रहथिन वयैह हुनका आकाशवाणी लऽ जा कैँ अधिकारी लोकनि सँ परिचय करौलथिन।

डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क साहित्यिक यात्रा मे 'ओ दिन ओ पल' (संस्मरण), 'एगो छलिह सिनेह' (कथा प्रसंग) आ शोधग्रंथ 'शेखर प्रसंग' तऽ उल्लेखनीय अछिए, आ संग-संग संध्या गोष्ठी कैँ सम्पादन सेहो अनवरत चलि रहल अछि।

डॉ. प्रेमलता जीक पारिवारिक परिवेश सेहो भरल-पुरल अछि। आदरणीय (स्व.) महेश्वर बाबू 2018 ई. मे संग छोड़ि देलखिन ओ बैकुण्ठधामवासी भऽ

गेलाह। हम हुनका निधन सँ किछु समय पूर्व पटना गेल रही तऽ हुनक दर्शन कऽ आशीर्वाद प्राप्त कयने रही। जेठ सुपुत्र मनमोहन मिश्र, केन्द्र सरकार मे कार्यरत छथि। दोसर सु ुपुत्र रविरंजन मिश्र केन्द्र सरकारक प्रतिष्ठान मे छथि। छोट सुपुत्र सत्यजीत मिश्र छन्हि। सुपुत्री अनुपमा मिश्र आ जमाय डॉ. चन्द्र नाथ मिश्रक संग-संग पौत्र-पौत्री, नातिन सभ सँ भरल-पुरल परिवारिक पृष्ठभूमि छन्हि।

डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' जाहि साहित्यिक वातावरण मे पैघ भेलीह ताहि मे अनेको संस्था, समिति सँ सरोकार रहनाय भेनाय स्वाभाविक प्रक्रिया छैक। अपने अनेको संस्था मे अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्षक रूप मे अपन सेवा देलियै। चेतना समिति, पटना, भंगिमा आ अरिपन (नाटक), मैथिली महिला संघ, पटना, बिहार संगीत नाटक अकादमी, पटना, वंदना रानी केन्द्र शामिल अछि। वर्तमान मे पुन: चेतना समितिक उपाध्यक्ष निर्वाचित भेलीह अछि। डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' जाहि सांस्कृतिक संसार सँ अपन सरोकर रखलैथ अछि ताहि मे बहुतरास सँ सम्मानित भेनाय स्वभाविक छैक। ओ सभ संस्था समिति धन्य भेल जे अपनेक सम्मानित कयलक अछि। जाहि मे- चेतना समिति- पटना, अरिपन- पटना, मिथिला विकास परिषद- कलकत्ता, अखिल भारतीय मिथिला संघ- दिल्ली, बिहार आर्ट थियेटर-पटना, प्रांगण-पटना, विद्यापति सेवा संस्थान- दरिभंगा, मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति- गुवाहाटी, असम, मिथिला सांस्कृतिक संगम- प्रयाग, भारतीय छात्र संगठन-पटना, बिहार आ पटना रोटरी क्लब शामिल अछि।

डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' कैं जेना हम देखलियैन्ह चिन्हलियैन्ह आ आशीर्वाद भेटल ओ सभ बात बीच मे मोन पड़ैत अछि। ओ गृहलक्ष्मी, शिक्षिका, मैथिली-भोजपुरी-हिन्दी रंगमंच, सिनेमाक माँजल कलाकार छथि, जे विश्व पटल पर अंकित अछि। ओ स्वयं मे अद्भुत अतुलनीय सशक्त साहित्य-संस्कार संस्कृतिक धरोहर छथि। विलक्षण प्रतिभाक चिरस्मरणीय विदूषी

स्वर्ण हस्ताक्षर छथि। ओ हमरा इ कहबा मे कनियो असौकर्य नहि कि, ओ सम्पूर्ण मिथिलाक स्वर्णिम हस्ताक्षर छथि। हुनका लेल कहल जा सकैछ अछि जे- 'को नहि जानत है जग मेंे कपी संकट मोचन नाम तिहारो'। ओ मिथिलाक ललना लेल- भूत, वर्तमान आ भविष्यक प्रेरणाक स्रोत छथि।

1976 ई. मे जखन हम पटना आगु के पढ़ाई लेल आयल रही तखन राजेन्द्र नगर पटना के राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मे नामांकन भेल छल। पहिल बेर 1977 ई. मे चेतना समितिक 'विद्यापति स्मृति पर्व समारोह' देखने रही। जे हार्डिंग पार्क मे भेल छऽल। देखने रही रवीन्द्र जी-महेन्द्र जीक जोड़ी मायानन्द बाबूक तिजोरी, तेसर दिन नाटक। समय बीतैत गेल हमहूँ हाई स्कूल आ कॉलेज सँ अपन पढ़ाई पुरा कयलहुँ। अनेको विद्वान लोकनि कैं दूर सँ देखैत रहलहुँ। डॉ. प्रेमलता मिश्र सँ पहिलबेर नजदीक सँ हमर साक्षात् 2001 ई. मे चेतना समितिक सपत्नी आजीवन सदस्य बनलाक बाद भेल, कियैक कि नौकरी-चाकरी के चक्कर मे पटना-गुवाहाटी करैत छलहुँ। मुदा 2001 सँ 2005 ई के अगस्त धरि पटना मे रहबाक कारणे चेतना समितिक कार्यालय मे समय-समय पर गेनाय रहैत छल। जाहि ठाम मैथिली-मैथिल विद्वत मंडली सँ भेट-घाँट भेनाय आम बात छल। ओहि समय मे डॉ. प्रेमलता मिश्र जी सँ भेट-घाँट भेल। हुनकर व्यक्तित्व सँ एतेक प्रभावित भेलहुँ कि की कहू? सदैव स्नेहाशीष सँ हऽम लाभान्वित रहलहुँ। हुनक एतेक आशीर्वाद रहैत छल जे कहियो काल बेली रोड घर पर आबि जाथि। कल्पना (हमर धर्मपत्नी) के सेहो स्नेहाशीष दैत रहलथीन। हमहु हुनक निवास स्थान पर कतेको बेर गेल होयब। अहि प्रकारेँ जखन 2005 के अगस्त मे हम सभ पुन: पटना सँ गुवाहाटी आबि गेलहुँ तखनो प्रेमलता जीक आशीर्वाद भेटैत रहल। कोनो एहन अपना सभक पावन-तिहार नहि बीतल, जाहि मे हुनकर फोन नहि आयल होय, चाहे कल्पनाक मोबाइल पर वा हमरा पर। खास कऽ के जखन हमर अध्यक्षता काल मे मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति विद्यापति स्मृति पर्व

समारोह 2012 ई. के दिसम्बर मास मे मुख्य अतिथिक रूप मे मंच पर ओ विराजमान भेलीह। तखन मिथिलाक समस्त पूर्वोत्तर मे रहनियार मैथिलजन हुनका लग सँ देखि सकलाह। समाजक बहुत लोक सभ हमरा धन्यवाद ज्ञापित कयलाह, जे ऐहन विलक्षण व्यक्तित्व सँ भेंट भेलन्हि आ करीब सँ देख सकलैथ। गुवाहाटी आगमनक हुनकर पहिल शर्त छऽल कि हम होटल मे नहि रहब- ओ कहली हमरा होटल मे नीक नहि लगैत अछि, हऽम तँ अहिँक घऽर मे कल्पना संग रहब। हम स्वीकार कऽ लेनय रही। हमरा सभक भाग्य जे ओ तीन दिन धरि कार्यक्रमक बाद घऽर मे संगेहि छलीह। दोसर बेर सेहो 2014 मे पैघ सुपुत्र मनमोहन जी कैँ संग गुवाहाटी आयल छलीह। आबै सँ पहिने पटना सँ हमरा फोन कयलीह जे हम नवम्बर मे गुवाहाटी आबि रहल छी। मनमोहन बाबू तँ होटल मे रहताह, मुदा हऽम तँ होटल मे नहि रहब। हम आग्रह आ निवेदन कैलियैन्ह जे अहाँक घऽर तऽ गुवाहाटी मे अछिये, अहाँ होटल में कियाक रहब। फेर हऽम सम्मानपूर्वक घऽर अनलियैन्ह। दू दिनक प्रवास मे हऽम दुनू प्राणी फेर एकबेर हुनक सान्निध्य सँ लाभान्वित भेलहुँ। सच कहि त जखन पहिल बेर हमरा भेट भेल छलीह तखने हमरा लागल जे हमर जेठ बहिन मुद्रिका के आभास भेल छल। अन्तर खाली लम्बाई मे छल। हम सभ भाय-बहिन कनी लम्बे-लम्बे छी। जेठ बहिनक छवि देख हमरा बड्ड नीक लागल आ आत्मीयसुख भेटल। अत: प्रेमलता जी कैँ हम अन्त:मन सँ पैघ बहिन मानैत छियैन्ह। मुदा कल्पना तँ 2012 मे हुनकर गुवाहाटी प्रवासक समय अपन सम्बन्ध फरिया लेनय छलीह- दीदी कहि कऽ। ओना मिथिला मे तँ 'दीदी' के मतलब पिताक बहिन भेल। मुदा बंगाल मे 'दीदी' के मतलब पैघ बहिन भेल। कल्पनाक नेनपन बंगाली बहुल क्षेत्र मे बीतल अछि ताहि दुआरे 'दीदी' वला बात फरिछौत कऽ लेलथि। हऽम तँ बेसी समय पहिने सँ पटना मे रहल छी तैँ ओतहु सभ बड़की बहिन कैँ 'दीदी' कहैत अछि। सार्वजनिक रूप सँ हमहुँ पैघ बहिनक उत्तरदायित्व आब सँ हुनके देलियैन्ह।

अंग्रेजी मे कहल जायत अछि- 'लिविंग लिजेंड' से छथि हमरा सभक लेल डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'। सादगी पूर्ण जीवन, उच्च विचार, सात्विक व्यवहार, चिर-स्मरणीय कलाकार, अनुपम-अनमोल धरोहर!
-प्रेम कान्त चौधरी, मो. : 7002605261

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१६.कमलेंद्र झा 'कमल'- मिथिलापुत्री

कमलेंद्र झा 'कमल'

मिथिलापुत्री

जिनकर तन-मनमे मिथिलांचल
कमला-कोसी नयन विशेष!
मुट्ठीमे आकाश भरल हो
आँचरमे धन-धान्य अशेष!!

मस्तक हो उत्तुंग हिमालय
पदतलमे बंगालक वेश!
अंतर्तम चर-चाँचर विस्तृत
भाव भरल लोरिक सलहेस!!

श्वास तथा प्रश्वास मलययुत
दृष्टि प्रभात-साँझ अवशेष!
वाणी सीताराम समर्पित
आठो याम उमाशैलेश!!

ई केयो नहि आन---सभक प्रिय
प्रेमलता दीदी भावेश
'कमल' अकिंचन 'मिथिलापुत्री'
नमन,समर्पण काव्य-सनेस!!

-कमलेंद्र झा 'कमल', दिनांक २९/१०/२२

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१७.लक्ष्मण झा सागर- प्रेमलता बहिन

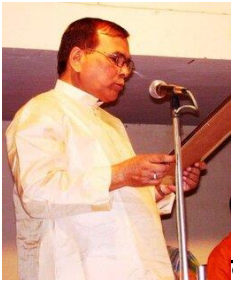

लक्ष्मण झा सागर

प्रेमलता बहिन

सही मे अपन बहिन जेकाँ वा कही तऽ ताहू सं पैघ जं कोनो सहोदरा सम्बन्ध होइ छै से छथि हमरा लोकनिक आदरनिया जेठकी बहिनदाइ डा प्रेमलता मिश्र प्रेम। से हमरे टा नै।मैथिली साहित्य संसारक हमरा सन कतेको लोकक दीदी बनलि छथि प्रेमलता जी। असल मे अपन माए बापक एकसरि संतान छथि प्रेमलता दीदी। तेँ अपने कहैत छथिन जे हम एकसरि नै छी। सम्पूर्ण मैथिलीक साहित्यकार के अपन भाय बहिन कहैत छथिन। आ से जे बात छियै सब गोटे हिनका तहिना स्नेह आ सम्मान दैत छनि।

हिनक जन्म २९.९.१९४८ ई के भेल छलनि दरभंगा जिलाक रहिका गाम मे। कहि सकैत छी जे स्वतन्त्र देश भारत मे। पिताक नाम रहनि दीनानाथ झा जिनका लोक सभ वैद्य जी कहनि। मायक नाम रहनि वृन्दा देवी। माय हिनक नीक कुल शीलक लोक रहथिन। नेने सं शास्त्रीय संगीत मे रूचि रहनि। हिनक माम चण्डेश्वर खाँ के इलाका मे सब चिन्हैत रहनि। नीक चलता पुर्जा वाला लोक आ दस उपकारी रहथिन। माताराम ताहि जमानाक मिडिल पास

रहथिन। संस्कृत परहैत आ अलजेब्रा बनाबैत अपन माय के देखने रहथि प्रेमलता जी।

हिनक वियाह १२ बर्खक उमेर मे माहेश्वर मिश्र जी सं भेल रहनि। सासुर रहनि सीतामरही लग सीरसी प्रखंड क नामपुर गाम। हिनकर वियाहक खेरहा बर रोचक अछि। सभागाछी सं वियाह भेल रहनि। वियाहक कोनो पूर्व सूचना हिनका नै रहनि। बारह बरखक वयस कोनो वियाहक थोड़बे होइत छलैक। ई अपन गामेक ईसकुल मे लिखाइ परहाइ करैत छलीह। सांझ भरली आने दिन जेकाँ खाय पी के सुति रहल छलीह। सुतली राति मे हिनका जगौल गेल। आ गीत नादक संग बेदी गारि के पण्डित के बजाय के हिनक वियाह भऽ गेल रहनि। ने बरियाती ने सरियाती ने कोनो शहनाइ आ ने कोनो शोभा सुन्नर।

वियाहक साले भरिक बाद प्रेमलता जीक जिनगी मे एकटा बरका अन्हर बिहारि आयल। माय आ बाप दुनू गोटे हिनका छोरि ऊपर चल गेलखिन। गामक लोक कहैक जे प्रेम के वियाहे दुआरे माय बाप जीबैत छलखिन। तहन तऽ बेचारी प्रेम लता जेकाँ मिसरजी संग लिपैट गेल रहथि। बोलो भरोस दै वाला लोक अपन कियो नै छलनि। सगर तलाब मे एसगर ईचना मांछ बनलि छलीह। अपन भागे आ माय बापक आशीर्बाद सं हाथ पकरिनिहार मिसर जी आ सासु ससुर धरि बर नीक भेटलखिन जे हिनका कहियो कोनो वस्तु वा बातक तकलीफ नै हुअय देलखिन।

प्रेमलता जी पर मायक संस्कारक असरि भेलनि। नेने सं हिनक सोच विचार आ क्रिया कलाप प्रगति गामी होइत रहल।हिनका जिनगी मे किछु नीक काज करबाक अभिलाषा जागल रहलनि। जहन लोक अपन धि बेटी के घर सं बाहर एकसरि नै निकलय दैत छल ताहि समय मे प्रेमलता जी नाटक के रिहर्सल करैक लेल एकसरि बाहर जाइत रहलीह। आ एकटा समय एलैक जहन

प्रेमलता मिश्र प्रेम एहन पहिल मैथिल महिला भेलीह जे नाटक मे स्त्रीक भूमिका करय लगलीह। से एक नै अनेको। आब तऽ चलचित्र मे सेहो मायक भूमिका मे रहय लगलीह अछि। आइ जे हमरा सभक बीच मैथिलानी रङकर्मीक एकटा बरका फौज तैयार भेलीह अछि तिनका सभक जरि मे कोनो मे कोनो रूपमे प्रेमलता मिश्र प्रेमक योगदान अछि से बात किनको सं छपित नै अछि।

मुदा, एतबी हिनक परिचय नै अछि।पटना मे रहि के नाटको करै छलीह आ परहाइ सेहो जारी रहलनि। एम ए केलनि। पी एच डी केलनि। डा प्रेमलता मिश्र प्रेम भऽ गेलीह। तहिया बांकीपुर वालिका उच्च विद्यालय पटना नगर निगम के अधीन छल।बाद मे बिहार सरकारक अधीन भऽ गेल। तै ईस्कुल मे शिक्षिका बनलि नोकरी केलनि। फेर लेक्चरर भेलीह। ४० बरख ईस्कुल कौलेज मे अपन सेवा दैत २००८ ई क सितम्बर मे अवकाश ग्रहण केलनि।

नोकरी मे छलीहे तखने सं यात्री जीक (कक्का कहैत छलीह) कहला पर पटना आकाशवाणी मे अपन कार्यक्रम करैत छलीह। वटुक भाइ सं तहिये सं सम्पर्क रहय लागल छलनि। वटुक भाइ सेहो नाटक के लोक। दुनू गोटे नोकरीयो करथि आ नाटको खेलाइथ। नाट्य संस्था (अरिपन आ भंगिमा) क कोनो नाटकक आयोजन होइक त वटुक भाइ आ प्रेमलता जी पूर्ण रूपेँ सक्रिय रहैत छलीह। से समय प्रेमलता जीक रङकर्मीय जीवनक स्वर्णिम काल छल। अपन सब रङ्कर्मी भाइ बन्धु संग हिनक आत्मिक लगाव रहलनि सभ दिन। सब गोटे हिनका मानितो तहिना रहनि। रङकर्मक नव तुरक ई मेंटर बनलि छथि। मैथिली रङकर्मक कोनो इतिहास हिनका छोरि के अधुरा अछि आ रहत।

अपन अवकाश ग्रहण के समीप अबैत देखि हिनका मोन मे एकटा विचार अयलनि जे आब घर पर बैसि कोना समय बीतत। प्रेमलता जी अपन एकटा सुझाव वटुक भाइ, रामानंद झा रमण आ अजित आजाद जी सं शेयर केलनि

जे मास मे हमरा लोकनि एक ठाम बैसै जाइ। आपसी कुशल क्षेम हो। साहित्यिक चर्च वर्च हो। सब गोटे अपन टटका रचना आनी। पाठ करी। ताहि पर विचार हो। विमर्श हो। बात सब गोटे कें जंचि गेलनि। बात रहल जे कतय बैसी। प्रेमलता जी अपना घर पर ले बैसार गछि लेलखिन। आ तकर बाद हुनका घर पर सब गोटे मास मे एक दिन के सांझू पहर गोष्ठी करय जाय लगलाह। ई क्रम एखनो जारी अछि। एहि गोष्ठी मे मैथिली सं बेसी आब हिन्दीक साहित्यकार सब आबय लगलाह अछि।

कालक्रमे एकटा आर नव आ नीक बात सबहक सोंझा आयल। निर्णय भेल जे कियैक ने साल मे एकटा पत्रिका निकालल जाय। सत्रह अप्रैल २००८ जूरि शीतल दिन सं सांध्य गोष्ठी नामक पत्रिका प्रेमलता मिश्र प्रेम जीक संपादन मे पटना सं निकलय लागल जे अध्यावधि निकलि रहल अछि। एहि पत्रिकाक प्रत्येक अंक महत्वपूर्ण त अछिये जे लोक सभ धराऊ जेकाँ सब अंक सहेजि के अपन अपन घर मे रखैत छथि।ई अपना आप मे प्रेमलता मिश्र प्रेम जीके एक कुशल आ प्रखर संपादिका हेबाक पुष्टि करैत अछि।

हिनका जीवन मे ११.८.२०१८ एकटा कारी स्याह दिन बनि के आयल। अही दिन हिनका सीथक सिनुर मेटायल गेल। हाथक चूरी फोरल गेल। अपन तीन टा बेटा आ एकटा बेटीक संग हिनका छोड़ि के मिसर जी ततेक दूर चलि गेलाह जतय सं कियो आपस नै अबैत अछि। तहन त दुनियाँक जे रीति छै से हिनको मानि के संतोख करय पड़लनि। आब त अपनो जीवनक अमृत महोत्सव के नजदीक आबिये गेलीह अछि। मैथिलीक नाट्य संसार हिनक कृत्य सं हिनका माथ पर रखने छनि। एहेन सम्मान बर कम्मे लोक के नशीब होइ छै, से हिनका भेल छनि आ ताहि सम्मान सब सं प्रेमलता जी जीविते किम्बदन्ती बनि गेल छथि।

हमरा हिनका सं पहिल भेंट आ परिचय पात मित्रवर कुणाल जी करेने छथि पटनाक विद्यापति भवन मे १९८६ ई मे। हम सपरिवार असाम सं गाम अबैत काल पटना मे यात्रा के तोरैत सांझ मे विद्यापति भवन देखय गेल रही। ओही ठाम भेंट भेल छल। हमर सार ब्रह्मानन्द सेहो संग मे रहथि। मात्र परिचय टा भेल छल। कोनो गप सप नै।

गप सप भेल कोलकाता मे गिरीश पार्क वाला बैजू जीक कार्यक्रम मे। रामलोचन ठाकुर जी, प्रेमलता जी आ हम खूब नीक जेकाँ बरी काल धरि बतियाइत रहलौं। तकर बाद भेंट अछि मधुबनी मे २०१७ ई मे दिलीप कुमार झा जीक कार्यक्रम मे जाहि मे हमरा सम्मानित कैल गेल। अंतिम भेंट अछि कोलकाता मे वटुक भाइ संगे एकटा कार्यक्रम मे आयल छलीह। मुदा, सम्बन्ध मे जे प्रगाढ़ता हेबाक चाही से भेल रामलोचन ठाकुर जीक निखोज भेला पर। प्रत्येक दिन फोन करैत रहैत छलीह। ठाकुर जीक बारे मे अपडेट लैत छलीह। हम अनुभव कैल जे प्रेमलता जी ठाकुर जीकें बर मानैत छलीह। जहिया ठाकुर जीक देहांतक सूचना भेटलनि तहिया जे फोन पर हुनक विलाप सुनल से कहल नै जाय सकैत अछि। ठाकुर जी सेहो नाटक के लोक छलाह। तेँ हुनका सं भैयारी सम्बन्ध रहनि।

हम देखल अछि आ अनुभव कैल अछि जे प्रेमलता मिश्र प्रेम एक असाधारण महिला छथि। अपन भू भाषाक लेल पूर्ण रूपेँ समर्पित छथि। एखनो कोनो नाटक आ सिनेमा लेल ककरो नै नहि कहैत छथिन। बहुत सरल, सहज आ मिलनसारि स्वभाव छनि। घमंड तऽ एक पाइ नै छनि। धिया पुता सब सैतल आ सुर्हियायल छनि। हाले मे चेतना समिति, पटना के उपाध्यक्ष पद पर निर्वाचित भेलीह अछि। माँ मैथिली हुनका दीर्घायु राखथि!

अंत मे हम विदेह परिवारक समस्त टीम कें विशेष रूपेँ आयुष्मान आशीष अनचिन्हार जीक प्रति कृतज्ञ छी जे हमरा मिथिलाक एहेन स्वयं प्रभा पर लिखबाक लेल उपयुक्त बुझलनि। आ हम चेष्टा कैल अछि जे अपन बिषय पर केन्द्रित रहैत विदेहक पाठक कें किछु नव जानकारी भेटनु।

-लक्ष्मण झा सागर, कोलकाता/ २९.१०.२०२२

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१८.गजेन्द्र ठाकुर- प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क बहन्ने

गजेन्द्र ठाकुर

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क बहन्ने

बहुत पुरान गप्प। पटनामे स्कूलक संगी सभ मैथिली भाषीकेँ सांस्कृतिक रूपमे श्रेष्ठ हएब मानि गेल छल। मिथिला चित्रकला बा सिक्की-मौनीक कारण नै। हम पुछने रहियै- "से की भेलौ अनचोक्के?"

ओ मगही भाषी छल, उत्तर देलक- "पटनामे तोरा सभक कार्यक्रम गेल रही, कुमारि, बियाहल महिला सभ मंचपर सांस्कृतिक कार्यक्रम आ नाटकमे भाग लऽ रहल छली। तूँ सभ बड्ड एडवान्स छेँ।"

ओ कोनो मैथिलीक पर्व समारोह गेल छल आ नीलम चौधरीक नृत्य देखने छल आ प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क अभिनय सेहो। कतेक मुश्किलसँ महिला मंचपर जाइ छथि आ आंगुरपर गानल जा सकैत छथि, ऐसँ ओकरा कोनो मतलब नै रहै, ओ हमरा सभकेँ एडवांस मानि लेने छल। हमहूँ कएक बेर ऐ समारोह सभमे गेल रही, प्रायः १३ बर्ख आ २१ बर्खक बीचक उमेरमे। आ एक्सपर्ट कमेण्ट सुनैत रही।

"ऐं यौ, पर्दा कहाँ छै, कोठियामे अरुण बाबू सभजे नाटक खेलाइ छथि ओइमे तँ रङ-बिरङक पर्दा रहै छै।"

"बाबू कुणाल डाइरेक्टर छथि, खाली प्रकाश आ अन्हारक प्रयोगसँ सीन बदलै छथि। नाटकक बड्डु जानकार, हुनकर मानब छन्हि जे पर्दाक प्रयोग भेल नै आकि नाटक आधुनिक नै कहाओत।"

"आ बीच-बीचमे कॉमिक?"

"से सभ किछु नै, कुणालक नजरिमे ओ सभ नकली नाटक भेल।"

तखने लाइट चलि गेलै, मुदा पेट्रोमेक्स तैयार आ अक्कूक कॉमिक लाल आ हरियर सिन्दूरबला हास्य-कणिका जइ महिलाक पति प्रायः रेलवेमे छलै, से शुरुह भेल, बीचेमे।

"पहिल दिन नै एलौं?"

"पहिल दिन कोनो काजक कार्यक्रम नै होइ छै, धोइध बला सभक भाषण आ सड़ल-पाकल कविता के सुनत?"

मुदा सोङरपर ठाढ़ कएल गेल छै ऐ नाट्य-संस्था आ समारोह सभकेँ, साहित्योकेँ, तइसँ हमर संगीकेँ कोनो मतलब नै रहै। कानक सुनलपर ओ विश्वास करत आकि आँखिक देखलपर। मैथिलीक साहित्य उन्नत, ओतऽ महिला मंचपर अबैत छथि, प्रवासी मैथिलमे एकता छै तँ नँ। एक्के जाति छै तँ की, दोसर जातिक पात्र तँ नाटकमे छैहे किने? थोपड़ी ओकरे देखि कऽ तँ पड़ै छै, भले अपमानित करैबला डाइलोग घोसिया कऽ।

२००९ ई. क कोनो दिन।

एकटा फोन आयल-

"हमर नाम छी छत्रानन्द सिंह झा, नै चिन्हने हएब, हमरा लोक बटुक भाइ कहै छथि।"

"हम छत्रानन्द सिंह झा नामसँ अहाँकेँ बेशी चिन्है छी। ओइ समय 'भारती' कार्यक्रम आकाशवाणी पटनासँ होइ छलै, साढ़े पाँच बजे साँझसँ ६ बजे साँझ धरि। बृहस्पति आ रवि दिन। दिनो हमरा मोन अछि, कारण चितकोहड़ामे हाट लगै छलै ओही दू दिन, से तरकारी किनै लऽ हम दुनू भाँइ जाइत रही झटकारि कऽ, जे साढ़े पाँच बजे धरि घुरि कऽ आबि जाइ। आ ओइ कार्यक्रममे अहाँक नाम बटुक भाइ कहियो नै छल।"

"हम प्रेमलताजीक डेरापर छी, कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल शुभकामना आ लिअ प्रेमलता जी सेहो गप करती।"

प्रेमलता जी सेहो शुभकामना देलन्हि।

मंत्रेश्वर झा जी समय-साल मे हमर बिनु नाम लेने एकटा व्यंग्य लिखलन्हि, जे एक गोटेक पञ्जीपर मोटका किताब आयल छन्हि, आ ओ पञ्जी आधारित व्यवस्थाक पुनः उद्धार करऽ चाहैत छथि।

पढ़ि कऽ ओ लिखैत छथि, तखन किए ओ से लिखलनि?

मुदा जखन पहिले अध्याय (प्राक्कथन)क दूषण पञ्जीक चर्च आ ओइमे नव्य-न्यायक जनक गंगेश उपाध्यायक पिता मृत्युक ५ साल बाद जन्म आ चर्मकारिणीक विवाह सहित मारते रास विवरणक चर्च शुरू भेल आ हम ईहो खुलासा केलौं जे केना रमानाथ झा ऐ विवरणकेँ "हिस्ट्री ऑफ नव्य-न्याय इन मिथिला"क लेखकसँ झूठ बाजि नुकेने छला, हुनका सहित सभ गोटे गुमकी लाधि देलनि, कारण पञ्जीक पोथीक आरम्भिक विरोधक असल कारण सोझाँ आबि गेल।

विदेह आगाँ बढ़ैत गेल, आ साहित्य अकादेमी सहित ओकर फण्डिंगबला एसोसियेशन/ संस्था सभ सोङ्गरेपर ठाढ़ रहल, हुकहुकाइत, मुदा ऐँठ-ऐँठ कऽ बजैत। हमरामे कमी अछि जे हम कोनो सभा-संस्थामे कम जाइ छी, मुदा २०१२ मे एकटा साहित्य-अकादेमी फण्डेड कार्यक्रमक बाद हमरा ई अनुभव भेल जे हुकहुकाइत संस्था सभमे सुधारक एकोरत्ती सम्भावना नै छै, आ मोटामोटी ई सभ हमरा आ विदेहसँ घृणा करैत अछि। ओहुनो हम कम्मे जाइ छलौं, से बन्दे कऽ देलिऐ।

फोन अखनो अबैत रहैत अछि, कवि सम्मेलन लेल, सेमीनार लेल, वेबीनार लेल, हम मना करैत छियन्हि (एतऽ धरि जे फेसबुकोपर फ्रेण्ड आ ग्रुपमे जखन हम मना करैत छियन्हि तखनो) आ ओ सभ ऐ लऽ कऽ उनटा-पुनटा बाजै छथि हमरा विषयमे, सभ नै किछु गोटे। हमर तँ एक्केटा शर्त अछि, मनुक्ख बनि जाउ आ हम अपन स्वाभावक विपरीतो आयब, ओना स्वभावक अनुसार हम ऐ सभ स्थानमे कम आबै जाइ-छी।

मनुक्ख केना बनी

पहिने साहित्य अकादेमी प्रसंग। किछु गोटे लिखने छला जे साहित्य अकादेमी हमरा आ विदेहकेँ मोजर नै दैत अछि तेँ हम सभ ओकर विरोध करै छी। से स्पष्ट भऽ गेल जे ओ सभ मोजर दै छथि आ विरोधक कारण अछि चोर-साहित्यकारकेँ, जकरा विदेह बैन कऽ देलक, तकरा साहित्य अकादेमीक मैथिली विभागक परामर्शदात्री सदस्य जातिक कारण बनेनाइ, ओइ जातिक जकर ऐ अकादेमीक मैथिली विभागपर एकछत्र राज्य छै, जकरा द्वारा मान्यताप्राप्त सातो लिटेरेरी एसोसियेशन ओही जातिक लोकक छै, जकर

अनुवादसँ लऽ कऽ सभ असाइनमेण्ट दोसर जातिक लेल प्राप्त करब असम्भवे छै, जकर नाटक-निबन्ध-कथासँ लऽ कऽ सभटा संकलनमे एक्के जातिक ९९% रचना छै (ओना ई सभ गोदाममे सड़बा लेल छापल जाइ छै)।

साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक प्रवेश लेल कोनो संस्थाक कोनो योगदान नै छै, ई एकमात्र जयकान्त मिश्रक व्यक्तिगत प्रयाससँ सम्भव भेल, आ तेँ ओकर कोनो फाएदा मैथिलीभाषीकेँ नै भेलै। एक जातिक किछु लोक पचास हजार- लाख टाकाक अनुवाद असाइनमेण्ट लैत छथि, आ ओहीपर हुनका अनुवाद पुरस्कार सेहो भेटि जाइ छन्हि से पचास हजार टाका आर।

भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक प्रवेश हुअय बा विकीपीडियामे मैथिली बा गूगल ट्रान्सलेटमे मैथिली बा तिरहुता आ कैथीक यूनीकोड, मूलधाराक कोनो संस्थाक कोनो योगदान ऐमे नै छै। भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक प्रवेश केना भेल तकर अभिलेखन हमर अंग्रेजी पोथी "A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE" मे कएल जा रहल अछि। हँ ऐ संस्था आ लोक सभसँ गूगल डेरा गेलै, विकीपीडिया डेरा गेलै आ भारत सरकार डेरा गेलै से फेसबुकपर पढ़बामे आबि जाएत। ओना जकरा बुते माछीयो नै मरै छै तकरासँ के डरतै? एकटा बात सेहो स्पष्ट हेबाक चाही जे मैथिली लेल विद्यापति पर्वसँ बेशी महत्व दुर्गापूजाक छै, एक तँ विद्यापति पर्वक जतेक प्रचार कएल जाइ छै अखबारमे से एकर लोकप्रियताक द्योतक नै अछि, ई मात्र एकर कर्ता-धर्ताक मीडियापर कब्जाकेँ देखबैत अछि। दोसर मात्र नाटक आ कुञ्जबिहारी लऽ कऽ दसटा लोक जुटै छै, नाटक बहुत ठामसँ निपत्ते छै। तेसर ऐमे जनसहयोग लगभग शून्य छै, आ एकर स्वरूप सेहो साहित्य अकादेमी सन छै बा एकरा सन साहित्य अकादेमीक छै, आ दुनू समाजमे कट्टरता पसारि रहल अछि। दुर्गापूजा गामे-गाम होइ छै, लोकक सहभागिता

रहै छै, सांस्कृतिक कार्यक्रम नाच आदि क माध्यमसँ ई समाजक सभ अंग आ महिला-पुरुषकेँ जोड़ने अछि, ई विद्यापति पर्व आ साहित्य अकादेमी आ ओकर संपोषित संस्था सभ द्वारा पसारल जा रहल घृणाकेँ न्यूट्रल करैत अछि आ तइसँ आगाँ समरसता पसारैत अछि। ई जानकारी विद्यापति पर्वक आयोजनकर्ता लेल अछि जे फाँड़ बान्हि कऽ कहने फिरै छथि जे दोसर जातिमे औकाति छै तँ ओहो अप्पन नायकपर पर्व करय। एतऽ स्पष्ट कऽ दी जे विद्यापतिक जे फोटो ऐ संस्था सभ द्वारा प्रस्तुत कएल जा रहल अछि सएह त्रुटिपूर्ण अछि। संगहि ओ लोकनि अवहट्ठ आ संस्कृतबला विद्यापतिकेँ कविकोकिल विद्यापतिक रूपमे असफल रूपेँ ढोल बजा-बजा कऽ प्रस्तुत कऽ रहल छथि।

तँ की चारू कात अन्हार अछि?

नै, नै तँ प्रेममोहन मिश्र किए साहित्य अकादेमीक मैथिली विभागक परामर्शदात्रीक पदसँ त्यागपत्र दइतथि। कॉलेज सभक कटऑफ देखबै तँ सभसँ कम हिन्दी आ मैथिलीक कटऑफ भेटत, आ ओइ परामर्शदात्री समितिमे वएह सभ सहसह करैत छथि। आ जतऽ साँप सहसह करत ओतऽ मनुक्ख केना रहि सकैए। से रसायन विज्ञानी प्रेममोहन मिश्र त्यागपत्र दऽ देलन्हि।

सहसह करैत साँपक बीच मनुक्ख केना बनी

प्रेमलता जीक तीनटा पोथीक समीक्षासँ पूर्व हुनकर सहसह करैत साँपक बीच हथियार छोड़ि देबाक चर्च करब आवश्यक। कारण ई अंक प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक अछि, अभिनन्दन ग्रंथ नै।

प्रेमलता जी कलाकार छथि, महिला कलाकार छथि, उच्च जातिक महिला कलाकार छथि। हमरा आशा छल जे ओ कलाकार रहितथि, सुच्चा कलाकार, बेशीसँ बेशी महिला कलाकार। मुदा परीक्षा काल ओ नै कलाकारे रहि सकली नहिये महिला कलाकार। भऽ गेली मात्र एकटा षडयंत्रक शिकार, जतऽ हुनका अपन महिला होयबाक आइडेण्टिटी आ अपन कलाकार होयबाक आइडेण्टिटी दुनू त्यागऽ पड़लन्हि।

घटना साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०२२, तीनटा जूरी रहथि, दूटा पुरुष (केष्कर ठाकुर आ राजन कुमार सिंह) आ एकटा महिला (प्रेमलता मिश्र 'प्रेम')। मुन्नी कामतक कविता संग्रह "अंततः", मुन्नी कामत- जिन्दगीक मोलक लेखिका आ असली फेमिनिज्मक कविता लिखनिहारि। ने रचनाक गुणवत्ता ने फेमिनिज्मक कोनो महत्व, मात्र जाति भारी पड़ल, ऐ पोथीकेँ केष्कर ठाकुर आ राजन कुमार सिंहक तँ छोड़ू प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क सेहो वोट नै भेटलै। सभकेँ दाम चुकाबऽ पड़ै छै, साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यताप्राप्त कथित लिटेरेरी एसोसियेशनक उपाध्यक्ष बनबाक दाम चुकेलन्हि प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', नै अड़ि सकलीह, अपन वोट अप्पन होइ छै, मुदा हिनकर वोट पुरुष बहुमतक, जाति बहुमतक संग चलि गेल।

शेखर प्रसंग, ओ दिन ओ पल आ एहो छली सिनेह

शेखर-प्रसंग 'सुधांशु शेखर चौधरी' पर हुनकर शोधक आधारपर रचित पोथी अछि। 'ओ दिन ओ पल' आत्मकथा होइत-होइत बचि गेल अछि आ ई अछि संस्मरण संग्रह। 'एगो छली सिनेह' अछि कथा-संग्रह जकर किछु कथा हमरा आश्चर्यचकित केलक।

शेखर प्रसंग

शेखर-प्रसंग 'सुधांशु शेखर चौधरी' प्रसिद्ध सम्पादकजी पर हुनकर शोधक आधारपर रचित पोथी अछि, पहिल अध्यायमे व्यक्तित्व आ कृतित्व, दोसर अध्यायमे कृति विवेचन, तेसर अध्याय मे हुनकर हिन्दी रचना आ चारिम अध्यायमे उपसंहार अछि।

ऐ पोथीक उपसंहारमे एक ठाम वर्णित भेल अछि जे केना उदयचन्द्र झा विनोद हुनकासँ भेँट करबाक लेल मिथिला मिहिर कार्यालय गेल छलाह मुदा ओ वाम हाथसँ लिखबामे तल्लीन छलाह। ओ एक्के बेर रचना फेयर कऽ लैत छलाह, मोनेमे काँट-छाँट कऽ लैत छलाह।

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ तँ ततेक तेजीसँ सोचैत छलाह जे ओ शॉर्टहैण्डमे लिखैत छलाह जे तारतम्य नै टूटय, आ हुनकर पर्सनल असिसटेण्ट ओकरा लौंहहैण्डमे टाइप करथिन।

मिथिला मिहिर लेखकक एकटा सेना तैयार केलक, सहस्राधिक लेखकक।

ओ दिन ओ पल

ऐ मे १२ टा संस्मरण अछि।

हमर कक्का:यात्रीजी- ऐ संस्मरणमे एकटा घटनाक चर्चा करब आवश्यक अछि। यात्रीजीक जेठ बेटीक संग प्रेमलताजी भानस करथि, मुदा यात्रीजी हुनका दुनू गोटेकेँ एक दिन सप्ताहमे छुट्टी देलखिन्ह आ ओइ दिन हुनकर जेठ

बेटा शोभा मिसर भानस करथिन्ह से निर्णय देलन्हि। प्रेमलता जी लिखैत छथि-

"अधिकारक बोध करओलनि कक्का।"

सत्य, जतऽ आइयो जनसंख्यामे डोमेस्टिक काजकेँ बेरोजगारी बा बिनु अर्जनबला काज मानल जाइ छै, ई गप आह्लादित केलक। कक्का नहि रहलाह।

काका, काकी आ...: ऐमे ने काकाक नाम छन्हि ने काकीयेक। हम ई ऐ दुआरे कहि रहल छी जे हमरा रहिकाक ऐ भगिनमानक नाम जनबाक उत्कण्ठा अछि। किए अछि? कारण ऐ संस्मरणमे काकीकेँ सम्बोधित कऽ प्रेमलता जी लिखैत छथि-

"ओ प्रथम मैथिल महिला मंच पर आयलि छलीह, आ से हमरा लेल सभदिन प्रेरणाक आधार रहल अछि।" से हुनकर नाम जनबाक सभकेँ इच्छा हेतन्हि आ प्रेमलता जी से करतीह से आशा अछि, ओना लोकक जिनगी बीति जाइ छै काकी-काकी करैत मुदा ओकर नैहर गामक पता तँ चलैत छै, काकीक नाम नै पता चलै छै।

अही संस्मरणमे सोङरपर ठाढ़ नाट्यमंचक प्रमाण सेहो देल गेल अछि जतऽ प्रेमलता जी पर कटाक्ष करैत कियो कहै छथि- "... हरिमोहन बाबू चाली केँ फूकि कऽ साँप बना रहल छथि।"

कठघरामे ठाढ़ हम: ई संस्मरण सुधांशु शेखर चौधरी पर अछि। ओ हिनका एकबेर कहने रहथिन्ह जे नाटक लिखबा काल प्रेमलता जेना हुनका सोझाँ आबि जाइ छथिन्ह आ ओ सम्वाद ओ प्रेमलते लेल लिखैत छथि।

स्मृति-तर्पणक दू शब्द: ई संस्मरण पं. जयनाथ मिश्रक छन्हि प्रेमलता जीक अनुसार जनिकर मानसपुत्री 'मैथिली महिला संघ' अछि।

नारी-जागरणक अग्रदूत, नचैत रहल ओ क्षण सभ, बेर-बेर भसिया जाइत छी: ई तीनू संस्मरण हुनकर नैहर रहिकाक अछि। अही क्रममे ई तीनू संस्मरण नै अछि मुदा एकटा कारणसँ हम एकरा एक ठाम रखने छी। पहिलमे शिक्षक आ पिता रंगमंचपर हिनकर प्रवेशक पक्षधर रहथि, मुदा गौँआ सभक कारण ई सम्भव नै भेल, दिन मे ओना रिहर्सल कालमे गीतपर नृत्य केने रहथि, उमेर रहन्हि १३ बर्ख (सन् १९६१)। नाटक गोविन्द झा क 'बसात' रहै, से संस्मरणमे गोविन्द झा सेहो सम्मिलित भेलाह जखन प्रेमलता जी पछाति पटना गेलीह आ गोविन्द झा क कएकटा नाटकमे अभिनय केलन्हि। दोसरमे हिनकर उमेर रहन्हि ३७-३८ बर्ख (सन् १९८५-८६) आ वएह गौँआ सभ हिनका २४-२५ बर्ख बाद गामक विद्यापति पर्वमे मुख्य अतिथि बनेलकन्हि आ हिनकर बेटी अन्नूकेँ मंचपर गाबय लेल बजेलकन्हि। आ स्टेजसँ उतरलाक बाद २३ बर्ख बाद हिनका अपन गुरुजी सीतानाथ झाक दर्शन भेलन्हि जे प्रेमलता जीक नाम पुकारल जेबाक बाद अदहे खेनाइपरसँ उठि कऽ झटकारि कऽ आबि गेल छलाह। तेसर संस्मरणमे बिनु सह-कलाकार संग रिहर्सलक रहिकेमे नाटकमे अभिनयक गौंआ उदय चन्द्र झा 'विनोद'क आग्रहकेँ अस्वीकार केलन्हि, नाटक महेन्द्र मलंगियाक छल आ नाटक छल- 'ओकर आंगनक बारहमासा', ईहो लिखै छथि जे सभखन सभकेँ प्रसन्न नै राखल जा सकैए *(उदय चन्द्र झा 'विनोद' अही अंकमे लिखै छथि जे प्रेमलता जी मानि गेल छलीह, मुदा गौँआ सभक प्रबल विरोधक कारण ओ दर्शकेँ दीर्घामे रहलीह आ प्रेमलता जीक ई अपमान हुनका एतेक खराप लगलन्हि जे रहिकाक त्रिदिवसीय विद्यापति पर्वमे तकर बाद कोनो नाटक नै भेलै।)*। तेसरे संस्मरणमे कोनो नजदीकी महिलाक चर्चा अछि

जे हिनका कहलखिन्ह जे धन्य बटुक भाइ जे अहाँक बेटीक बियाह भऽ गेल आ आब अहाँ किछु बेशी बाजऽ सेहो लागल छी।

रंगयात्रासँ महायात्रा धरि:मैथिली नाटकक निर्देशक पं. त्रिलोचन झा प्रसिद्ध गुरुजी क संस्मरण ऐ आलेखमे अछि। ऐ सँ पहिने हिन्दीसँ निर्देशक आयातित होइत छलाह। पहिने ओ राजदरभंगाग थियेटरमे रहथि, ओ बन्द भऽ गेल। फेर चर्चा अछि कलकत्ताक मूनलाइट थियेटरक आ ओहो बन्द भऽ गेल तखन ओतुक्के 'यात्रा पार्टी'मे गेलाह मुदा ओतऽ मैथिली रंगसंस्था 'मिथियात्री (सहयोगी दयानाथ झा, गुणनाथ झा आ श्रीकान्त मण्डल)' सँ जुड़लाह।

यात्रा पार्टीमे घुमब जखन पार नै लगलन्हि तँ कमलनाथ सिंह ठाकुरक माध्यमसँ पटना चेतना समितक रंगमंच विभागसँ जुड़ि गेलाह।

मुदा एतऽ सेहो सोंगरपर ठाढ़ मैथिलीक चर्चा भेटैत अछि-

".. परिवारक अन्य सदस्यकेँ रंगमंचसँ वा रंगमंचक चर्चासँ फराक रखलनि।"

श्रीकान्त मण्डल: ७ जनवरी १९९४, श्रीकान्त मण्डलक मृत्यु। राजकमल चौधरीक 'ललका पाग' कथापर फिल्म बनेबा लेल फाइनेन्सर ताकि लेने छलाह, कन्ट्रैक्ट पर हस्ताक्षर भऽ गेल, गीत रेकर्ड भेल। प्रेमलता जी लिखै छथि जे ई गीत ओइ बर्खक विद्यापति पर्वमे लोक सुनबो केलक।

मुदा एकटा व्यक्तिक मृत्यु माने एकटा संस्थाक मृत्यु, से ने ओ गीते आब अछि आ नहिये ओ फिल्म बनल। मात्र व्यक्तिगत प्रयाससँ सोंगरपर ठाढ़ कएल काज, श्रीकान्त मण्डल सोंगर छलाह, ओ गेलाह आ हुनकर आ हुनकर गीतक चेन्हासी धरि मेटा गेल, बा मेटा देल गेल।

रंगकर्मी प्रमिला: श्रीनारायण झा प्रसिद्ध 'सर' आ हुनकर पत्नी आ बाल-भंगिमा (भंगिमा नाट्य संस्थाक बाल विभाग)क प्रभारी प्रमिला जीक संस्मरण अछि। संगमे सोनू आ मोनू (प्रमिला जीक दुनू पुत्र) आ भवनाथ झा (नाबार्ड)क सेहो चर्चा अछि आ ठहाका कार्यक्रमक सेहो । फेर प्रमिला जीक असमय मृत्यु भऽ जाइत अछि।

किछु तीत, किछु मिट्ठ: किछु चहटगर घटना सभक चर्चा अछि ओहने सभ जे कपिल शर्मा शो मे अहाँ सभ देखने हएब।

एकटा रंगकर्मीक यात्रा: पहिल बेर चेतना समितिक तत्त्वाधानमे आ बटुक भाइ कहलापर १९७३ ई मे प्रेमलता जी आ दस बर्खक भारती अभिनय केलन्हि। १९७४ मे शामिल भेलीह नृत्यांगना रमा दास। पुरुष कलाकारक चर्चा सेहो अछि- छत्रानन्द सिंह झा (बटुक भाइ), वेदानन्द झा, फनन्त झा, हृदयनाथ झा, सी.पी.झा, मोदनाथ झा, अशर्फी अजनबी, गोलोकनाथ मिश्र, बन्धुजी, शम्भुदेव झा। चेतना समितिक अतिरिक्त नाट्य संस्था रंगलोक, नवांगन, अरिपन, भंगिमा, आंगन, कला समिति क चर्चा भेल अछि आ जिम्मा लेनिहारमे रवीन्द्र नाथ ठाकुर, कौशल कुमार दास, छत्रानन्द, कुमार शैलेन्द्र, प्रशान्तकान्त, रवीन्द्र राजू, मनोज मनुज, विभूति आनन्द, कुणाल, उमाकान्त, किशोर केशव, रोहिणी रमण, जगन्नाथ लाल दास, कौशल मिश्र आ तरुण प्रभातक चर्चा भेल। महिला अभिनेत्रीक चर्चा केलनि- मंजू चौधरी, सुधा दास, तनुजा शंकर, विनीता, संगीता, निवेदिता, मंजू झा, आभा झा, पूनमश्री। मृदुला सिन्हाक चर्चा भेल अभिनयक संग निर्देशन आ आलेखन लेल सेहो। मंत्रेश्वर झा द्वारा 'अरिपन'क माध्यमसँ नाट्य प्रतियोगिताक आयोजन। मुदा...

मंजू चौधरी रंगमंचे नै ओइसँ जुड़ल लोकोसँ कुशल छेम-धरि पुछबासँ परहेज केलनि,मृदुला सिन्हा, सुधा दास, पूनमश्री, प्रभा झा, नूतन झा सभ एकाएकी छोड़ैत गेलीह।

सुरेन्द्र आचार्य धरि संग रहलाह।

तनुजा शंकर अभिनय आ निर्देशन दुनूमे छलीह मुदा ओ दिल्ली दूरदर्शनक सीरयल सभसँ जुड़ि गेलीह, हुनकर छोट बहीन कनुप्रिया शंकर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालयसँ जुड़ि गेलीह।

शामिल भेलीह स्नेहा पल्लवी, शिल्पी आ रश्मि, तीनू सुपुत्री हरिहर प्रसाद (हिन्दीक कथाकार, फिल्मकार आ स्क्रिप्ट राइटर)। आनन्द मोहन झा आ हुनकर माय वैदेही झा केर सेहो चर्चा अछि। मधूलिका आनन्द, सोमा आनन्द आ दीपा आनन्द, सुप्रीता दास, ज्योति, सुनीता झा, अलका, नीतू, शारदा सिंह, नीलम सिंह, प्रीति, रश्मि मिश्र, अन्नू, मन्नू, बरखा सिंह, स्वाती सिंहक सेहो चर्चा अछि।

फेर चर्चा अछि हुनका सभक जे अपन परिवार, अपन पत्नीकेँ उत्साह आ गर्वक संग शामिल कयलनि- लल्लन प्रसाद ठाकुर (जमशेदपुर), अशोक कुमार झा (मिथिला विकास परिषद, कोलकाता), रोहिणी रमण झा (आंगन, पटना), प्रदीप बिहारी (बेगूसराय), चतुर्भुज आशावादी (विराटनगर, नेपाल) आ श्याम सुन्दर सिंह (भंगिमा, पटना)।

एगो छली सिनेह: ऐ कथा संग्रहमे १२ टा लघुकथा अछि, जइमे एकटा कथा अछि 'एगो छली सिनेह', जे विधवा सिनेहक कमलेश संग शारीरिक सम्बन्ध, कमलेशक धोखा दऽ भागि जायब आ ओइ सम्बन्धसँ होइबला

बच्चाकेँ जन्म देबाक जिदपर आधारित अछि। कताक साल बाद ओ घुरि कऽ एलि आ ओही भैंसुरकेँ अपन घराड़ी लिखि देलनि जे हुनका काटि कऽ गाड़ि देबाक निर्णय सुनेने छलखिन्ह।

ऐ संग्रहक एकटा आर कथा 'ब्यूटीपार्लर' विवाहेत्तर शारीरिर सम्बन्धपर आधारित अछि जइमे पुरुखकेँ बियाहल रहलोपर कुमारिसँ अफेयर करबाक छूट छै।

'वापसी' कथामे सासु-पुतोहुक खिस्सा छै। जे बेटा-पुतोहुकेँ सासु घर खाली करेलन्हि सएह सेवा केलकन्हि आ फेर वापसी भेल।

'अभागल'मे कोनो बातपर बच्चा घरसँ भागि गेल रहै आ फेर घुरि कऽ आबि गेलै तकरे कथा अछि।

'चँचरी पुल' मे बाढ़िक इलाका, चचरी पुलक गायब हएब आ फेर मरम्मति हएब, चँचरी पुल आ प्रकृतिक मिलि कऽ समाजमे एक सूत्रमे बन्हबाक वर्णन अछि। एम्हर पछिला साल एकटा समाचार आयल छल जे बिहारमे लोहाक पुलकेँ चोर काटि कऽ लऽ गेलै। से स्थिति अखनो ओहने छै, चँचरी पुल चोरि होइ छलै, आब लोहाक पुल चोरि होइ छै।

'मैयाँ' कथामे मैयाँ आ किसुनमाक आत्मीय सम्बन्धक चर्चा भेल अछि।

'वैतरणी'मे वएह गामक खिस्सा अछि, मरलाक बाद भोजमे मदति करू आ सभटा निकहा खेत लिखबा लिअ।

'जुमरातन' स्कूलक सेविका, एक तरहसँ ओकर चरित्र चित्रण कएल गेल अछि।

'छाहरि'मे सुधा आ रधियाक कथाक बहन्ने स्त्री-विमर्श आ जाति विमर्श दुनू आयल छै, आ ईहो जे महिलापर एकर दोबरा मारि पड़ैत छैक।

'ठेस'मे शहरमे बन्दक घोषणाक बाद महिला कर्मचारी सभक आपसी गपशपक विवरण छै।

'गृह-प्रवेश'मे केना इमोशनल कऽ सोझ लोकसँ काज लेल जाइ छैक तकर विवरण अछि।

'उदास आँगन' मे काकीक मृत्युक अवसरपर हुनकर खगता, नवका छौड़ी सभ तँ सिनेमाक भासपर गीत उठबैत अछि, काकीकेँ से नै सोहाइत छलन्हि। हुनकर अन्तिम संस्कारमे सौंसे टोलक छौड़ा सभ हुनक चितापर तिकुला-मज्जरसँ लदबद ठारि काटि कऽ धऽ देलक, जँ काकी ऐबेर नै छै तँ ककरो अँचार-आमिल नै बनबऽ दइ जेतै। काकीसँ प्रेम.. स्वर्गमे बैसि खूब चटनी बनबिहेँ...

८२ बर्खक एनी एर्नौ केँ ऐ बेरुका साहित्यक नोबेल पुरस्कार देबाक घोषणा स्वेडिश एकेडमी केलक। स्वेडिश एकेडमी ओइसँ पहिने रवीन्द्रनाथ ठाकुरकेँ एकटा ट्वीटमे मोन पाड़लक।

"तितली मास नै, पल गानैत अछि, से ओकरा लग समये समय छै।"

एनी एर्नौ पहिने आत्मकथात्मक उपन्यास लिखलन्हि मुदा शीघ्रे ओ मात्र आ मात्र संस्मरण लिखय लगलीह।

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क किछु कथा जेना 'एगो छली सिनेह', 'ब्यूटीपार्लर' बोल्ड अछि तँ आ 'छाहरि' आ 'उदास आँगन' मे मनोवैज्ञानिक विश्लेषण अछि। मुदा हुनकर मजगूत पक्ष छन्हि 'संस्मरण' आ जतेक

खजाना हुनका लगमे छन्हि से ओ एनी एर्नौ जकाँ संस्मरण लिखिये कऽ सधा सकैत छथि। आशा अछि जे हुनका कलमसँ ढेर रास संस्मरण आर निकलतन्हि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१९.अजित कुमार झा- मैथिली रंगमंचक प्रेरणास्रोत: श्रीमती प्रेमलता मिश्र प्रेम

अजित कुमार झा

मैथिली रंगमंचक प्रेरणास्रोत: श्रीमती प्रेमलता मिश्र प्रेम

हिन्दी सिनेमा 'आनन्द' मे एकटा डायलॉग छल जकरा मैथिली मे एना कहि सकैत छी- 'दुनिया एक रंगमंच छैक आ हमसब मात्र कठपुतली जकर रास ऊपर वाला कैँ हाथ मे छन्हि'। शायद अही लेल ई कहबी प्रचलित छैक जे- ' सबहिं नचाबत राम गोसाईं '। जौँ कागज कलम ल' क' लिखनाई शुरु करी त' शायद हम सब लिखबा मे सक्षम नहि होएब जे एक्कहि समय मे कतेक रोल हम सब निमाहि रहल छी। ओना सच त' ई छैक जे कतेक रोल मे हमरा सब कैँ ऊपर वाला नचा रहल छथि से बुझबाक सामर्थ्य हमरा सब कैँ कहाँ अछि। ओना आइ हम ओहि नाटक केर चर्चा नहि क' रहल छी जकर पात्र, कथा, पटकथा, दृश्य, स्थान, लाइट, साउंड, म्यूजिक आ अन्य समस्त चीजक निर्देशन सर्व शक्तिमान एवं सर्व विद्यमान ईश्वर कैँ द्वारा होइत अछि। जी हम चर्चा क' रहल छी जे अपन अपन गाम मे, विद्यालय मे संभवतः अधिकांश व्यक्ति कोनो-न-कोनो रुप मे खेलायल छी। ओहि समय गाम घर मे मनोरंजनक ई सब सँ प्रचलित माध्यम छल। मनोरंजन केर साथ-साथ समाज मे जागरुकता आनय कैँ लेल विभिन्न तरहक नाटक केर मंचन होइत छल।

आम जनता जतेक आसानी सँ कोनो विषय वस्तु कैँ समझि जाइत छलथि ओतेक कोनो पोथीक माध्यम सँ संभव नहि छल। समाज मे व्याप्त कुरीति सब कैँ केन्द्र मे राखि आम जनता मे जागरुकता अनबाक सब सँ सशक्त माध्यम अछि नाटक। ओना समय बदललै आ संगहि लोक सबहक सोच सेहो बदलि गेलै आ गाम सँ नाटक बुझू जे बिला गेल आ केहनो पवित्र पावनि त्यौहार कैँ अवसर पर फूहड़ आर्केस्ट्रा आ डी जे बजा वर्तमान मे अपन विकृत मानसिकताक परिचय देल जा रहल अछि। शायदे कोनो गाम मे आब नियमित रुप सँ नाटक होइत अछि। नाटक आब विभिन्न शहर केर रंगमंच धरि सिकुड़ि क' रहि गेल अछि। समाज मे अदौ काल सँ कुरीति रहलै अछि आ समय कैँ साथ बहुत बदलाव अयलै मुदा आधुनिकताक दंभ भरनिहार हम सब एखनहुँ बहुत तरहक सोच कैँ बदलय मे सफल नहि भेलहुँ अछि। अहि मे एकटा प्रमुख रुप सँ जौँ चर्चा करी त' एखनहुँ बेटा-बेटी मे भेदभाव होइत अछि। स्थिति मे बहुत सुधार भेलैया मुदा एखनहुँ बहुत बदलाव केर आवश्यकता अछि। पुरुष प्रधान समाज मे आइ एहन कोनो क्षेत्र नहि अछि जाहि मे मिथलाक ललना एत्तह कैँ पुरुष सँ टक्कर नहि ल' रहल छथि? चाहे शिक्षा केर क्षेत्र होइक अथवा ज्ञान विज्ञानक, चाहे फौज होइक, राजनीति होइक अथवा कलाक क्षेत्र सब मे अपन मेहनत सँ पुरुषक समकक्ष अपना आप कैँ साबित कयलनि हँ। आइ हम चर्चा क' रहल छी मिथिलाक ओहि ललना केर जिनका हुनक कार्यक्षेत्र मे सब माँ कहि संबोधित करैत छन्हि। जी बूझिए गेल हेबै जे हम जिनकर चर्चा क' रहल छी से भेलीह मैथिली रंगमंचक एक सशक्त हस्ताक्षर, निस्सन कलाकार आ नबका पीढ़ीक महिला कलाकार लेल प्रेरणास्रोत श्रीमती प्रेमलता मिश्र प्रेम। हँ आइ ओ कोनो परिचयक मोहताज नहि छथि मुदा अपन जीवन मे अहि मुकाम पर पहुँचय लेल निस्संदेह कतेक संघर्ष करय पड़ल हेतन अहि पुरुष प्रधान क्षेत्र मे तकर सहजहि अनुमान लगायल जा सकैत अछि।

रहिका निवासी पंडित दीनानाथ झा आ हुनक पत्नी श्रीमती वृंदा देवीक एकमात्र संतान प्रेमलता केर जन्म सन् 1948 मे भेल छलन्हि आ मात्र बारहम बरख मे हिनकर विवाह सेहो भ' गेलनि मुदा हिनक पति देव कैँ इच्छाक अनुरुप हिनकर पढ़ाई जारी रहलनि। गाम समाज अपन नाटक देखाबय सँ कहाँ बाज अबितथि मुदा हिनकर ध्यान सदैव अपन लक्ष्य पर केंद्रित रहलन्हि। माता पिताक सहयोग, पति देवक प्रोत्साहन आ अपन लगन सँ सन् 1963 मे प्रथम श्रेणी सँ मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण भेलीह। ओहि कैँ बाद पटना चलि अयलीह आ परम श्रद्धेय यात्री जी कैँ अभिभावक रुप मे पाबि निरंतर अपन प्रतिभाक परिचय दैत रहलीह।

परम श्रद्धेय यात्री जी केर प्रेरणा सँ आकाशवाणी पटना सँ जुड़ि गेलीह। रेडयो सँ हिनक नाटक कैँ प्रकाशन होबय लागल। लोग मात्र आवाजे टा सुनैत छलन्हि, चेहरा त' नहि देखैत छलन्हि ताहि बातक निश्चिंतता छलन्हि मुदा बहुचर्चित बटुक भाई आ अन्य किछु व्यक्तित्व हिनका रंगमंच पर आबय लेल प्रेरित करैत रहलनि। ओ समय काल कैँ विषय मे मोन पाड़ि सकैत छी जे मंच पर महिला कैँ प्रवेश नहि छलनि आ स्त्री पात्रक रोल सेहो पुरुषे करैत छलाह। बाद मे जा क' अन्य भाषा भाषी महिला लोकनि मैथिली रंगमंच पर आबय लगलीह मुदा सब विधपुराओन लगैत छल। अपन माटि पानिक सुवाश कत्तहु नहि छल। कोनो मिथिलानी लोक लाजक भय सँ अतेक साहस नहि जुटा पाबि रहल छलीह। हिनका मोन मे सेहो लोक लाजक भय छलन्हि तैँ किछु असमंजस मे छलथि मुदा सबहक प्रोत्साहन सँ हिम्मत जुटाबय मे सफल भेलीह आ बाँकी त' सब इतिहासे अछि।

ओना त' कोनो बात जे बीति गेल से इतिहास अछि मुदा इतिहास सबहक नहि लिखाइत छैक। इतिहासक पन्ना पर स्वर्णाक्षर सँ हुनके नाम अंकित होइत अछि जे विषम-सँ-विषम परिस्थिति मे भी हिम्मत जुटा लीक सँ हटि क' काज करैत छथि अथवा धाराक विपरीत हेलैत छथि आ आबय वाला

पीढ़ी लेल न'ब प्रतिमान गढ़ैत छथि। एहने सन विषम परिस्थिति मे हिम्मत जुटा क' मैथिली रंगमंच पर पदार्पण कयलनि अपन माटि पानि एवं संस्कृति कैँ हृदय मे जोगौने मिथिलाक ललना श्रीमती प्रेमलता मिश्र प्रेम। 10 नवम्बर 1973 कैँ विद्यापति पर्व समारोहक पावन अवसर पर शहीद स्मारक स्थान, पटना मे चेतना समितिक मंच पर पंडित दिगम्बर झा द्वारा लिखल आ श्री गणेश सिन्हा केर निर्देशन मे ' टुटैत लोक ' नाटक मे पहिल बेर मैथिली रंगमंच पर एक मैथिल ललना केर पदार्पण भेल। पहिल प्रस्तुति मे धखायल त' हेतीह मुदा दर्शक वृन्द कैँ अपन अभिनय पर चर्चा करबाक लेल विवश जरुर क' देलनि। एकबेर आबि गेलीह त' फेर पाछू घुरि क' तकबाक प्रयोजन नहि पड़लनि। चेतना समिति, अरिपन, भंगिमा एवं देशक समस्त राज्यक मैथिली रंगमंच पर निरन्तर एक-सँ-बढ़ि एक प्रस्तुति द्वारा अपन अभिनय प्रतिभाक अमिट छाप छोड़ैत गेलीह। एखनधरि लगभग दू सै सँ बेसी नाटक मे अभिनय केलनि अछि आ समय-समय पर विभिन्न मंच सँ पुरस्कृत होइत रहलीह। अहि क्षेत्र सँ जुड़ल शायदे एहन कोनो पुरस्कार होएत जे हिनका हाथ मे आबि गौरवान्वित नहि भेल होएत। मुदा सब सँ पैघ पुरस्कार अछि दर्शक वृन्दक थोपड़ी जे हिनका एखनधरि भेटैत आबि रहल छन्हि। हिनका सँ प्रेरित भ' नहि जानि कतेको मैथिल ललना अहि मंच पर आबय कैँ साहस जुटाबय मे समर्थ भेलीह आ शान सँ मैथिली रंगमंच पर न'ब प्रतिमान गढ़ि रहल छथि ।

मैथिली नाटक सँ जे भी व्यक्ति जुड़ल छथि अथवा मिथिला मैथिली आन्दोलन मे कोनो-न'-कोनो रुपें अपन योगदान द' रहल छथि तिनका अवश्य ज्ञात हेतन जे सन् 2007 कैँ चनौरा गंज मे श्री बेचन ठाकुर द्वारा पहिल बेर हरेक पुरुष पात्र केर महिला द्वारा अभिनय करयबाक अभिनव प्रयोग भेल छलै, आ तकरा बाद निरन्त लगभग सभ बर्ख ओ सरस्वती पूजाक अवसरपर ई दोहराबैत आयल छथि।** ओतहि तकर बहुत बाद मिथिला मैथिली

आन्दोलनक एपिसेन्टर (उपरिकेंद्र) शहर कलकत्ता, जे आब कोलकाताक नाम सँ जानल जाइत अछि, केर प्रसिद्ध रथीन्द्र मंचक प्रेक्षागृह मे 21 नवम्बर 2019 क' नवआयाम' केर पहिल प्रस्तुति श्री रुपेश त्यौंथ द्वारा लिखल आ श्रीमती किरण झा निर्देशित मैथिली नाटक 'कनफुसकी' केर सफल मंचन भऽ सकल, जइमे समस्त पात्र चाहे पुरुष हो अथवा महिला सबहक अभिनय मैथिल ललना द्वारा भेल छल। जौँ पहिल डेग श्रीमती प्रेमलता मिश्र मैथिली रंगमंच कैँ तरफ नहि उठौने रहितथि त' शायद एहन आयोजन होबय मे एक शताब्दी लागि सकैत छल अथवा ओहू सँ बेसी से कहनाई असंभव।***

मैथिली भाषाक पहिल फिल्म ' ममता गाबय गीत ' सँ ल' क' राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फिल्म ' मिथिला मखान ' धरि अनेको फिल्म मे हिनकर जीवंत अभिनय दर्शक द्वारा निरन्तर सराहल गेल अछि। एक शिक्षिका, तखन आकाशवाणी पटना, ओहि कैँ उपरांत मैथिली रंगमंच सँ होइत मैथिली फिल्म धरि कैँ सफर मे संघर्षक माध्यम सँ अपन उचित स्थान बनौलनि आ निस्संदेह ओ सम्मान भेटलनि जिनकर ई हकदार छलीह ।

साहित्यक प्रति सेहो हिनकर रुचि रहलनि। हिनकर कथा संग्रह केर नाम छन्हि ' एगो छली सिनेह '। परम श्रद्धेय सुधांशु शेखर चौधरी पर हिनकर शोध ग्रन्थक नाम छन्हि ' शेखर प्रसंग'। समय-समय पर लिखल संस्मरण केर संग्रह छन्हि ' ओ दिन ओ पल '। एतबहि नहि पटना मे ' सान्ध्य गोष्ठी ' केर संपादन एवं प्रकाशन सँ सेहो जुड़ल छलीह। लगभग 75 बरखक वयस मे भी जाहि तरहें ई मैथिली रंगमंच मे सक्रिय छथि आ अपन पारिवारिक जिम्मेदारी केर बखूबी निर्वहन करैत मिथलाक माटि पानि आ संस्कृति सँ सुवासित हिनकर अभिनय देखि ई कहबा मे कोनो असोकर्य नहि भ' रहल अछि जे निस्संदेह ई एकटा समर्पित एवं सम्पूर्ण कलाकार छथि। ईश्वर हिनका दीर्घायु एवं स्वस्थ रखथुन जाहि सँ आगू आओर नींँक अभिनय सँ मैथिली रंगमंच कैँ पुष्पित एवं पल्लवित करैत रहथि।

-अजित कुमार झा, मुजफ्फरपुर, 9472834926

***बेचन ठाकुरक पहिल बेर ई २००७ नै वरन् २२.०१.१९९९ कैँ भेल छल (नाटक भाए-बहीन) जइमे पुरुष-महिला सभ पात्र महिला द्वारा अभिनीत भेल, समानान्तर नाटक ऐ मामिलामे बहुत आगू अछि। देखू **विदेह मैथिली नाट्य उत्सव (प्रकाशन वर्ष २०१२) पृ. सं ४० आ आगाँ** अही लिंकपर।- सम्पादक*

****ई कथन मुख्य धाराक रंगमंचपर लागू होइए। समानान्तर धाराक नाटक आ नाटककारक नाम मुख्य धाराक लोक जानियो कऽ अनठेने छथि। जतऽ धरि समानान्तर धाराक नाट्य मंचक प्रेमलता जीसँ प्रभावित भऽ एहि तरहक आयोजन कएल जयबाक गप अछि तँ हुनकासँ प्रभावित भेनाइ तँ दूर हुनकर नामो समानान्तर धाराक लोक नै सुनने छल, आ तइ लेल मूल धाराक लोके दोखी छथि, कलाकारसँ मंगनीमे जिनगी भरि विद्यापति पर्व समारोहमे ढोलक बजबाबैत छथि कन्यादान करा देबाक लालच दऽ कऽ, मुदा ओकर संगीतक चर्च (अभिलेखन) नै करैत छथि। - सम्पादक*

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२०.प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'सँ साक्षात्कार जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' द्वारा

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'सँ साक्षात्कार जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' द्वारा

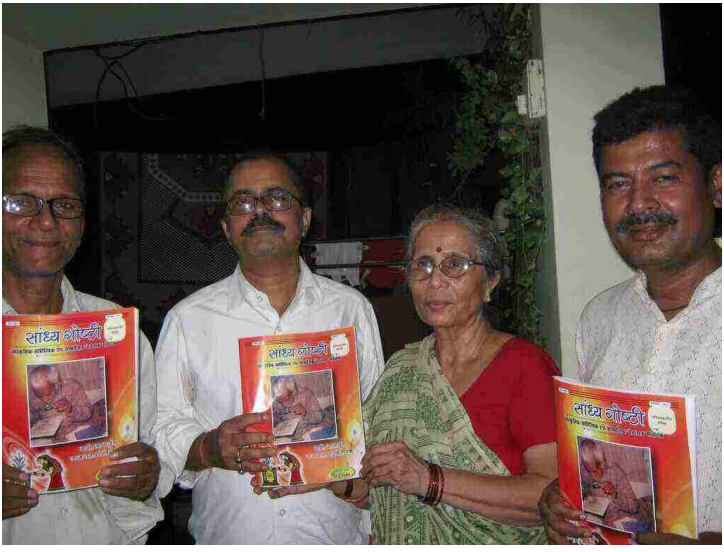

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': रेडियो नाटक आ रंगमंचसँ जुड़बाक लेल प्रेरणाक श्रोत किनका मानैत छियनि?

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम': रहिका हाइ स्कूलक शिक्षक लोकनि आ खास कऽ प्रधानाचार्य श्री चन्द्रिका प्रसादजी जे स्वयं कलाकार सेहो छलाह। हमरा सभकें छब्बीस जनवरी, पन्द्रह अगस्त,सरस्वती पूजाक अवसरपर कथा पाठ, कविता पाठ,गीत-नाद प्रतियोगिता आदि सांस्कृतिक गतिविधिमे भाग लेबाक लेल प्रोत्साहित करैत छलाह। गोविन्द बाबूक लिखल 'बसात' नाटकमे भाग लेबाक लेल तैयारी कराओल गेल छल। माय-बाबू सेहो समर्थन करैत छलाह, मुदा गामक लोक सबहक विरोधक कारण ओइ नाटकमे भाग नहि लऽ सकलहुँ, मुदा ओ जे अभ्यास भेल छल से पटना एलाक बाद रेडियो नाटक आ रंगमंचक अभिनयमे काज देलक।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': पटनामे रंगमंचसँ कोना जुड़लहुँ? पहिल रेडियो नाटक कोन छल ? रेडियो नाटकमे के सभ सहकर्मी छलाह?

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम': हम 1963 मे मैट्रिक फर्स्ट डिवीज़नसँ पास केने रही,1964 मे पटना एलहुँ, यात्री कक्का आकाशवाणी नेने गेलाह आ मधुकर गंगाधर जीसँ परिचय करौलनि, ओ हिन्दीक प्रोड्यूसर छलाह, सांस्कृतिक कार्यक्रम सभमे भाग लऽ चुकल छलहुँ, रेडियो नाटकमे भाग लेबामे असौकर्य नै भेल। पहिल रेडियो नाटक कोन छल से मोन नहि अछि। मासमे दूटा नाटक होइ छलै एकटा मैथिली कार्यक्रम 'भारती'मे आ एकटा 'चौपाल'मे। आर्यावर्त, आकाशवाणी,सचिवालय,विधान सभा आ अन्य विभिन्न संस्थान जेना स्कूल, कॉलेज, बैंक आदि सभमे काज करैबला लोक सभ

अथवा हुनक परिवारक लोक सभ रहैत छलाह जेना शिवकांत झा (कु. शैलेन्द्रक पिता),बेचन झा (किशोर केशवक पिता), इन्द्रकान्त झा, दीना झा, प्रभास कुमार चौधरी, वेदानन्द झा, गोलोक नाथ मिश्र, महिला सभमे छलीह कविता देवी, सावित्री देवी, आशा मिश्र, मंजुला सिंह आदि। गोपेशजी सक्रिय छलाह, बटुक भाई एलाह, उमाकान्तजी छलाह। इएह कलाकार सभ चेतना समितिक मंचपर सेहो अभिनय करय लगलाह, बादमे और कते कलाकार सभ जुटैत गेलाह। चेतना समितिक मंचपर 1972 सँ स्त्री-पात्रक अभिनय महिला लोकनि द्वारा होमय लागल। चेतना समितिक मंचसँ पहिल नाटक 'टुटैत लोक'मे भाग नेने रही।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': रंगमंचक विकास लेल संस्था सबहक योगदान की रहल अछि?

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम': आधुनिक रंगमंचक विकास चेतना समितिक मंचसँ बेसी भेलै, मन्त्रेश्वर झाजीक समय 'अरिपन' द्वारा प्रचार-प्रसार बेसी भेलै, अंतर्राष्ट्रीय नाट्य सप्ताह महोत्सव भेल जाहिमे कोलकाता, दिल्ली, विराटनगर, जनकपुर, जमशेदपुर, बेगुसराय आदि स्थानसँ सेहो नाट्य संस्था सभ भाग लैत छल।दिल्ली,काठमांडू, विराटनगर सेहो सक्रिय भेल। पटनोमे कयटा संस्था शूरू भेल। भंगिमा सेहो बहुत प्रस्तुति देलक। कला समिति, गर्दनीबागक 'नवांगन', रोहिणी रमण झा क 'आँगन' आदि। मन्त्रेश्वर बाबूक बाद किछु दिन ठप्प भऽ गेलै, किछु दिन लेल भंगिमो ठमकल। एखन सक्रिय अछि महेन्द्र मलंगियाक 'मिथिलांगन; 'बारहमासा' प्रकाश झाक 'मैलोरंग' आदि, पटनामे 'चेतना समिति', 'भंगिमा', 'अरिपन' तीनू काज कऽरहल अछि, 'चेतना नाट्य महोत्सव तीन सालसँ कार्यक्रम करैत अछि, किछुए मास पूर्व सुधांशु शेखर चौधरी जी पर केन्द्रित छल कार्यक्रम जाहिमे

शेखरजीक लिखल कयटा नाटकक मंचन भेल अछि जाहिमे कोलकातासँ आ किछु और ठामक संस्था सभ सेहो भाग नेने छल।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': मैथिली रंगमंचक भविष्य केहेन लागि रहल अछि?

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम': मैथिली रंगमंचक भविष्य नीक लागि रहल अछि, युवा वर्ग लेल नीक अछि, सभ आयु-वर्गक लोक संगे काज करबाक अवसर भेटैत छैक, अनुशासित रहैए लोक, जीविकोपार्जन लेल सेहो किछु करबाक प्रेरणा भेटैत छैक। रंगमंच और विकसित हएत।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': कोन मैथिली सिनेमामे पहिने काज केलहुँ? मैथिली सिनेमाक भविष्य कहन लगैए ?

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम': सभसँ पहिने 'ममता गाबय गीत'मे काज केलहुँ, विवेकानंद झा, ललितेश झा आदि छलाह, फिल्म 'मिथिला मखान'कें नेशनल एवार्ड भेटलै, एहिसँ बहुत लोक आकर्षित भेल छथि। नव-नव फिल्म सभ बनि रहल अछि। नीक फिल्म बनतै त भविष्य नीके हेतै। आनक नकल नै होइ, अपन संस्कृतिक अनुकूल फिल्म बनबाक चाही। हम मैथिली फ़िल्मक नीक भविष्यक हेतु आशान्वित छी।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': अहाँ घर-गृहस्थीक अतिरिक्त लेखन, सम्पादन,अभिनय सभसँ जुड़ल छी,गीतो नीक गबैत छी, परिवारमे और किनको साहित्य संगीत, अभिनय आदिसँ लगाव छनि ?

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम': हमरा परिवारमे सभकें साहित्य-संगीतसँ सिनेह छै, हुनको नीक लगैत छलनि, बड़ी-बड़ी राति तक कवि सम्मेलन आ सांस्कृतिक

कार्यक्रम देखैत छलखिन, गोष्ठीमे रहैत छलाह, पत्रिका कीनैत छलाह, पढैत छलाह। धिया पुता सभ रेडियो नाटक आदिमे भाग लैत रहल अछि, सभसँ छोट पुत्र तबला बादनमे ग्रेजुएशन केने छथि, दू टा पुत्र गीतो गबैत छलाह, बेटी सुगम संगीत, लोक गीतक कलाकार अछि।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': अहाँ एखन जे सभ करैत छी से नहि करितहुँ त की करितहुँ?

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम': अभिनयक अतिरिक्त संस्था कोना चलतै, तकर व्यवस्थाक काज बेसी देखलिऐ, चन्दा मङनाइ, दर्शककें बजेनाइ,कलाकार सबहक व्यवस्थाक काज, पत्रिका छपेनाइ आदि। जे सभ करैत आएल छी से नहि करितहुँ त हम शास्त्रीय संगीत दिस जैतहुँ, हमरा शास्त्रीय संगीत आ सुगम संगीत प्रिय अछि।, कविता,कथामे सेहो हमर रूचि अछि।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': विभिन्न संस्था द्वारा देल गेल पुरस्कारक निर्णयक आलोचना होइत रहैत अछि, अहाँक की कहब अछि?

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम': गुण आ दोष त व्यतियोमे रहै छै, संस्थोमे आ निर्णयोमे भऽ सकै छै, मुदा, अनेरे विरोधो नै हेबाक चाही। मन्त्रेश्वर बाबूकें भेटलनि ओहू समय किछु गोटे द्वारा कहल गेलनि जे लेखक संघक प्रताप सँ भेटलनि अछि। किनको भेटतनि त किछु गोटे अप्रसन्न हेबे करथिन। दरभंगा महाराज साहेबक देल अँकुरीकें सेहो दूसल गेल छनि, सभकें बूझले अछि।

२.२१.उदय चन्द्र झा 'विनोद'- प्रेमलता प्रसंग

उदय चन्द्र झा 'विनोद'

प्रेमलता प्रसंग

आशीष अनचिन्हार जखन प्रेमलता प्रसंग किछु लिखबाक आग्रह कयलनि, हम इतस्ततः मे पड़ि गेल रही। जाहि व्यक्तिक अहाँ आत्यन्तिक परिचय रखैत छी, जाहि व्यक्तिक संग अहाँ रहैत छी, जकर सम्पूर्ण जीवन अहाँकेँ लगसँ देखल अछि, तकरा प्रसंग किछुओ निजगुत भऽ कहब बहुधा कठिन भऽ जाइ छै। रंगकर्मी छथि प्रेमलता, विलक्षण रचनाकार छथि, कतेको वर्षसँ पत्रिका बहार करबाक सनक श्रमसाध्य काज करैत छथि, सांध्यगोष्ठी नामक अनियतकालीन पत्रिका अपना सम्पादनमे बहार करैत छथि। मैथिली रंगमंचपर महिलाक अवतरणक इतिहास भने हरिमोहन झाक धर्मपत्नी सुभद्राजी सँ प्रारम्भ होइत हो मुदा एकरा सार्वजनीन बनौलनि प्रेमलता। ताहिसँ पूर्व कलकत्ताक रंगमंचपर वंगकन्या सभ अबैत छली मुदा दकियानूस मैथिल अपन बहिने-बेटीकेँ मंचपर उतारबाक लेल तैयार नहि छल। प्रेमलतेक प्रसादात पटनाक रंगमंच पूर्ण भेल आ तकर देखाउसमे बाला सभ अबैत गेली। सुप्रसिद्ध कवि मंत्रेश्वर झाक नेतृत्वमे अरिपन नामक नाट्यसंस्था लगातार नाटक आ रंगमंचक काज कयलक। तकर लगले मित्रवर छत्रानन्द सिंह झा प्रसिद्ध बटुकभाइ आ प्रेमलता मिश्रक सदाशयताक प्रसादात पटनामे

भंगिमाक स्थापना भेल जाहिमे कुणाल, विभूति आनन्द प्रभृति गोटेक दर्जन रंगकर्मी अपन योगदान दैत अयलाह अछि। आइयो ई संस्था अपन काज करैत अछि, अधिक काल नव नाटकक मंचन करैत अछि। मैथिलीक प्रतिष्ठित संस्था अछि भंगिमा, स्मारिको छपैत अछि, ब्रह्मानन्द किशोर केशव प्रभृति दर्जनों रंगकर्मी हमरा सुलभ भेल छथि। बटुक भाइ तँ चलि गेलाह मुदा प्रेमलता आइयो बेश सक्रिय रहैत छथि।

एहि ठाम निम्न घटनाक चर्च करब प्रायः अवान्तर प्रसंग नहि होयत। मैथिल समाज, रहिका ग्रामीण अंचलमे अवस्थित प्रायः एकमात्र संस्था थिक जे एहि बेर अपन स्वर्ण जयन्ती मनाबय जा रहल अछि अर्थात् पचास वर्षक संस्था भऽ आयल अछि। अपन त्रिदिवसीय वार्षिक समारोह मे ई संस्था व्यापक स्तरपर कवि सम्मेलन, सेमीनार एवं नानाविध सांस्कृतिक आयोजन करैत अछि मुदा नाटकक मंचन नहि करैत अछि। तकरा पाछाँक कारण अछि प्रायः नवम दशकक बात थिक। विचार भेल जे महेन्द्र मलंगियाक नाटक 'ओकरा आंगनक बारहमासा'क मंचन कैल जाय। गोटेक पन्द्रह दिन हम अपने गाम रहि रिहर्सल कराओल। नाटकमे दू गोट नारी पात्र छैक। ताहि लेल प्रेमलता तैयार भेली। एहि ठाम ई कहि दी जे प्रेमलता रहिकेक बेटी थिकी, एही ठामक स्कूलसँ प्रथम श्रेणीमे मैट्रिक कयने छथि। नाटकक तैयारी जोरशोरसँ भेल मुदा कोनो नारीकेँ नाट्यमंचपर नहि उतारल जा सकल। स्थानीय विरोध ततबा भयानक छल जे अन्ततः पुरुषे केँ नारी बना उतारय पड़ल आ दर्शक दीर्घामे बैसल प्रेमलता नाटक देखैत रहली। एहि घटनाक हमरापर से प्रभाव पड़ल जे हम हारि मानि लेल। नाटक नहि करैत छी।**

कथाकार छथि प्रेमलता, बेश लिखैत छथि। मैथिल समाजक मानकेँ स्वर देबामे ई सर्वथा समर्थ लगैत छथि। जनैत छथि जीबाक कला, चलितो तंग नहि होइत छथि, हिनका नाटकमे मंचपर जे क्यो देखने हेताह से हिनक

सहजता आ स्वाभाविकताक प्रसंग प्रशंसा अवश्ये करताह। मैथिली फिल्मोक क्षेत्रमे जे किछु थोड़-बहुत प्रयास भेल अछि ताहिमे ई सबल स्वरूपमे भेटती। जागरणमे विश्वास रखैत छथि प्रेमलता, आयोजन करैत रहैत छथि। सांध्य गोष्ठीक आयोजन मासिक करैत एही नामसँ अनियतकालीन पत्रिका बहार करैत छथि। हालेमे उषा किरण खाँ विशेषांक देखल गेल अछि। नानाविध पुरस्कारसँ सम्मानित छथि प्रेमलता। मैथिल समाज, रहिका सेहो हिनक रंगकर्मीकेँ 'महेन्द्र सम्मान'सँ सम्मानित कऽ चुकल अछि।

रहिका आ पटनामे रहबाक कारणेँ हम एहि साधिकाकेँ गढ़ाइत लगसँ देखल अछि। रहिकामे सेहो ई पिताक घराड़ीपर घर बनौलनि अछि आ एखनहु सालमे दू-चारि बेर रहिका अबैत छथि, हमरो भेँट भऽ जाइत छथि। पटना समेत मैथिली जगतक हालचाल हिनकासँ बूझि तुष्ट भऽ जाइत छी। पटना रहैत छथि प्रेमलता, रहिका रहैत छथि, संगहि सीतामढ़ीमे अपन सासुर सिरसी सेहो जाइत-अबैत रहैत छथि। स्वर्गीय पतिदेव मिसरजीक दीर्घ अस्वस्थतामे हिनक तीमारदारी देख चमत्कृत भेल छी। बरोबरि पुनरान्वेषणमे जागल रहैत छथि, नारी विमर्शक एहि युगमे नारी चेतनाक प्रतिनिधि छथि प्रेमलता। चेतना समिति पटनाक आइयो पदाधिकारी छथि, बरोबरि सक्रिय रहैत अयली अछि। हिनका एखनो लगैत छनि जे अपन एहि व्यवस्थामे नारी आइयो सुरक्षित नहि अछि। आ तकर मुख्य कारण मानैत छथि अशिक्षा। कनेक टा अंश देखल जाय-

"सभक मूलमे अछि शिक्षा। शिक्षाक अभावमे स्त्री अपन अधिकारसँ अनभिज्ञ अछि । जँ स्त्री शिक्षितो अछि तऽ अपन स्त्री शक्तिक ज्ञान ओकरा नहि छैक। तेँ देखल जाइत अछि जे बेटाक जन्मपर बेशी ढोल स्त्रीगणे पीटैत अछि। सभ के बेटा चाही, बेटी ककरो नहि।"

एहन दृष्टिसम्पन्न नारीकेँ एक रंगकर्मी, एक रचनाकार, एक सम्पादक, रूपमे पाबि हम सभ धन्य भेल छी। मैथिल ललनाक टॉर्चलाइट छथि ई, पटनामे से नारी मण्डली संस्थाक माध्यमे बरोबरि काज करैत रहैत छथि। हिनका प्रसंग एक कवितामे कवि वैद्यनाथ मिश्र केहन दिव्य कहैत छथि से देखल जाय-

हँ दीदी

कतय भेटल प्रेमक ई अजस्त्र स्रोत

जकर पानि

कहियो केहनो जरती-धाहीमे

सुखाइत नहि छै

सुगर-फ्री जकाँ

ककरो अभिघात नहि करैत छै

सभक लेल लाभदायक छै।

प्रेमलता हमरा पीसा कहैत छथि, हुनक नैहर हमर सासुर, हमर पत्नी हुनक पीसी अस्तु हम पीसा। हिनका एखनो देखि सत्ते कहै छी, कृतार्थ होइत रहैत छी। एहन कर्मठ गृहिणी, संगहि सक्रिय रंगकर्मी भेटब दुर्लभ। जय मैथिली।

**प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' अपन संस्मरण संग्रह 'ओ दिन ओ पल' केर संस्मरण 'बेर-बेर भसिया जाइत छी' मे ऐ घटनाक विपरीत वर्णन केने छथि। ओ लिखैत छथि जे बिनु सह-कलाकार संग रिहर्सलक रहिकामे अभिनयक

गौंआ उदय चन्द्र झा 'विनोद'क आग्रहकेँ ओ अस्वीकार केलन्हि, नाटक महेन्द्र मलंगियाक छल आ नाटक छल- 'ओकर आंगनक बारहमासा'। ओ लिखै छथि जे सभखन सभकेँ प्रसन्न नै राखल जा सकैए, आ ईहो जे एकर हुनका दुख छन्हि। - सम्पादक

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२२.प्रदीप पुष्प- मैथिल नारीक सांस्कृतिक- साहित्यिक स्वर - प्रेमलता मिश्र प्रेम

प्रदीप पुष्प

मैथिल नारीक सांस्कृतिक- साहित्यिक स्वर - प्रेमलता मिश्र प्रेम

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' जी बेस परिचित नाम छथि। हिनका मैथिली रंगमंचक पहिल महिलाकर्मी हेबाक गौरव प्राप्त छन्हि। हिनक व्यक्तित्व बहुआयामी छन्हि। जहिना भावप्रवणा अभिनेत्री तहिना कोमल हृदय साहित्यकार। दुनू ठाम भावना पक्ष प्रधान।

हिनक जन्म मधुबनीक रहिकामे भेलनि आ मात्र बारह बरखक अवस्थामे बिवाह सेहो भ' गेलनि सीतामढीक धाधी - सिरसी नामक गाममे। हिनक जीवनक प्रारंभ अति विषमतापूर्ण रहलन्हि।स्वनामधन्य वैद्यनाथ मिश्र यात्री जीक कहला पर ई पटना रहय लगलीह।शनै- शनै हिनक अध्ययन सेहो व्यवस्थित होइत गेल आ ई मैथिलीमे एम. ए. केलनि तकरा बाद पी. एच. डी सेहो।
पटनाक बांकीपुर राजकीय प्लस टू बालिका विद्यालय मे अपने अध्यापिकाक पदकेँ सुशोभित केलौं। ओतहिसँ सेवानिवृत भ' विभिन्न गतिविधिमे सक्रिय छथि। हिनका बहुतो रास साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था सम्मानित केलकनि

जाहिमे चेतना समिति पटना, अरिपन पटना, विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगा सेहो उल्लेखनीय अछि। प्रेमलता जी बहुतो मैथिली, हिंदी आ भोजपुरी नाटक, धारावाहिक आ फिल्ममे अपन अभिनयक बल पर छाप छोड़लनि।

हिनका मैथिल नारीक सांस्कृतिक साहित्यिक स्वर कहबाक अभिप्राय ई जे जाहि समयमे मैथिल नारी घरमे बंद रहैत छलीह, कोनो बाहरी गतिविधि खास क' कला आ संस्कृति सँ जुड़ल हो ओइमे नारीक उपस्थिति शून्य रहैत छल, चौखटिसँ बाहर पयर द' केओ मंच पर अभिनयक सपना नै देखि सकैत छलीह ताहि अप्रत्यक्ष घेराबंदी बला समय- कालमे हिनक पदार्पण भेल आ पटनाक मैथिली रंगमंचकेँ पहिल स्त्री कलाकार भेटलीह- प्रेमलता मिश्र प्रेम।
हिनक कुशल अभिनय, किरदारमे डूबि जेबाक कला, संवादक कुशल उतार-चढाव नाटक वा चलचित्रमे प्राण आनि दैत छल। छोटसँ छोट भूमिकामे हिनक उपस्थिति भेला उत्तर ओ भूमिका अर्थपूर्ण भ' जाइत छल।

मूलत: कलाकार हेबा कारणे प्रेम जीक कलापक्ष सौन्दर्यबोधक परिणीति थिक जे साहित्यक रूपमे सेहो प्रकट होइत अछि आ से खूब नीक जकाँ प्रकट होइत अछि जहन दरभंगाक जखन- तखन हिनक दूटा पोथी एक्कहि संग प्रकाशित करैत अछि- ओ दिन, ओ पल(संस्मरण) आ एगो छलीह सिनेह(कथा संग्रह) । ओ पल, ओ दिन होऊ वा एगो छलीह सिनेह दुनू पोथीक दुटा अलग विधा हेबाक बादो दुनूमे एकटा समानता देखल जा सकैत अछि। ओ समानता थिक कहबाक बेछप शैली। संस्मरण पढू वा कथा, लेखिकाक मूल तत्व छन्हि भावुकता आ कलात्मकता से दुनू पोथीमे देखल जा सकैए।हिनक संस्मरण सेहो कथे जकाँ अछि आ कथा सेहो संस्मरणे जकाँ। पढबा काल पाठकक सोझा सद्य चित्र उपस्थित करबाक एकमात्र लेखिकाक अभीष्ट। एनामे, कथाक अंत किछु होऊ ओकर 'फिनिशिंग' कने कम नोंकगर हो से

संभव मुदा ओकर प्रभाव चित्रमय होइते अछि ।उपरोक्त दुनू पोथी एकटा तत्कालीन मैथिल नारी समाजक जीवनक विविध चित्र उपस्थित करैत अछि। हिनक शोध ग्रंथ आधारित एकटा तेसर पोथी सेहो अछि- शेखर- प्रसंग। अइमे प्रेमलता जी वरेण्य साहित्यकार, पत्रकार सुधांशु शेखर चौधरीक व्यक्तित्व आ कृतित्व केर मूल्यांकन केने छथि।सुधांशुजीक विपुल अवदान छन्हि। जहिना मैथिलीक विशिष्ट गद्यकार तहिना प्रसिद्ध पत्रकार सेहो। मैथिलीक संगहि ओ हिंदी मे सेहो खूब लिखलाह। जेनाकि प्रसिद्ध आलोचक मोहन भारद्वाज जी पोथीक भूमिकामे कहैत छथि-'एहेन शोध ग्रंथ मे रचनात्मक विश्लेषणसँ बेसी जोर ओकर ऐतिहासिकता आ प्रमाणिकता पर रहैत अछि' तहिना अइ पोथीमे सुधांशुजीक समस्त व्यक्तित्वक क्रमबद्ध उल्लेख भेटैत अछि आ ई पोथी समीक्षाक नीक पोथी बनैत अछि।

कोना एकटा छोट - छिन प्रोत्साहन ककरो नामी कलाकार बनबाक, साहित्यकार बनबाक बीजारोपण करैत अछि से जँ बुझबाक अभीष्ट अछि त' हिनक पोथी सभ पढबाक चाही। हिनक जीवन संघर्ष कतेको मैथिल नारीलेल प्रेरणा स्रोत अछि आ तेँ हिनक पोथी ओकर आवश्यक अंग।हिनक पोथीक साहित्यिक मूल्य जे होऊ, एकटा कलाकारक जीवन यात्राक परिचायक रूपमे बेस महत्व छैक।

- प्रदीप पुष्प, ननौर(मधुबनी) संपर्क- 7903496553

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.विदेह ३५८ म अंक १५ नवम्बर २०२२- अंक ३५७ पर टिप्पणी

मनोज पाठक

सादर नमन, सस्नेह स्मरण। जखन लिंक आयल छल तऽ वेबसाइट पर जा कऽ देखने रही। नीक अंक बनल अछि। पढने जें कि दुइये टा आलेख रही, श्री आशीष जीक आ कुणाल भैयाक। आब पीडीएफ प्रति मोबाइल संग संग घूमैत रहत आ पूरा अंक पढि टिप्पणी करब। अहांक माध्यमसं मैथिली साहित्य जगतमे व्यापक परिवर्तन अयलैक अछि। तथाकथित आलोचक आ विद्वान एकरा नहि गछता मुदा मैथिली भाषा ओ साहित्य अपन डिजिटल स्वरूपमे जे एखन घनगर भेल अछि ओहिमे अहांक एकान्त अनवरत तपक प्रभाव सर्वाधिक छैक। विदेह संख्यात्मक ओ गुणात्मक दुनु तुला पर प्रचुर साहित्य रचलक। एकर निरन्तरता ओ नव नव संभावना लेल सदैव खुजल अबाधित मंच मीलक पाथर अछि मैथिली भाषा ओ साहित्यक लेल। सस्नेह।

शुभ नारायण झा

सर पढ़लौं। सबहक आलेख। बहुत नीक लागल। अपने सब एते पुण्य कायल जे कोनो रंगकर्मी हेतु विशेषांक निकालल । भले हुनक साहित्यिक प्रतिभा के ध्यान राखि अपने ई अंक निकालने होइ। बहुत बहुत धन्यबाद।

(शुभ नारायण जी- ओना तँ प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक हुनकर साहित्यिक नै मात्र रंगमंचीय प्रतिभाकेँ ध्यानमे रखैत निकालल गेल अछि, मुदा हुनकामे साहित्यिक प्रतिभा मूल धाराक बहुत साहित्यकारसँ बेशी छन्हि, खास कऽ हुनकर संस्मरणात्मक साहित्य, संजोग देखू जे ऐ बर्खक साहित्य लेल नोबल एकटा महिलाकेँ मात्र संस्मरण लिखबा लेल भेटल छन्हि। मूल धाराक रंगमंचकर्मीमे मूल धाराक साहित्यकार सन बहुत रास समस्या छन्हि मुदा ओ मूलधाराक साहित्यकार सन कोनो हालतिमे अकर्मण्य नै छथि।- सम्पादक)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**